मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 58 | अंक : 7 | जनवरी, 2018 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹15

निदेशालय (माध्यमिक शिक्षा) परिसर

मुख्य प्रशासनिक भवन : लोकार्पण समारोह की झलकियाँ

दिनांक 13 दिसम्बर, 2017

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 58 | अंक : 7 | पौष-माघ २०७४ | जनवरी, 2018

प्रधान सम्पादक
नथमल डिडेल

वरिष्ठ सम्पादक
जयपाल सिंह राठी

सम्पादक
गोमाराम जीनगर
मुकेश व्यास

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ **15**

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 75
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 150
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 200
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात

- सतत प्रयास-श्रेष्ठ परिणाम 4

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- सुनिश्चित सफलता प्राप्त करें 5

आलेख

- सांविधानिक नैतिकता और श्री अरविन्द का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद 10
  सूर्य प्रताप सिंह राजावत
- स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति के प्रणेता 13
  सुधा तैलंग
- स्वामी विवेकानन्द के विचारों की सार्थकता : **प्रेम प्रकाश शर्मा** 16
- क्रान्तिवीर : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 17
  कमल नारायण
- भारत रत्न : डॉ. भगवानदास 18
  विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी
- शिक्षक : एक मूर्तिकार 19
  डॉ. अमित कुमार दवे
- रूप तेरा निराकार नहीं 20
  सुश्री अवन्तिका तूनवाल
- सूर्य उपासना का पर्व : मकर संक्रान्ति 21
  महावीर सिंह राठौड़
- विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष के विविध रूप : **आकांक्षा यादव** 23
- कर्मचारियों के सेवा रिकॉर्ड का कम्प्यूटरीकरण : **पल्लव मुखर्जी** 27
- 18 का इतिहास-है कुछ खास 29
  पुष्पा शर्मा
- राजस्थान प्रशासनिक सेवा : प्रारम्भिक परीक्षा 30
  जयपाल सिंह राठी
- सहृदयता : **सुमित्रा राठौड़** 31
- यस सर नहीं, जय भारत : **संदीप जोशी** 32
- अंग्रेजी भाषा शिक्षण कौशल 33
  भुवनेश स्वामी
- भाषा : स्वतंत्रता एवं अवसर 35
  प्रमोद दीक्षित 'मलय'
- व्यसन मुक्त बालक-राष्ट्र का गौरव 37
  रमेशचन्द्र दाधीच
- प्रतिस्पर्धा में पिसता बचपन 38
  तन्मय पालीवाल
- विद्यालय में प्राथमिक चिकित्सा 40
  भूरमल सोनी
- हकलाहट : कारण और निवारण 42
  सुश्री पूर्णिमा मित्रा
- समय और उसका महत्त्व : 43
  दीपचन्द सुथार

रपट

- लोकार्पण : मुख्य प्रशासनिक भवन 7
  गोमाराम जीनगर
- 63वीं राष्ट्रीय विद्यालयी वॉलीबॉल प्रतियोगिता : **सुभाष चन्द नेहरा** 28

मासिक गीत

- युग की यही पुकार 20
  साभार : **युग शिल्पी संगीत**

स्तम्भ

- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र 25
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम 26
- शिविरा पञ्चाङ्ग (जनवरी, 2018) 26
- शाला प्रांगण से 47
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50
- व्यंग्य चित्र-**रामबाबू माथुर** 39

पुस्तक समीक्षा 44

- आरसी आगै हाथ पसार्‌यां फुटरापो (मूल : मारिया वीने)
  अनुवादक : डॉ. श्रीलाल मोहता
  समीक्षक : **सरल विशारद**
- मंथन - लेखक : हुक्मीचन्द शर्मा
  समीक्षक : **टेकचन्द्र शर्मा**
- भारतीय समाज में नारी
  लेखक : वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा
  समीक्षक : **सतीश चन्द्र श्रीमाली**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर, मो. 9414142641

सत्यमेव जयते

प्रो. वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा एवं भाषा विभाग
राजस्थान सरकार, जयपुर

अपनों से अपनी बात

सतत प्रयास-श्रेष्ठ परिणाम

शीतकालीन अवकाश पश्चात् विद्यालयों में एक बार फिर नई रंगत आ गई है। विद्यार्थी अपनी वार्षिक परीक्षा की तैयारी के लिए विशेष अध्ययन में जुटे हैं। शिक्षक भी अतिरिक्त कक्षाएँ लगा कर अपने विद्यार्थियों के शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम और मेरिट में स्थान सुनिश्चितता के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं।

विगत चार वर्षों में शिक्षा विभाग के समस्त कार्मिकों के अधिकारियों व बच्चों के सहयोग, उत्साह एवं जोश के कारण ही विद्यालयों में भारी नामांकन वृद्धि एवं उन्नत परीक्षा परिणाम रहा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे सद्प्रयासों से स्थानीय परीक्षाओं के साथ-साथ बोर्ड परीक्षाओं के परिणाम शत प्रतिशत रहें, कोई भी छात्र-छात्रा असफल न हों, स्वाभाविक एवं सहज वातावरण में बच्चे पढ़ें तथा कृतज्ञ भाव के साथ सुसंस्कारित शिक्षा प्राप्त करते हुए सफलता हासिल करें।

इस माह हमारे युगपुरूष और भारतीय स्वाभिमान के प्रतीक पूजनीय स्वामी विवेकानन्द की जयंती हम 12 जनवरी को मनाने जा रहे हैं। विद्यालयों में इस दिवस को 'युवा दिवस' के साथ-साथ 'केरियर डे' के रूप में मनाया जाना है। शिक्षक बन्धु जानते हैं कि बालक का भविष्य निर्माण ही अपना प्रमुख दायित्व है। हम स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु बनकर नरेन्द्र को विवेकानन्द बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करें। इस देश का चिरयौवन आप के कुशल मार्गदर्शन के बल पर ही बना रह सकता है।

मकर संक्रान्ति उत्सव हमारे जीवन में प्यार, पुण्य, उपासना एवं संगठन के संस्कार प्रदान करता है। छोटे-छोटे तिल गुड़ के साथ मिलकर मजबूती का संस्कार प्रदान करते हैं; हम हमारे राष्ट्र व समाज को दृढ़ व मजबूत बनाने का भाव जागृत करें।

स्वतन्त्रता आंदोलन के सिपाही, संघर्ष के अप्रतिम योद्धा, कुशल संगठक और भारतीय आज़ादी के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ श्री सुभाषचन्द्र बोस की जयन्ती 23 जनवरी को हम मनाने जा रहे हैं। माँ सरस्वती का जन्मोत्सव वसंत पंचमी के रूप में सभी विद्यामंदिरों में मनाकर ज्ञानवान व विवेकवान नागरिक बनाने में अहर्निश रत रहने का हम सभी संकल्प लेवें।

26 जनवरी भारतीय गणतंत्र की जयन्ती भी हम हर्षोल्लास के साथ मनाएँ और गण के समुन्नत जीवन के लिए सार्थक प्रयास करें।

30 जनवरी महात्मा गाँधी की पुण्य तिथि है। सत्य, अहिंसा के पथ पर चलते हुए हम राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य को श्रेष्ठतम रूप से सम्पादित करने का संकल्प लें।

(प्रो. वासुदेव देवनानी)
शिक्षामंत्री

> "शिक्षक बन्धु जानते हैं कि बालक का भविष्य निर्माण ही अपना प्रमुख दायित्व है। हम स्वामी रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरु बनकर नरेन्द्र को विवेकानन्द बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करें। इस देश का चिरयौवन आप के कुशल मार्गदर्शन के बल पर ही बना रह सकता है।"

सत्यमेव जयते

नथमल डिडेल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

सुनिश्चित सफलता प्राप्त करें

स्वतन्त्र भारत ने अपना संविधान 26 जनवरी 1950 को अंगीकृत किया। तब से प्रत्येक भारतीय 26 जनवरी को राष्ट्रीय पर्व 'गणतन्त्र दिवस' के रूप में उत्साह और उमंग के साथ मनाता है। यह पर्व राष्ट्र के नागरिकों में अपना देश, अपना संविधान, अपने अधिकार के गौरव के साथ अपने कर्त्तव्य के प्रति आत्मावलोकन और दृढ़ संकल्पित होकर कार्य करने की प्रेरणा देता है।

राष्ट्र निर्माण में, शिक्षा के माध्यम से अपना योगदान देने का सौभाग्य हमें मिला है। राजकीय विद्यालयों में हमारे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सतत प्रयासरत हैं। आगामी परीक्षा, विशेषतः बोर्ड परीक्षा की मेरिट में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी निरन्तर कठोर परिश्रम कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि शिक्षक और विद्यार्थी अपने परिश्रम का शत प्रतिशत परिणाम पाने के लिए समयबद्ध प्रयास करते हुए कार्ययोजना पूर्ण करें और सुनिश्चित सफलता प्राप्त करें।

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन और महिला सशक्तीकरण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। वसन्त पंचमी के अवसर पर 'गार्गी पुरस्कार' प्राप्त करने वाली बालिकाओं की संख्या का तीन गुना से अधिक होना सिद्ध करता है कि राजकीय विद्यालयों में बालिकाएँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हुए उच्चतम अंकों के साथ सफलता के नये आयाम स्थापित कर रही हैं। आगामी वसन्त पंचमी पर पुरस्कृत हो रही सभी बालिकाओं को अग्रिम बधाई और शुभकामनाएँ। मुझे आशा है अन्य विद्यार्थी भी इनसे प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

इसी माह स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, लाला लाजपत राय जयन्ती के साथ लालबहादुर शास्त्री पुण्यतिथि और महात्मा गाँधी का अवसान दिवस है। कृतज्ञ राष्ट्र अपने ज्ञात-अज्ञात सभी शहीदों का पुण्य स्मरण कर 'शहीद दिवस' के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित करता है। महापुरुषों का जीवन चरित्र हमारा पाथेय बने। हम उनके विचारों और कार्यों को अपने आचरण में अपनाकर सही अर्थों में प्रेरणा पाएँ।

सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ-

(नथमल डिडेल)

"राष्ट्र निर्माण में, शिक्षा के माध्यम से अपना योगदान देने का सौभाग्य हमें मिला है। राजकीय विद्यालयों में हमारे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए सतत प्रयासरत हैं। आगामी परीक्षा, विशेषतः बोर्ड परीक्षा की मेरिट में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए शिक्षक और विद्यार्थी निरन्तर कठोर परिश्रम कर रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि शिक्षक और विद्यार्थी अपने परिश्रम का शत प्रतिशत परिणाम पाने के लिए समयबद्ध प्रयास करते हुए कार्ययोजना पूर्ण करें और सुनिश्चित सफलता प्राप्त करें।"

▼ चिन्तन

जितात्मनः प्रशान्तस्य
परमात्मा समाहितः।
शीतोष्ण सुखदुः खेषु
तथा मानापमानयोः।।

भावार्थ-सर्दी हो या गर्मी, सुख हो या दुःख, सम्मान हो या अपमान हो, ऐसी सभी परिस्थितियों में जो एक जैसा शान्त बना रहता है, उसके मन में परमात्मा का वास रहता है अर्थात् विषम और सम सभी स्थितियों में जो अपने काम में लगा रहता है, वही लक्ष्य प्राप्त करता है।

श्रीमद्भगवद्गीता-6/7

पाठकों की बात

● 'शिविरा' पत्रिका का माह दिसम्बर 2017 का अंक अनेक पठनीय और प्रासंगिक लेखों से युक्त प्राप्त हुआ। 'नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति : सामयिक चिंतन' लेख चिंतनीय और समसामयिक विषय है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और विकास का प्रथम सोपान है। शिक्षा में परिवर्तन समय की पुकार है। शिक्षा का स्वरूप समयानुसार होना चाहिए। 'शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता' बिना विद्यालय का विकास अधूरा है। समाज विद्यालय की स्थापना करता है, विद्यालय समाज को सुसंस्कृत नागरिक देकर सभ्य समाज की स्थापना करता है। 'कैसे लाएँ शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम' लेख संस्थाप्रधानों को एक लक्ष्य की ओर आकर्षित करता है। शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम हेतु अन्य कार्यों के साथ-साथ विद्यालय का वातावरण भी एक महत्त्वपूर्ण घटक है। 'असफलता भी वरदान है' लेख मनुष्य को निराशा से आशा की ओर ले जाता है। प्रोजेक्ट वर्क, पोर्टफोलियो और अक्षय पेटिका जैसे नवाचारों से सभी को भिज्ञ होना चाहिए। महामना मदन मोहन मालवीय और लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल युग पुरुष थे। इनके जीवन हमारे लिए पथ प्रदर्शक हैं और रहेंगे। संपादक मण्डल को साधुवाद।

-महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद (अजमेर)

● माह दिसम्बर, 2017 का अंक आकर्षक मुख्य पृष्ठ सहित मुझे प्राप्त हुआ। इस शिविरा अंक के सभी लेख बहुत अच्छे लगे। 'राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आर.ए.एस.)' आलेख में मुझे भी आर.ए.एस. की तैयारी के लिए और ज्यादा परिश्रम करने के लिए प्रेरित किया। यह आलेख विद्यालय के युवा विद्यार्थियों को 10+2 परीक्षा उत्तीर्ण करने से पूर्व प्रशासनिक सेवा में जाने का सपना रखने वाले युवाओं को उचित मार्गदर्शन व दिशा निर्देश देने के साथ एक अवसर की राह दिखाने एवं अभिप्रेरित करने वाला हैं। इस आलेख से विद्यालय के युवाओं को वो जानकारी मिली जो हमें कॉलेज जीवन में प्राप्त हुई। इससे परिचित विद्यार्थी अपने लक्ष्य को रुचि के अनुसार पहचान कर अपने आगे का मार्ग तय करने की दिशा में प्रेरित होगा और ज्यादा मेहनत व लगन से विश्वास के साथ सफल होने का मानस बना चुका होगा। तभी सफलता की कसौटी पर खरा उतारता है। लेखक धन्यवाद व बधाई के पात्र हैं।

-कर्ण सिंह बेनीवाल, हनुमानगढ़

● आवरण पृष्ठ पर विजय दिवस चित्रित। अपनों से अपनी बात में प्रो. वासुदेव देवनानी जी ने प्रसन्नता पूर्वक उद्घोषित किया कि राष्ट्रीय सर्वे में राजस्थान शिक्षा क्षेत्र में चौथे पायदान पर खड़ा है। इस प्रकार से राजस्थान आगे से आगे बढ़ रहा है। दिशाकल्प में निदेशक महोदय ने शिक्षा विभाग को उत्कर्ष पर बताया है दोनों ही आलेख पर खुशी होना स्वाभाविक है। बड़ों की सीख बताती है कि जीवन में अच्छे मित्रों का साथ लाभप्रद रहता है। लोह पुरुष सरदार पटेल व्यक्तित्व एवं कृतित्व सामयिक आलेख है। 'पाठकों की बात' में बात का बतगंड़ बनाने वालों का पर्दा फाश कर दिया गया है। शिविरा पर लगाए आरोप नासमझी का नमूना है। 'एक सेवामुक्ति ऐसी भी' प्रधानाचार्य नईम अहमद का आलेख श्री सुभाषचन्द कस्वां के प्रति अभिव्यक्त विचार ऐसे शिक्षकों के प्रति आदर भावों का प्रकटीकरण है। ऐसे आदर्श शिक्षकों को नमन। 'असफलता भी वरदान है' चिन्तनीय आलेख है। पाठक इसे अवश्य पढ़ें। अंक में सम्मिलित सभी आलेख एक से बढ़कर एक हैं।

-टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

● माह दिसम्बर, 2017 का 'शिविरा' अंकावरण देश के रणबांकुरों को समर्पित लगा। यह 1971 के हमारे गौरव की याद दिलाता है। पूरा अंक विविध विषयों के सटीक व ज्ञानवर्द्धक आलेखों का कलेवर लिए हुए है। मंत्री जी का 'आगे बढ़ता राजस्थान' और निदेशक जी का 'उत्कर्ष पर शिक्षा सत्र' के अलावा श्री प्रकाशवया का 'अंतिम उद्धेश्य सच्चा और अच्छा इंसान' तथा मासिक गीत 'मनुष्य तू बड़ा महान है' निराशा के गर्त से निकाल कर मनुष्य में असीम उत्साह का संचार करने के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्त होकर शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा देते है। साथ ही 'पाठकों की बात' में प्रकाशित पत्र सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं।

-जय प्रकाश राजपुरोहित, हदां (बीकानेर)

रपट

निदेशालय (माध्यमिक शिक्षा) परिसर

लोकार्पण : मुख्य प्रशासनिक भवन

❒ गोमाराम जीनगर

शिक्षा मानव निर्माण का सर्वश्रेष्ठ उपक्रम है। मानव जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा महत्त्वपूर्ण आयाम है। अतः शिक्षा केन्द्रों की उपलब्धता और उन्हें अत्याधुनिक आधारभूत भौतिक सुविधाओं से युक्त करना प्राथमिकता में रहना आवश्यक और स्वाभाविक ही है। राजस्थान के विभिन्न अचंलों में अलख जगा रहे इन विभिन्न शिक्षा केन्द्रों का संचालन शिक्षा निदेशालय से होता है। ऐसे विद्यालयी शिक्षा के बीकानेर स्थित निदेशालय परिसर में नवनिर्मित **मुख्य प्रशासनिक भवन** के लोकार्पण का भव्य समारोह दिनांक 13 दिसम्बर 2017 को सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पधारे अपने प्रदेश के प्रारंभिक-माध्यमिक शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) **माननीय प्रो. वासुदेव देवनानी,** समारोह अध्यक्ष देश के संसदीय कार्य, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के राज्यमंत्री **माननीय अर्जुनराम मेघवाल** एवं विशिष्ट अतिथिगण प्रदेश के संसदीय सचिव **डॉ. विश्वनाथ मेघवाल,** बीकानेर पश्चिम के विधायक **डॉ. गोपालकृष्ण जोशी** तथा बीकानेर पूर्व की विधायक **सुश्री सिद्धि कुमारी** के कमकमलों द्वारा सर्वप्रथम माँ सरस्वती के प्रांगण में नवनिर्मित भवन के मुख्य द्वार पर लगा फीता काटकर, पदार्पण कर लोकार्पण किया गया। इससे पूर्व आयोजन स्थल पर पधारने पर अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

लोकार्पण तथा पट्टिका अनावरण पश्चात् विधिवत् मंचीय समारोह हेतु सभी अतिथियों को मंच पर पधारने का आग्रह किया गया। समारोह का शुभारंभ स्काउट गाइड की छात्राओं दीक्षा, ममता, डाली व रेणु ने अध्यापिका रीतु गौड़ के निर्देशन में स्वागत गीत प्रस्तुत कर मरुधरा की गौरवपूर्ण परम्परा 'पधारो म्हारे देश' का निर्वाह कर अतिथि सत्कार किया। तत्पश्चात जहाँ मंच पर विराजमान मुख्य अतिथि मा. प्रो. वासुदेव देवनानी, समारोह अध्यक्ष मा. अर्जुनराम मेघवाल, विशिष्ट अतिथिगण डॉ. विश्वनाथ मेघवाल, डॉ. गोपालकृष्ण जोशी, निदेशक मा. शि. राजस्थान श्री नथमल डिडेल (IAS), निदेशक प्रार. शि. राज. श्री पी. सी. किशन (IAS), भाजपा शहर जिलाध्यक्ष डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य एवं देहात जिलाध्यक्ष श्री सहीराम दुसाद को क्रमशः श्रीनथमल डिडेल, श्री पी.सी. किशन, श्री विजय शंकर आचार्य (उप/संयुक्त निदेशक मा. शि. राज.), श्री असलम मेहर RAS. (अतिरिक्त निदेशक प्रारं. शि. राज.), श्री रमेश हर्ष (स्टाफ ऑफिसर), श्री प्रकाशचन्द्र जाटोलिया (उपनिदेशक-प्रशासन, मा. शि. राज.), श्री मोहन लाल स्वामी (संयुक्त निदेशक प्रशिक्षण मा. शि. राज.) एवं श्री कृष्णकांत अत्रे (सहायक निदेशक-प्रशासन) द्वारा साफा पहनाकर मालार्पण कर स्वागत किया गया, वहीं विशिष्ट अतिथि सुश्री सिद्धि कुमारी को शॉल ओढ़ा कर, पुष्पगुच्छ अर्पण कर श्री राजेन्द्र डूडी (वित्तीय सलाहकार प्रारं. शिक्षा राज.) द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण करते हुए श्री सुरेश व्यास (अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी) ने कहा कि ''गत दो वर्ष से तैयार भवन की कुछ तकनीकी कमियों को दुरुस्त करने में हमारे युवा व ऊर्जावान निदेशक श्री नथमल डिडेल की तत्परता से सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता श्री बसंत कुमार आचार्य की निरंतन सक्रियता के फलस्वरूप आज यह सुअवसर हमें मिला है, अतः इस महायज्ञ में लगे सभी कार्मिकों एवं हमारे निवेदन को स्वीकार कर अतिथि रूप में सान्निध्य प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों का निदेशालय परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूँ।''

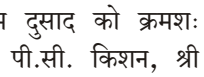

तत्पश्चात् निदेशक प्रारं. शि. राज. श्री पी.सी. किशन (IAS) ने कहा कि ''विभागीय सुदृढ़ता व शैक्षिक उन्नयन हेतु सरकार निरन्तर प्रयत्नशील है। इसी कड़ी में कक्षा 5वीं, 8वीं की परीक्षार्थ बोर्ड का गठन, SIQE गतिविधि आधारित शिक्षण, PEEO अवधारणा व क्रियान्वयन मील के पत्थर साबित होंगे।'' साथ ही उन्होंने निदेशालय परिसर में कॉन्फ्रेंस हॉल की आवश्यकता प्रकट कर निर्माण के पहल की बात भी कही। उन्होंने कहा ''बीकानेर साहित्य, संगीत व कला की धरोहर को सहेजने वाला केन्द्र है। राजस्थान सरकार के शिक्षा क्षेत्र में चल रहे प्रयास राजस्थान को देश की शिक्षा जगत की राजधानी बनाने की ओर अग्रसर है।''

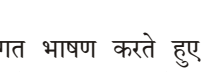

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे केन्द्रीय राज्यमंत्री माननीय अर्जुनराम मेघवाल ने कहा ''सरकार की बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ, साइकिल-स्कूटी वितरण, पारदर्शी प्रशासन, क्वालिटी एज्यूकेशन, नैतिक शिक्षा, भारतीय चिंतन की शिक्षा आदि कदमों से भारतीय नेतृत्व का विश्व में अपार मान बढ़ा है, जिससे ऐसा लगने लगा है कि चार चाँद लगाते हुए भारत विश्व गुरु बनेगा।'' उन्होंने कहा कि ''विकास की दृष्टि से 19 वीं सदी यूरोप, 20 वीं सदी अमेरिका और 21 वीं सदी एशिया की है।

उसमें अध्यात्म और सर्वकल्याण का अधिष्ठान लिए हुए नेतृत्व भारत ही करेगा। ऐसा विश्वास प्रत्येक देश्वासी के दिल में उत्पन्न करने एवं गौरव जगाने का कार्य शिक्षा द्वारा किया जाना आवश्यक है।'' इस अवसर पर उन्होंने बीकानेर संसदीय क्षेत्र के विद्यालयों को प्रयोगशाला युक्त बनाने हेतु 1 करोड़ रुपये और निदेशालय परिसर में प्रस्तावित कॉन्फ्रेंस हॉल के निर्माणार्थ 20 लाख रुपये सांसद कोटे से देने की घोषणा की। उन्होंने बीकानेर पूर्व विधायक, बीकानेर राजपरिवार व जन-जन की लाडली सुश्री सिद्धि कुमारी की तरफ अभिमुख होकर उनके पूर्वज महाराजा सार्दुलसिंह द्वारा सन् 1950 में मात्र 1 रु. सालाना किराए पर वर्तमान भवन उपलब्ध कराने का स्मरण कराते हुए शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को रेखांकित किया, साथ ही उपनिदेशक प्रारं. शिक्षा का कार्यालय बीकानेर में भी स्थापित करने का शिक्षामंत्री जी से आश्वासन चाहा।

समारोह की विशिष्ट अतिथि सुश्री सिद्धि कुमारी ने समारोह की भूरि-भूरि प्रशंसा कर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने प्रदेश की मुख्यमंत्री मा. वसुंधरा राजे के नेतृत्व में प्रदेश के विकास की बात करते हुए कॉन्फ्रेंस हॉल के निर्माण हेतु 20 लाख रुपये विधायक कोटे से देने की घोषणा की।

तत्पश्चात् विशिष्ट अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण जोशी ने 'भारत माता की जय' के उद्घोष लगाकर बात प्रारंभ की। उन्होंने कहा कि ''स्वतंत्रता के पश्चात् प्रदेश में शिक्षा की राजधानी बीकानेर, शासन की राजधानी जयपुर, उच्च न्यायालय जोधपुर और राजस्व बोर्ड अजमेर निर्धारित किए गए। तत्पश्चात् धीरे-धीरे बीकानेर से कॉलेज शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, संस्कृत शिक्षा आदि शाखाएँ बनाकर अन्यत्र ले गए, जिससे बीकानेर कमजोर हुआ। शिक्षा विभाग का वर्तमान मुख्य भवन सन् 1913 ई. में महाराजा गंगासिंह द्वारा बीकानेर की जनता हेतु निर्मित लेजिस्लेटिव एसेम्बली हॉल (विधानसभा भवन) में चल रहा है। नए मुख्य प्रशासनिक भवन में कार्मिकों की दक्षता बढ़ेगी और कार्य के प्रति समर्पण से प्रदेश शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेगा। सरकार ने काऊंसलिंग से भर्ती-पदस्थापन, देश के महापुरुषों के प्रति आदर भाव जगाने एवं महाराणा प्रताप आदि की महानता नई पीढ़ी में स्थापित करने हेतु पाठ्यक्रम परिवर्तन जैसे साहसिक कदम उठाए हैं।'' उन्होंने इन कदमों की सराहना करते हुए प्रदेश सरकार की चार वर्ष की उपलब्धियाँ भी गिनाई तथा प्रस्तावित कान्फ्रेंस हॉल के निर्माण हेतु विधायक कोटे से 30 लाख रुपये देने की घोषणा की।

इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि डॉ. विश्वनाथ मेघवाल ने कहा कि ''शिक्षा विभाग में देवनानी जी के नेतृत्व में किए गए नवाचारों का ही सुपरिणाम है कि 20 लाख बच्चों का नामांकन बढ़ा, 1 लाख से अधिक कार्मिकों को पदोन्नति का लाभ मिला, 85000 के लगभग नई नियुक्तियाँ की गई, 5000 विद्यालय एक साथ उ. मा. स्तर में क्रमोन्नत किए गए, मा. शि. बोर्ड का परीक्षा परिणाम 16% उन्नत हुआ और एक सर्वे के अनुसार राजस्थान ने शिक्षा के क्षेत्र में देश में चौथा स्थान प्राप्त किया।'' साथ ही उन्होंने कॉन्फ्रेंस हॉल के निर्माण हेतु 20 लाख रुपये विधायक कोटे से देने की घोषणा की।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय प्रो. वासुदेव देवनानी ने समारोह में उपस्थित सभी शिक्षा प्रेमियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि ''मेरी इच्छा थी कि मैं सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने के इस पावन अवसर पर अपने स्वयं के घर (शिक्षा मुख्यालय) बीकानेर में उपस्थित रहूँ, इस अवसर पर इस विशाल भवन का उपहार आपको सौंपते हुए हर्षित हूँ, जहाँ से प्रारंभिक व माध्यमिक शिक्षा का संचालन होता है। 4 वर्ष के इस कार्यकाल में 1.09 लाख कार्मिकों की पदोन्नति, 87,000 पदों पर भर्ती, 5000 विद्यालयों की क्रमोन्नति, स्टाफिंग पैटर्न, विद्यालय समन्वय, सुदृढ़ीकरण, कक्षा 8 तक अनुत्तीर्ण न करने के मिथक को पलटकर कक्षा 5 व 8 की परीक्षा हेतु बोर्ड का गठन, मोनिटरिंग हेतु PEEO. को शक्तियाँ देना, काऊंसलिंग द्वारा पदस्थापन व गौरवपूर्ण ऐतिहासिक उज्ज्वल पक्ष भावी पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु पाठ्यक्रम परिवर्तन आदि साहसिक कदम उठाए है। 'मेरा भारत महान है' का मानस बनाने हेतु ध्यान, योग, नैतिक शिक्षा, सन् 1857 से 1947 तक के 200 महान चरित्रों का प्रेरणास्पद जीवनवृत्त पाठ्यक्रम में जोड़ने का कार्यक्रम किया है। हम ज्ञान में सदैव अग्रणी थे, न्यूटन से लगभग 1000 वर्ष पूर्व ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण नियम की खोज कर ली थी, इसी तरह रामायणकाल में भगवान राम का लंका से अयोध्या पुष्पक विमान में आना और महाभारत काल में संजय द्वारा धृतराष्ट्र को युद्ध का आँखों का देखा वर्णन राजभवन में बैठे सुनाना हमारी विमान एवं दूरदर्शन क्षमता के अद्भुत उदाहरण है। विभाग में 52% के स्थान पर अब मात्र 23% पद रिक्त है। बोर्ड परीक्षा परिणाम 16.5% बढ़ना, गुणवत्तापूर्ण मानदण्डानुसार विद्यालयों का स्तरांकन (तारांकित) निर्धारण, अक्षय पेटिका एवं मुख्यमंत्री विद्या कोष के माध्यम से जनप्रतिनिधियों, कार्मिकों ही नहीं जनसामान्य में भी विद्यालय के प्रति अपनत्व जगा कर विद्यालय विकास में सहभागिता बढ़ी है। सरकारी विद्यालयों में 2013 में 60 लाख नामांकन था जो आज 82 लाख तक पहुँचना हमारे प्रयासों से समाज की संतुष्टि का प्रमाण है। बालिका शिक्षा प्रोत्साहन की विभिन्न योजनाएँ, मासिक स्वच्छता दिवस, लर्निंग लेवल परीक्षण, पी.टी.एम., एम.टी.एम. आदि विशेष प्रयत्न जारी है। मेरी शिक्षा टीम थ्री टी (T-Team work, T- Technology & T-Transparency) के आधार पर निरंतर गतिमान रहकर प्रदेश को देशभर में शिक्षा के क्षेत्र में पहले स्थान पर प्रतिष्ठा दिलाने हेतु कटिबद्ध है। इसी गति से हमारा देश भी प्रगति करेगा, विश्वगुरु था और रहेगा। यह कार्यालय अपना घर है। घर जैसा संवेदनशील वातावरण निर्माण कर हम बेहतर समाधान समयबद्ध देंगे तो निश्चित ही

हमारा राजस्थान आदर्श राज्य बनेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।'' उन्होंने बीकानेर में ही उपनिदेशक (प्रारं. शिक्षा) कार्यालय खोलने की घोषणा भी की तथा कहा कि ''विद्यादान हेतु धन की कमी नहीं आने दी जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर मालवीय जी की तरह झोली फैलाने में भी नहीं हिचकेंगे।''

इसी क्रम में माननीय मुख्यमंत्री बजट घोषणा के अनुरूप आर्थिक रूप से पिछड़े (सामान्य संवर्ग) के मेधावी विद्यार्थियों को राशि 15000 रुपये का चैक एवं प्रशस्ति पत्र कला वर्ग की कक्षा 12 की छात्रा दीक्षा मोदी एवं वाणिज्य वर्ग की कक्षा 12 की छात्रा वर्षा लखानी को सम्मानित मंच द्वारा प्रदान किए गए।

समारोह की अगली कड़ी में मंच पर विराजित मा. अर्जुनराम मेघवाल को निदेशक महोदय द्वय तथा मा. प्रो. वासुदेव देवनानी, डॉ. विश्वनाथ मेघवाल, डॉ. गोपाल कृष्ण जोशी, सुश्री सिद्धि कुमारी, श्री नथमल डिडेल, श्री पी. सी. किशन, डॉ. सत्यप्रकाश आचार्य एवं श्री सहीराम दुसाद को क्रमशः श्री नथमल डिडेल, श्री पी.सी. किशन, श्री हरि प्रसाद शर्मा (संयुक्त निदेशक प्रशासन, मा. शि. राज.), श्रीमती रक्षा सिंह (सहायक निदेशक), श्री असलम मेहर RAS (अतिरिक्त निदेशक प्रा. शि. राज.), श्री परमेश्वर लाल RAS (अतिरिक्त निदेशक मा. शि. राज.), श्री अविनाश व्यास (सहायक प्रशासनिक अधिकारी) एवं हेमाराम जाट (वरिष्ठ सहायक) द्वारा स्मृति चिह्न भेंट किए गए।

समारोह आयोजक एवं निदेशक मा. शि. राज. श्री नथमल डिडेल ने, जयपुर से पधारी मंत्री

जी की टीम, PWD विभाग, नगर निगम, पुलिस प्रशासन, मीडियाकर्मी, समस्त अतिथियों एवं प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग करने वाले सभी कार्मिकों व आगुन्तकों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि ''4 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह विशाल भवन उपहार रूप में निदेशालय को देने और आगे भी धन संबंधी कमी न आने देने का मंत्री जी का आश्वासन हमारे लिए और अधिक लगन व निष्ठा से कार्य करने के लिए उत्साहवर्धन करेगा, मार्ग प्रशस्त करेगा।'' कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव पर सभी ने अपने स्थान पर सावधान की मुद्रा में खड़े होकर राष्ट्रगान 'जन-गण-मन' का समवेत स्वर में गायन किया। कार्यक्रम का संचालन शारीरिक शिक्षक श्री ज्योति प्रकाश रंगा एवं वरिष्ठ सहायक श्री मदनमोहन मोदी ने किया।

इस प्रकार 'भारत माता की जय' के उद्घोष के साथ गरिमामय समारोह सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। सभी के लिए अल्पाहार की व्यवस्था भी की गई थी।

समारोह के विधिवत आयोजन हेतु स्वागत समिति, मंच व बैठक व्यवस्था समिति, आमंत्रण समिति, कार्यक्रम संचालन समिति, जलपान व्यवस्था समिति, साज सज्जा, रंगोली व्यवस्था समिति, पार्किंग, लाइटिंग, साफ-सफाई स्वागत कक्ष समिति, बिल्डिंग के अन्दर की बैठक व्यवस्था समिति एवं प्रोटोकॉल व सर्किट हाऊस व्यवस्था समिति का गठन कर जिम्मेदारी सौंपी गई। सभी समिति सदस्यों ने निष्ठापूर्वक कार्य सम्पन्न कर समारोह को यशस्वी बनाने में योगदान दिया। समारोह स्थल पर रंगोली सजाने का कार्य रा. उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान बीकानेर में अध्ययनरत बी.एड. प्रथम वर्ष की छात्राध्यापिका भव्या शर्मा, चेतना चौहान, निशी गोयल, कान्ता ओझा, प्रीति शर्मा, कविता आसेरी व किरण ने किया।

अतिथिगण ने वाटिका में 'अशोक' पौधे का रोपण भी किया ताकि विभाग व परिसर में सर्वत्र सभी स्वस्थ व नीरोग व प्रसन्न (अशोक) रहकर विभाग व जनहित में अहर्निश ज्ञान राशि के वितरण में सहभागी हो सकें।

मंच व पाण्डाल व्यवस्था में स्काउट मास्टर श्री अभय सिंह, सुश्री मीनाक्षी भाटी (C.O. गाइड) के नेतृत्व में विकास सेवग, किसनसिंह, विक्रम, संदीप, मनीष शर्मा, बनवारीलाल बाना, रविप्रकाश चाहर, जयश्री सुथार, रजनी स्वामी, डिम्पल चौधरी, कोमल सारस्वत, सोनू शर्मा, मोनिका पारीक, अर्चना सोलंकी, दिव्या सैनी एवं दीक्षा पारीक ने सहयोग किया।

शिक्षामंत्री जी ने इस प्रवास के दौरान जनसुनवाई में जनता की परिवेदना सुनकर निस्तारण की पहल की, साथ ही विभाग के अधिकारियों के साथ विभाग की प्रगति की समीक्षा भी की। समारोह व प्रवास विभाग में ऊर्जा स्फूरित करने की दृष्टि से कारगर रहा।

सहायक निदेशक (शिविरा)
मा. शि. राज. बीकानेर
मो. 9413658894

मीणा ने जीते गोल्ड मैडल

राजस्थान मास्टर्स एथलेटिक्स प्रतियोगिता में हरिराम मीणा ने दो गोल्ड व एक रजत पदक जीत कर शिक्षा निदेशालय, बीकानेर का नाम रोशन किया है। उक्त प्रतियोगिता 28 व 29 अक्टूबर, 2017 को अजमेर में आयोजित हुई जिसमें मीणा ने अपने आयु वर्ग में 200 मी. व 400 मी. दौड़ में स्वर्ण पदक व भाला फैंक में रजत पदक जीते है, आपका राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया है जो माह फरवरी 2018 में राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में आयोजित होगी। आपके द्वारा गत वर्षों में भी राष्ट्रीय प्रतियोगिता व विभागीय कर्मचारी खेल कूद प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सम्मानित किया जा चुका है। श्री मीणा माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत है। उनका कहना है कि ''मैंने अपने दैनिक कार्यों के सम्पादन के साथ प्रातः भ्रमण व योग अभ्यास से उक्त उपलब्धियां प्राप्त कर एक अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त किया है।'' **-व.सं.**

गणतंत्र दिवस विशेष

सांविधानिक नैतिकता और श्री अरविन्द का आध्यात्मिक राष्ट्रवाद

❐ सूर्य प्रताप सिंह राजावत

जब राष्ट्रवाद की बात होती है तो अक्सर एक जाति, एक भाषा, एक धर्म की एकरूपता के लक्षण को अनिवार्य बताया जाता है, जो कि एक पश्चिमी सोच है। परन्तु इस प्रकार के राष्ट्रवाद की सोच का श्री अरविन्द खण्डन करते हैं, वे वन्देमातरम् पत्रिका में लिखते हैं कि जाति, भाषा व धर्म में विभिन्नता होने के बावजूद लोगों में राष्ट्रीय एकता का भाव रहता है।

भारत में उस एकता के सूत्र का आधार है भारतीय संस्कृति। वर्ष 1909 में उत्तरपाड़ा के भाषण में श्री अरविन्द ने स्पष्ट रूप से कहा था कि भारत की राष्ट्रीयता है उसकी आध्यात्मिकता। इस प्रकार श्री अरविन्द के आध्यत्मिक राष्ट्रवाद की संकल्पना ही भारतीय राष्ट्रवाद है। इसी क्रम में श्री अरविन्द बताते हैं कि हर राष्ट्र की एक सामूहिक आत्मा होती है, जो कि दिव्य विधान के अनुसार नियत कार्यों को सम्पादित करने के लिए आदेशित है। श्री अरविन्द चेतावनी देते हैं कि जिस प्रकार व्यक्ति के अहंकार में दोष होते है, जबकि व्यक्ति की आत्मा दिव्य होती है, उसी प्रकार राष्ट्रीय अहंकार के अपने दुर्गुण हैं, जिससे सावधान रहने की आवश्यकता है। व्यक्ति की विशिष्टता को अनुशासन के लिए नहीं दबाया जाना चाहिए बल्कि सामाजिक स्वर संगति में बहुत ही सहजता से उसे गोथने की जरूरत है। इसी प्रकार राष्ट्रीय सामूहिक विशिष्टता को संजोना एवं पल्लवित करना होगा जिससे वह मानव जाति के विरोधी न हो। प्रत्येक मानव समूह की पृथक सांस्कृतिक विशेषताएँ होती हैं जो कि मूल्यवान होती हैं। वे तब तक उभर नहीं सकती जब तक कि उन्हें अलग से विकसित होने का मौका नहीं मिले।

अनेकता में एकता के सूत्र में संसार का अस्तित्व है। अतः मात्र एकरूपता उतनी ही असंगत है जितना कि बहीमुखीता से एकता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करना। अतएव राष्ट्रवाद मानवता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

श्री अरविन्द लिखते हैं कि राष्ट्रवाद, अन्तर्राष्ट्रवाद एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। क्योंकि अन्तर्राष्ट्रवाद में हर राष्ट्र अपनी अद्वितीयता से दूसरे को समृद्ध कर सकता है। परन्तु इसके लिए यह नितान्त आवश्यक है कि सर्वप्रथम हर राष्ट्र वह प्रवीणता प्राप्त करें जिसके लिए उसकी सामूहिक चेतना उन्नीलित होकर विश्व में अवतरित हो। विभिन्न राष्ट्रों की विशिष्ट चेतना के बारे में श्री अरविन्द लिखते हैं कि भारत को आध्यात्मिकता, अमरिका को वाणिज्य ऊर्जा, इंग्लैण्ड को व्यावहारिक बौद्धिकता, फ्रांस को स्पष्ट तार्किकता, जर्मनी को मीमांसात्मक प्रवीणता, रूस को भावनात्मक प्रचण्डता आदि को मानव जाति की कल्याण, समृद्धि और प्रगति के लिए विकसित करने की आवश्यकता है। सार यह है कि धरती माता विभिन्न राष्ट्रों के रूप में स्वयं को उत्तरोतर अभिव्यक्त कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के गठन को विश्व सरकार के रूप में उसी दिशा में बढ़ता कदम देखा जाना चाहिए।

विद्यालय, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों को यह चुनौती स्वीकार करनी होगी कि भारत के संविधान की पहली पंक्ति ''हम भारत के लोग'' में अटूट विश्वास व श्रद्धा आज के युवाओं के चरित्र की नींव में रखनी होगी। जिसके लिए भारतीय राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति व भारतीय इतिहास महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। क्योंकि भारतीय का अर्थ ही यह है कि एकीकरण, समावेश और संश्लेषण। भारत के संविधान में फोटोलिथोग्राफी रचना में भारत के इतिहास की झांकी स्पष्ट दिखती है। जो मूल संविधान में वैदिक काल के गुरुकुल का दृश्य रामायण से श्रीराम व माता सीता और लक्ष्मण के वनवास से घर वापस आने का दृश्य, श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरूक्षेत्र में दिए गए गीता के उपदेश के दृश्यों को दर्शाया गया। श्रीअरविन्द रामायण और महाभारत पर लिखते हैं।

भारत में यह अन्तर परार्थवाद और अंहकार के बीच नहीं होता, बल्कि यह फर्क है निस्पृहता और इच्छा के बीच। एक परोपकारी अपने बारे में गहराई से सचेत रहता है और परमार्थ में वस्तुतः वह अपना अभिकर्ता बना रहता है इसी भावुकता की तप्त और बीमार गन्ध और पाखण्ड का रंग यूरोपियन परोपकारिता से चिपका हुआ है। सच्चे हिन्दू के लिए अंह का भाव विश्वबोध के साथ विलीन हो जाता है। उसे अपने कर्तव्य का पालन करना है, उसे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि इससे दूसरों का या उसका हित साधन होता है। यदि उसके कार्य में अधिकांशत निजी स्वार्थ-साधन की अपेक्षा परोपकारी भाव दिखता है, तो यह इसलिए कि उसके कर्तव्य निजी लाभ से दूसरों के लाभ के अधिक अनुकूल हो रहे हैं। एक पुत्र के रूप में राम का कर्तव्य था आत्म त्याग। अपना साम्राज्य छोड़कर एक भिक्षुक और एक संन्यासी बन जाना। उन्होंने यह प्रसन्नतापूर्वक दृढ़ता के साथ किया। लेकिन जब सीता अपहृत हो गयी तब एक पति के रूप में उनका कर्तव्य था अपहरणकर्ता से सीता का उद्धार करना और अगर रावण अपने कुकृत्य पर अड़ा रहे तो एक क्षत्रिय की तरह आगे बढ़ कर उसकी हत्या कर

देना। इस कर्तव्य का पालन भी वे उसी अटल शक्ति से करते हैं जैसे पहले कर्तव्य का पालन किया था। वे सत्य के मार्ग से केवल इसलिए नहीं हटते कि यह उनके निजी स्वार्थ से मेल खाता है। पाण्डव भी वनवास और दारिद्रय को अपनाकर बिना एक शब्द बोले चले गये क्योंकि यह उनके सम्मान का सवाल था। लेकिन कठिन परीक्षा समाप्त होने पर यद्यपि उन्होंने समझौते के लिए भरसक झुककर कोशिश की, परन्तु दुर्योधन के समाने धराशायी नहीं हुए, क्योंकि एक क्षत्रिय के रूप में यह उनका कर्तव्य था कि वे संसार को अन्याय के राज्य से बचायें। इसी प्रकार गौतम बुद्ध व महावीर के जीवन, सम्राट अशोक व विक्रमादित्य के सभागार के दृश्य मूल संविधान में मिलते हैं। इसके अलावा अकबर, शिवाजी, गुरुगोबिन्द सिंह, टीपू सुल्तान और रानी लक्ष्मीबाई के चित्र भी मूल संविधान में हैं। स्वतंत्रतासंग्राम के दृश्य को महात्मा गाँधी की दाण्डी मार्च से दर्शाया है। इसी प्रकार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का चित्र मूल संविधान में राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों का प्रतिनिधित्व करता है। नेताजी का'भारत माता' को विदेशी शासन से आजादी के लिए तिरंगे को सलामी देने वाला चित्र संविधान में मिलता है। फोटोलिथोग्राफी रचना को एक आदर्श के रूप में स्वीकारा जा सकता है व मार्गदर्शन लिया जा सकता है, जिस पर कोई असहमति नहीं हो सकती। आवश्यकता इस बात की है कि युवा को भारतीय दण्ड संहिता में वर्णित राजद्रोह के परिणामों से डराकर नहीं वरन बाबा साहेब अम्बेडकर के सांविधानिक नैतिकता का पाठ पढ़ाने की अत्यंत आवश्यकता है, जिससे की भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा की जा सके और उसे अक्षुण्ण रखें।शिक्षा में स्वायत्तता के विषय में यह अपरिहार्य हो जाता है कि कम से कम संविधान सभा द्वारा हस्ताक्षरित, सर्वसम्मति से चुने गए चित्रों के बारे में पाठ्यक्रम में पढ़ाया जावे।

भारत के मूल संविधान में चित्रण से यह स्पष्ट है कि भारत में सांस्कृतिक व आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की अहम भूमिका को संविधान सभा में स्वीकार और इसके महत्व को चित्रण के द्वारा आने वाली पीढ़ी को समझाना चाहा है। भारत की एकता व अखण्डता को बनाए रखने की अत्यन्त आवश्यकता है कि भारत की संस्कृति व सभ्यता को हम गहरे से पढ़ें व समझें। आज संविधान में करीब 100 संशोधन हो चुके हैं, संशोधनों से हम भारतीयों को यह याद रखने की जरूरत है कि भारत के संविधान में संशोधन के माध्यम से उद्देशिका में 42वें संशोधन के द्वारा 1976 में एकता औरअखण्डता को जोड़ा, 16वें संशोधन द्वारा 1963 में भारत के प्रभुता और अखण्डता को अनुच्छेद 19(1)(क) वाक्-स्वातन्त्र्य और अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य के अन्तर्गत निर्बंधन अधिरोपतिकरने के लिए जोड़ा व मूल कर्त्तव्यों में भी 51क(ग) में भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता व अक्षुण्णता सम्मिलित है, जिन्हें संविधान में 42वें संशोधन द्वारा भाग 4क के द्वारा जोड़ा गया। यह संशोधन इस बात की ओर इशारा करते हैं कि भारत की एकता के लिए सचेतन निरन्तर प्रयास करते रहना होगा।

संविधान सभा की समितियां और उनके अध्यक्ष

● **1. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** (भारत रत्न से सम्मानित 1962) 1 नियम समिति, 2 संचालन समिति, 3 वित्त और कर्मचारी समिति, 4 राष्ट्रीय ध्वज के लिए तदर्थ समिति ● **2. जवाहरलाल नेहरू** (भारत रत्न से सम्मानित 1955) 1 राज्य समिति, 2 संघ शक्ति समिति, 3 संघ संविधान समिति ● **3. वल्लभ भाई पटेल** (भारत रत्न से सम्मानित 1991) 1 प्रांतीय संविधान समिति, 2 मूल अधिकार, अल्पसंख्यक अधिकार आदि की सलाहकार समिति ● **4. डॉ. भीमराव अम्बेडकर** (भारत रत्न से सम्मानित 1990) प्रारूपण समिति ● **5. अल्लादि कृष्णस्वामी अइयर**, परिचय पत्र समिति ● **6. कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी**, कार्य निर्धारण समिति ● **7. डॉ. पट्टाभि सीतारामय्या**, 1 मुख्य आयुक्त प्रांत समिति, 2 आवास समिति ● **8. जी.वी. मावलनकर**, संविधान सभा के कृत्यों की समिति ● **9. मूल अधिकार, अल्पसंख्यक अधिकार आदि की सलाहकार समिति इस सलाहकार समिति की चार उपसमितियां थीं:** (क) **एस.सी. मुखर्जी**, अल्पसंख्यक उपसमिति (ख) **जे. बी. कृपलानी**, मूल अधिकार उपसमिति (ग) **गोपीनाथ बरदोलाई** (भारत रत्न से सम्मानित 1999) पूर्वोत्तर सीमा जनजाति क्षेत्र और असम आदि की उप समिति (घ) **जे.जे. निकोल्स राय**, अपवर्जित और भागतः अपवर्जित क्षेत्र (असम के क्षेत्रों को छोड़कर) उपसमिति ● **10. नलिनीरंजन सरकार**, संघ के संविधान के वित्तीय उपबंधों के लिए विशेषज्ञ समिति ● **11. एस.के. दर**, भाषावार प्रांत आयोग ● **12. एस. वरदाचारी**, उच्चतम न्यायालय के लिए तदर्थ समिति ● **13. Sir B N Rau**, Advisor to constituent assembly ● **14. Prof K T Shah**, proposal for handwritten original constitution of India ● **15. Prem bihari Naraina Raizada**, calligraphy work of original constitution of India ● **16. Nandlal Bose**, illumination of original constitution of India1 ● **17. Dinanath Agarwal** artistic work of the national emblem in the original constitution of India ● **18. Survey of India**, photo prints of original constitution of India

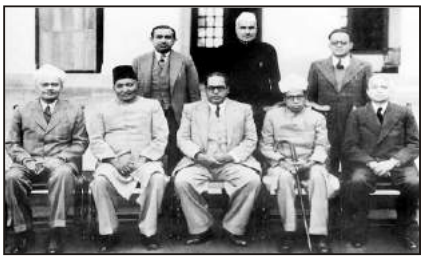

प्रारूपण समिति में अध्यक्ष डॉ आंबेडकर के अतिरिक्त 6 सदस्य थे– 1 अल्लादि कृष्णस्वामी अइयर, **2** बी.एल. मित्तर, **3** कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, **4** एन. गोपालस्वामी आयंगर, **5** डी.पी. खेतान, **6** सर सैयद मोहम्मद सआदुल्ला। बाद में-बी.एल. मित्तर के स्थान पर एन. माधवराओ नियुक्त हुए। 1948 में डी.पी. खेतान की मृत्यु के पश्चात उनके स्थान पर टी.टी. कृष्णमाचारी आए।

भारत के मूल संविधान को हस्तलिपिबद्ध/सुलेख करने का श्रेय प्रेम बिहारी नारायण को जाता है। मूल संविधान को हस्तलिपिबद्ध करने पर मानदेय का प्रस्ताव पं. नेहरू ने दिया था। इस पर प्रेम बिहारी ने मानदेय लेने से इंकार तो किया पर यह शर्त रखी की मूल संविधान के सभी पृष्ठों पर उनका नाम अंकित होगा। अंतिम पेज पर उनका व उनके पिताजी का नाम लिखने की मंशा व्यक्त की। पं. नेहरू ने इस शर्त को सहर्ष स्वीकार किया। मूल संविधान को हस्तलिपिबद्ध करने में पूरे छह महीने का समय लगा। 254 पेन होल्डर निब काम में आए व 303 नम्बर की निब इस कार्य के लिए काम में ली गई। प्रेम बिहारी नारायण को पद्मविभूषण सम्मान से सरकार ने सम्मानित किया। देहरादून स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग कार्यालय द्वारा फोटोलिथोग्राफी का कार्य पूरा किया गया संविधान सभा के सदस्यों के हस्ताक्षर आठवीं अनुसूची के बाद 11 पेजों में फैले हुए हैं। पहला हस्ताक्षर पं. नेहरू का है। अंतिम हस्ताक्षर फिरोज गाँधी का है। सभी सदस्यों के हस्ताक्षर करने के पश्चात् जब मूल संविधान पर हस्ताक्षर के लिए संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को निवेदन किया गया तब उन्होंने हस्ताक्षर के लिए पर्याप्त जगह नहीं मिलने पर अनुच्छेद 8 में अंकित भाषा की सूची व पं. नेहरू के हस्ताक्षर के बीच में सीमित जगह पर तिरछे हस्ताक्षर किए। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने यह हस्ताक्षर देवनागरी व रोमन लिपि में किए व अब्दुल कलाम आजाद ने उर्दू व पुरुषोत्तम दास टण्डन ने देवनागरी में हस्ताक्षर किए। इनके अलावा सभी सदस्यों ने हस्ताक्षर अंग्रेजी में किए। महात्मा गाँधी के हस्ताक्षर मूल संविधान में नहीं मिलते।

मूल संविधान भारत के संसद के पुस्तकालय में एक पेटी के अन्दर सुरक्षित रखा गया है जो कि विशेष नाइट्रोजन गैस से भरा हुआ है। मूल संविधान में वैदिक काल के गुरुकुल का दृश्य रामायण से श्रीराम व माता सीता और लक्ष्मण के वनवास से घर वापस आने का दृश्य, श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरूक्षेत्र में दिए गए गीता का उपदेश के दृश्यों को दर्शाया गया। इसी प्रकार गौतम बुद्ध व महावीर जी, सम्राट अशोक व विक्रमादित्य के सभागार के दृश्य मूल संविधान में मिलते है। इसके अलावा अकबर, शिवाजी, गुरुगोबिन्द सिंह, टीपू सुल्तान और रानी लक्ष्मीबाई के चित्र भी मूल संविधान में हैं। स्वतंत्रता संग्राम के दृश्य को महात्मा गाँधी की दाण्डी मार्च से दर्शाया है। इसी प्रकार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का चित्र मूल संविधान में राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों का प्रतितिनिधित्व करता है। मूल संविधान में ''भारतमाता'' का उल्लेख नेताजी सुभाष चंद्र बोस के चित्र के वर्णन में मिलता है। भारत के मूल संविधान की उद्देशिका का कला कार्य ब्योहर राम मनोहर सिन्हा द्वारा किया गया। उद्देशिका पृष्ठ पर ब्योहर राम मनोहर सिन्हा ने अपने नाम के केवल राम शब्द का उपयोग करते हुए हस्ताक्षर किए हैं। जयपुर के कृपाल सिंह शेखावत ने मूल संविधान में कला कार्य में योगदान दिया। कृपाल सिंह शेखावत को 1974 में पद्मश्री व 2002 में शिल्पगुरु सम्मान से सम्मानित किया गया। कृपाल सिंह शेखावत ने मूल संविधान में कई चित्र बनाए। कृपाल सिंह शेखावत ने जयपुर में वापस आकर परंपरागत ब्लू पोट्री कला को वापस जिन्दा किया जिसमें जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने उन्हें प्रोत्साहित किया। मूल संविधान में कला को देखने पर अजन्ता के भित्ति चित्र याद आने लगते है।

रामायण

श्रीमद्भगवतगीता

गुरू गोविन्दसिंह

शिवाजी

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ''भारतमाता'' को स्वतंत्र कराने का प्रयास

अधिवक्ता,
सुनारी हाउस, ए-35, जय अम्बे नगर, टोंक रोड, जयपुर-302018
मो. 9462294899

राष्ट्रीय युवा दिवस

स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति के प्रणेता

❒ सुधा तैलंग

''उठो, जागो और अपने लक्ष्य की प्राप्ति से पूर्व मत रुको''। अपने तेजस्वी व्यक्तित्व व ओजपूर्ण वाणी के द्वारा समूचे विश्व में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का परचम फैला देने वाले, युवा शक्ति के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद एक आदर्श आचरण व महान् व्यक्तित्व के धनी थे।

तो आइये स्वामी विवेकानंद की जयन्ती के इस पावन अवसर पर हम ऐसे महान् व्यक्ति के विचारों, आदर्शों व संकल्पों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।

महान् कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था कि ''अगर तुम भारत के बारे में जानना चाहते हो तो विवेकानंद का अध्ययन कीजिये।'' आइये हम बात करते हैं उनके व्यक्तित्व की व कृतित्व की। स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के युग निर्माता, स्वतंत्रता संग्राम के जनक कहे जाते हैं। उनका जन्म 12 जनवरी (मकर संक्रांति) सन् 1863 ई. को बंगाल प्रान्त के कलकत्ता में हुआ। पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के वकील थे। माता भुवनेश्वरी देवी एक धर्मपरायण, उदार हृदया महिला थी। माँ ने नाम रखा वीरेश्वर। प्यार से सब लोग इन्हें बिले नाम से ही पुकारते। जन्म के समय नामकरण हुआ नरेन्द्र नाथ।

बचपन में ही उन्होंने सभी सूत्र कंठस्थ कर लिए थे। माँ से रामायण व महाभारत के प्रसंग सुनकर इन्होंने याद कर लिए। सात वर्ष की उम्र में ही इन्हें कृतिवास की बंगला रामायण कंठस्थ हो गई। पढ़ाई के साथ-साथ बालक नरेन्द्र व्यायाम, कुश्ती, प्राणायाम, खेलकूद, संगीत के अलावा अनेक प्रकार की पुस्तकों के पढ़ने में भी रुचि रखते थे। इसी कारण बचपन से ही आपका शरीर हृस्ट-पुष्ट व स्वस्थ था। प्रभावशाली व आकर्षक व्यक्तित्व के कारण कॉलेज के सभी शिक्षकों व छात्रों के बीच वो बेहद लोक प्रिय थे। धर्म-कर्म, अध्यात्म में रुचि रखने वाले नरेन्द्र ने सन् 1883 में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी बीच पिता की मृत्यु के बाद इन्हें संकटों का

सामना करना पड़ा।

कॉलेज के प्राचार्य विलियम हेस्टी ने इनको स्वामी रामकृष्ण परमहंस से मिलवाया। परमहंस से हुई मुलाकात ने नरेन्द्र का पूरा जीवन ही बदल दिया। उनके सम्पर्क में लगभग छः वर्ष रहने के बाद वो नरेन्द्र से विवेकानन्द बन गये। गुरु से निर्भीकता, आध्यात्मिकता, स्वदेश प्रेम व तेजस्वी व्यक्तित्व प्राप्त किया। वे प्रायः सोचा करते थे संसार में इतनी विषमताएँ क्यों हैं? ईश्वर के दर्शन कैसे किए जा सकते हैं? जिज्ञासु प्रवृत्ति के चलते मात्र पच्चीस वर्ष की आयु में ही इन्होंने संन्यास ले लिया।

गुरु परमहंस के ब्रह्मलीन हो जाने पर मानव कल्याण हेतु रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसके बाद शुरु हुई विवेकानंद की अध्यात्म यात्रा। काशी में रहकर शास्त्रों का अध्ययन किया। पूरे देश में भ्रमण कर हिन्दू धर्म संस्कृति के आदर्शों को प्रस्तुत करके लोगों में नवजीवन का संचार किया। हिमालय से लेकर कन्या-कुमारी तक जाकर जगह-जगह उपदेश, प्रवचन देने से आपके कई भक्त बन गए। उनके उद्बोधनों से देश को नई करवट व सही दिशा मिली।

1892 में स्वामी विवेकानन्द हिमालय से अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए वैचारिक क्रान्ति की अलख जगाते हुए कन्याकुमारी गए। समुद्र से तैरते हुए लगभग ढाई किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक विशाल चट्टान पर जा पहुँचे और वहीं ध्यान, चिन्तन व मनन में लीन हो गये। यहीं पर उनको बोध, आत्म ज्ञान की प्राप्ति हुई। वे यहीं से जलयान के द्वारा अमेरिका के लिए रवाना हुए।

11 सितम्बर, 1893 का दिन विश्व के इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णिम अक्षरों में आज भी अंकित है। अमेरिका के शिकागो शहर में आध्यात्मिक सर्वधर्म सम्मेलन और उसमें स्वामी विवेकानन्द की उपस्थिति मंच पर विभिन्न देशों के विद्वान, धर्मगुरु, प्रतिनिधि व सभागृह में हजारों श्रोतागण। अन्त में बोलने की बारी आई स्वामी जी की।

''भाईयों और बहिनों!'' का संबोधन सुनते ही मंच पर उपस्थित विद्वान व श्रोतागण सभी आत्मविभोर व मंत्रमुग्ध हो उठे। उनके प्रवचन से पाश्चात्य जगत् को मानव जाति के एकत्व की अनुभूति हुई। विदेशी धरती पर उनकी जय जयकार गूँज उठी। अमेरिकावासी उनके शिष्य बन गये। वहाँ के अनेक समाचार पत्रों में उनकी प्रशंसा की गई। समूचे विश्व में भारतीय सभ्यता, संस्कृति व धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध हो गई। इसके बाद उन्होंने विश्व के कई देशों की यात्राएँ की तथा लोकप्रिय होते चले गए। वेदान्त, ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म, दर्शन व मानव कल्याण पर अपने उपदेश, प्रवचनों से ज्ञानालोक फैलाते हुए भारत में ही नहीं अपितु पूरे संसार में उन्होंने भारत के गौरव को बढाया।

इस दिव्य आत्मा का मात्र उनतालीस वर्ष की अल्पायु में ही 04 जुलाई, 1902 को स्वर्गवास हो गया। भौतिक शरीर से वो आज हमारे बीच में नहीं है पर अपने यश रूपी शरीर से आज भी जीवित हैं। सम्पूर्ण विश्व में वन्दनीय हैं।

समाज सुधार व राष्ट्र चेतना के धनी विवेकानन्द ने समाज सुधार व राष्ट्र चेतना की कई महत्त्वपूर्ण बातें कही। शिक्षा सन्दर्भों पर अपने उदात्त विचार प्रकट किए। विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा उपदेश मनुष्य में अन्तर्निहित

पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों का मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक व चारित्रिक विकास करना है। भारतीय शिक्षा का केन्द्र बिन्दु चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण में विचारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मानव चरित्र विचारों द्वारा निर्मित्त होता है। यदि हमारे विचार उच्च कोटि के हैं तो हमारा चरित्र भी उच्च कोटि का होगा। चरित्र का हमारे जीवन में सर्वोपरि स्थान है। शिक्षा में मूल्यों को शामिल करके विद्यार्थियों को संस्कारवान, चरित्रवान बनाया जा सकता है। चरित्र निर्माण ही शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

विवेकानन्द ने गीता के निष्काम कर्म पर अपनी आस्था जताते हुए कहा कि ''कर्म करो, फल की लालसा मत करो,'' को यदि ध्येय वाक्य बना लिया जाए तो मानवीय मूल्यों की स्थापना अपने आप ही हो जाएगी। निःस्वार्थ काम, त्याग, करुणा, सहयोग की भावना से मानव में ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ जैसी बुराइयाँ पैदा नहीं होगी। वे मानते थे कि ''जीवन का हर कार्य मूल्यों से जुड़ा हुआ है। यदि एक बालक को उत्तम वातावरण मिल जाए तो उसे मूल्य ग्रहण करने में कोई परेशानी नहीं होगी। बालकों को मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जा सकती बल्कि यह तो स्वतः प्रेरणा से प्राप्त की जा सकती है।''

इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय में ऐसा वातावरण सृजित किया जाए, आदर्श प्रस्तुत किये जाए ताकि विद्यार्थी स्वयं ही मूल्यों को प्राप्त कर सकें। शिक्षक ही वो कुंभकार है जो छात्र रूपी कुंभ को कुशल आकार दे सकता है। क्योंकि शिक्षक के द्वारा दी गई मूल्यपरक शिक्षा से ही संस्कारों की स्थापना की जा सकती है। वेद, उपनिषद् ज्ञान के भण्डार है। संतों, महापुरुषों के जीवन से मूल्यों को सीखा जा सकता है। मूल्यपरक शिक्षा में सत्य, अहिंसा, त्याग, अनुशासन, शांति, प्रेम, विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत करने वाले प्रेरक तत्वों को शामिल किया जा सकता है। व्यवहार, आचरण व संस्कारों से व्यक्ति महान बनता है। मूल्यपरक शिक्षा उचित मूल्यों से अनुप्राणित होकर विद्यार्थियों में ऐसे दृष्टिकोण, संकल्पों को विकसित करती हैं जिससे वे जीवन के सभी कार्यों व व्यवहारों को मूल्यों की कसौटी पर परख सकें। जिससे मानव का कल्याण हो सके।

विवेकानन्द जी के अनुसार ''मूल्यपरक शिक्षा न तो धार्मिक शिक्षा है न ही नैतिक शिक्षा। वस्तुतः ये धर्मनिरपेक्ष शिक्षा है। जिसमें परम्परागत, शाश्वत व आधुनिक मूल्यों का समन्वय होता है। मूल्यपरक शिक्षा विभिन्न धर्मो से अच्छे प्रेरक मूल्यों को प्राप्त करके विद्यार्थियों को ग्रहण करने को प्रेरित करती है। ताकि एक चरित्रवान, संस्कारवान युवा पीढ़ी का निर्माण हो सके। मूल्यपरक शिक्षा एक सकारात्मक दिशा हैं जो बालकों के व्यक्तित्व को निखार कर उनको सफलता की राह दिखाती है। मनुष्यों में विश्व बन्धुत्व की भावना जगाती है। मूल्यपरक शिक्षा से ही हृदय व मस्तिष्क दोनों का परिष्कार संभव है। मनुष्य का मनोबल ऊँचा होता है। वह निर्भय बनता है।''

आज की परिस्थितियों में जब समाज में नैतिक, सामाजिक व मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है ऐसे में विवेकानन्द जी द्वारा बताए गए मार्ग पर चल कर, मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा इन्टरनेट, टी.वी. अपसंस्कृति से भटक रही बाल पीढ़ी को सुसंस्कृत व चरित्रवान बनाया जा सकता है। ऐसे में मूल्यपरक शिक्षा आज के संदर्भ में बेहद प्रासंगिक कही जा सकती है।

स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। इसलिए एक विद्यार्थी को शारीरिक रूप से स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट व मन से दृढ़ इच्छा शक्ति वाला होना चाहिए तभी वह शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। वे स्वयं छात्र जीवन में पढ़ाई के साथ खेलकूद, व्यायाम व कसरत में रुचि रखते थे। इसी कारण वे एक स्वस्थ, सुदर्शन व आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने विद्यालयीन पाठ्यक्रम में पढ़ाई के संग खेलकूद, व्यायाम, प्राणायाम, कसरत आदि को शामिल करने की बात कही। साथ ही संगीत, धर्म व अध्यात्म पर भी बल दिया ताकि तन के साथ मन भी स्वस्थ, प्रसन्न व संस्कारवान बन सकें।

कहा गया है-'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथे' अर्थात् श्रम करने से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि इच्छा करने से। श्रम, कर्म, आस्था व अध्यात्म को ही जीवन का लक्ष्य मानने वाले विवेकानन्द कहते हैं-''बिना श्रम के शिक्षा मस्तिष्क को पंगु, अपंग बना देती है। कुछ बनना है, हासिल करना है तो कठोर श्रम करना होगा। परिश्रम की कुंजी से समस्याओं के ताले खोलकर जीवन को सुखमय, सफल बनाया जा सकता हैं। बिना मेहनत व दृढ़ इच्छा शक्ति के शिक्षा प्राप्त नहीं की जा सकती है। पुस्तकीय ज्ञान, अनेक विषयों व सूचनाओं को एकत्रित करके विद्यार्थियों के मस्तिष्क में भर देना मात्र ही शिक्षा नहीं है। यदि ऐसा होता तो पुस्तकालय विश्व के सर्वश्रेष्ठ विद्वान होते और विश्वकोष ऋषि बन जाते।'' वे किताबी ज्ञान की अपेक्षा व्यवहारिक ज्ञान पर ज्यादा बल देते थे। इसी कारण वे हमेशा अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के विरोधी रहे क्योंकि उनका मानना था कि इसमें श्रम न करने व मातृभाषा का प्रयोग न होने से बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है।

केवल डिग्री प्राप्त कराने वाली शिक्षा के वे सख्त विरोधी थे। छात्र जीवन में वे स्वयं अध्ययन, मनन व परिश्रम को कितना महत्त्व देते थे ये उनके द्वारा गुरु रामकृष्ण परमहंस को लिखे गए पत्र से स्पष्टतः ज्ञात हो जाता है।

''गुरुदेव क्षमा करें। मैं बहुत आलसी हो गया हूँ। दिन में केवल अठारह घण्टे ही स्वाध्याय कर पाता हूँ।''

ये प्रेरक प्रसंग अध्ययन व श्रम के महत्त्व को धीरे-धीरे भूलती जा रही आज की युवा पीढ़ी के मन में स्वाध्याय के प्रति सकारात्मक सोच विकसित कर उन्हें एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। श्रम की महत्ता बतलाते हुए उन्होंने युवकों को संदेश दिया-''हे भाइयो! हम सभी को इस समय कठिन परिश्रम करना होगा। अब सोने का समय नहीं है। यदि तुम परिश्रम करते करते जीवन का उत्सर्ग भी कर दो तो ये खुशी की बात हैं। जीवित रहना हैं तो विस्तार करो, जीवन दान करोगे तो जीवन पाओगे।''

युवा पीढी को आह्वान करते हुए उन्होंने कहा-''यदि हमारे देश को किसी बात की जरूरत है तो लोहे की रगों की, फौलादी नाड़ियों की और एक ऐसी प्रबल इच्छा शक्ति, आत्मबल की जिसका कोई मुकाबला न कर सकें। तुम्हारे हाथों में वो ताकत हैं जो पूरे विश्व को हिला सकती है। इसलिए अपनी शक्ति को पहचानो। नये जोश के साथ काम करो। उत्साह से हृदय भर लो। अपार धैर्य रखो। इस तरह काम करो कि मानो तुममें से हर एक पर सारा काम

निर्भर है। भविष्य की पचास सदियाँ तुम्हारी ओर ताक रही हैं।''

स्वामी विवेकानन्द जी का मानना था कि ''शिक्षा ऐसी हो कि जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके। आत्मनिर्भर बन सके।'' परिश्रम व शिक्षा को एक दूजे का पूरक बताते हुए वे कहते हैं-''परिश्रम करने वाले शिक्षित युवा ही देश को समृद्धशाली बना सकते हैं। परिश्रमी विद्यार्थी ही आत्मनिर्भर बन कर देश की गरीबी, भुखमरी व बेरोजगारी को दूर कर सकते हैं। आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा में किताबी ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान, रचनात्मकता को प्रधानता दी जानी चाहिए। जो शिक्षा आत्मनिर्भर नहीं बनाती वह शिक्षा व्यर्थ है। शिक्षा ऐसी हो जिससे मनुष्य जीविकोपार्जन के योग्य बन सके।

उनका कहना था कि ''भूखे पेट से कोई धर्म पालन नहीं होता। अतएव देश की गरीबी, बेकारी की समस्या मिटाने के लिए भारतीय जनता को शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाओ।'' इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत, तकनीकी, वैज्ञानिक, कृषि, घरेलू उद्योग धन्धों के ज्ञान पर वे बल देते थे। इसी से युवा पीढ़ी आत्म निर्भर बन सकती हैं क्योंकि डिग्रियाँ बटोरने से कुछ लाभ नहीं।''

स्वामी जी की ये विचाराधारा आज के संदर्भ में भी उतनी ही खरी उतर सकती है। यदि आज की पीढ़ी श्रम के महत्त्व को पहचाने व आत्म निर्भरता का पाठ सीखें तो एक हद तक बेरोजगारी दूर की जा सकती है। वे जन सामान्य की शिक्षा, लोक शिक्षा की व्यवस्था के पक्ष में रहे। उन्होंने मानव निर्माणकारी शिक्षा पर बल दिया। रचनात्मक शिक्षा पर जोर दिया।

वे एक आधुनिक नये भारत का निर्माण करना चाहते थे। एक आत्मनिर्भर समाज की संरचना करना चाहते थे। क्योंकि आत्मनिर्भर युवा पीढ़ी ही अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सकती हैं। वे शिक्षा के द्वारा देश से अंधविश्वास, अज्ञान, गरीबी, अकर्मण्यता और बेरोजगारी दूर करना चाहते थे।

युवा पीढ़ी को अपने पैरों पर खड़े होने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा-''ध्येय के प्रति पूर्ण समर्पण व दृढ़ संकल्प रखो। तुम्हारा भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल व गौरवपूर्ण है। अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो। नैतिकता, तेजस्विता व कर्मठता को अपने साथ रखो; राष्ट्र को तुम जैसे कर्मठ युवा शक्ति की ही जरूरत है।''

देश की युवा शक्ति को राष्ट्र के प्रति आह्वान करते हुए विवेकानंद जी ने कहा था-''किसी भी परिस्थिति में भटकना नहीं। अपने लक्ष्य के प्रति सजग बने रहो। आदर्श के लिए जिओ, अन्ध विश्वास त्यागो, कट्टरतावादी मत बनो। साहसी व उदार बनो। उठो। संसार दुःख से जल रहा है। ऐसे में क्या तुम सो सकते हो।''

युवाओं में साहस, शक्ति की भावना जगाते हुए उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी में सन्देश दिया-''निर्भय बनो। बलवान बनो। अब हमें रोने की आवश्कता नहीं। न तो मैं भविष्य देखता हूँ, न भविष्य की चिंता करता हूँ। किन्तु मेरे सम्मुख एक दृश्य जीवंत स्पष्टता से दिखाई दे रहा है कि हमारी भारत माता एक बार पुनः जागृत हो रही है धीरे-धीरे अपनी आँखें खोल रही हैं।''

युवाओं को सचेत करते हुए उन्होंने संबोधित किया ''यदि तुम आध्यात्मिकता का परित्याग कर पश्चिमी भौतिकवादी सभ्यता के पीछे दौड़े तो निश्चित ही तीन पीढ़ियों में तुम्हारी जाति का अंत हो जाएगा।'' विवेकानंद जी का ये संबोधन पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण करने वाली आज की युवा पीढी को नई राह दिखा सकता है।

आज का युवा भटक रहा है। ऐसे में उनकी वाणी युवाओं में भारतीय संस्कृति के प्रति रुचि, श्रद्धा जगा कर उनका मार्गदर्शन कर सकती है।

स्वामी जी युवाओं व छात्रों के लिए साक्षात् भगवान, प्रेरक व मार्गदर्शक रहे हैं। उनकी लोकप्रियता इसी से सिद्ध होती है कि उनकी ओजपूर्ण वाणी के आह्वान पर देश के लाखों युवा एकत्रित हो जाते थे। वे युवाओं में अपरिमित ताकत को देखते थे। वे कहते थे कि ''हमें ऐसे युवाओं की जरूरत है जिनका शरीर इस्पात का हो और धमनियों में सीसा प्रवाहित होता हो।''

निर्बलता को वे मृत्यु समझते थे। युवा शक्ति में देशप्रेम, एकता व राष्ट्रीय चेतना का शखंनाद करने वाले विवेकानंद जी के आह्वान पर अनेक राष्ट्र भक्त युवा स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में शामिल होने को तैयार रहते।

वे हमेशा नवयुवकों से कहते-''तुम्हारे अन्दर जो कुछ है उसका विकास करो। कभी दूसरों का अनुकरण मत करो। हाँ, अगर कुछ अच्छी बात हो तो उसे अवश्य ग्रहण करो। अपने समस्त विवाद, आपसी बैर भाव को समाप्त कर स्नेह की अलौकिक धारा में उसे प्रवाहित कर दो। उठो, जागो, और देखो। तुम्हारे कंधों पर ही भारत का भविष्य निर्भर है। मरते दम तक काम करते रहो। मैं तुम्हारे साथ हूँ। मेरे साहसी युवको! देश को वीरों की आवश्यकता है। अतः वीर बनो। पर्वत की तरह अडिग रहो। अपना पुरुषार्थ प्रकट करो। सत्यमेव जयते-सत्य की ही सदैव जीत होती है।''

उन्होंने युवाओं को बलशाली, स्वस्थ व परिश्रमी बनने की प्रेरणा देते हुए कहा-''वेदों में भी उल्लेख आता है कि तरुण, बलशाली, स्वस्थ व तीव्र मेधा वाले ही ईश्वर के पास पहुँचते है। भारतीय युवा पीढ़ी को नवजीवन का सन्देश देने वाले, राष्ट्र के प्रति आह्वान को प्रेरित करने वाले कीर्तिपुरुष स्वामी विवेकानन्द ने समूचे देश में वैचारिक क्रान्ति, जन जागरण की लहरें पैदा कर दी। लोगों में उत्साह भर गया, जो देश की आजादी के लिए कारगर सिद्ध हुआ। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए प्रेरणा पुंज रहे विवेकानन्द को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी हो या लोकमान्य तिलक, या फिर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस सबने उन्हें आदर्श माना हैं।

आज पूरा विश्व महान चिंतक, कर्मयोगी, समाज सुधारक व युवाशक्ति के प्रेरणा स्रोत विवेकानंद जी के संकल्पों, विचारों व आदर्शो से प्रभावित होकर उनका एक सौ पचपन वाँ जन्म वर्ष मना रहा है। वही 'भारत जागो, विश्व जगाओ,' ध्येय वाक्य का स्मरण कर भारत को विश्व शक्ति बनाने हेतु इस पावन शुभ अवसर पर राष्ट्र चेतना के युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द के पद चिह्नों पर चलने का हम संकल्प लें और इसे अपने जीवन में उतारें। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

टी-2, सिमरन एपार्टमेंट-II
प्लॉट 16-17, त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.)
पिन-462039
मो. 9301468578

राष्ट्रीय युवा दिवस

स्वामी विवेकानन्द के विचारों की सार्थकता

❒ प्रेम प्रकाश शर्मा

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 के सुप्रभात में कलकत्ता के दत्त परिवार में हुआ। बचपन में इनका नाम नरेन्द्र रखा गया। आगे चलकर आप विवेकानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपने मानवोपयोगी विचारों को लेकर शिक्षा के क्षेत्र में वे सदैव याद किये जाएँगे। इन्होंने मानव जाति को सामाजिक जड़ता और धार्मिक संकीर्णता को दूर करने तथा प्रेम व बंधुत्व का संदेश दिया। इन्होंने जिस आदर्श स्वरूप में भारतीय संस्कृति को विदेशों में प्रस्तुत किया है, वैसा न उनके पूर्व व न उनके पश्चात कोई भारतीय नागरिक कर सका है।

स्वामी विवेकानन्द एक तेजस्वी संन्यासी थे। उन्होनें 11 सितम्बर 1893 को शिकागो के आर्ट इंस्टीट्यूट के विशाल सभा भवन में लगभग सात हजार श्रोताओं तथा विश्व के समस्त धर्मों के प्रतिनिधियों के समक्ष सिंहनाद किया, **''अमेरिका निवासी बहिनो एवं भाइयो''!** सभा भवन में युगान्तरकारी भाषण इतना प्रभावशाली रहा कि लगभग एक घण्टे तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही। उन्होंने भारत की सार्वदेशिकता तथा विशालहृदयता के विचार द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इससे प्रभावित होकर अनेक विदेशी नागरिक उनके अनुयायी बन गये। ये पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विश्व का ध्यान भौतिकतावादी तथ्यों से आध्यात्मिकता की ओर खींचा।

शिक्षा का सही अर्थ–स्वामी जी के अनुसार साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता। केवल पढ़ना व लिखना ही शिक्षा नहीं है। शिक्षा का सही अर्थ है–''चरित्र निर्माण, मस्तिष्क का विकास, दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहना एवं बौद्धिक विकास।'' जिससे विद्यार्थी अपने पाँवों पर खड़ा हो सके। महिला शिक्षा के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहा कि ''स्त्री जाति की उन्नति के बिना भारत का कभी भी विकास संभव नहीं है।'' स्वामी जी महिला शिक्षा के साथ-साथ मातृभाषा द्वारा शिक्षा एवं सार्वजनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनके अनुसार ''बालक प्रकृतिप्रदत्त क्षमताओं एवं शक्तियों के साथ जन्म लेता है, उसमें बौद्धिक शक्तियाँ निहित रहती हैं। इन क्षमताओं व शक्तियों की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है। अध्यापक कुछ नहीं करता है बल्कि वह बालक में अंतर्निहित शक्तियों को विकसित करने में सहायता व मार्गदर्शन करता है। सूचना प्राप्त करना या देना शिक्षा नहीं है, शिक्षा तो वह साधन है जिससे बालक अपनी पाशविक शक्तियों पर नियंत्रण करना सीखता है। उसके सोचने का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। वह बड़े स्वार्थ के लिए छोटे स्वार्थ का त्याग करना सीखता है।''

आज चारों ओर से यह आवाज उठ रही है कि शिक्षा को रोजगार से जोड़ा जाए। स्वामी विवेकानन्द भी इसी प्रकार की शिक्षा में विश्वास करते थे। वे भारतवासियों के लिए ऐसी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे जो उनकी उदरपूर्ति में सुलभ हो सके। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि ऐसी शिक्षा जो सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सके, किसी भी रूप में नहीं दी जानी चाहिए। इसके लिए वे प्राविधिक शिक्षा के पक्षधर थे।

स्वामी विवेकानंद ने कहा कि ''मैं भारतवासी हूँ, प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है। भारतभूमि मेरा स्वर्ग है।'' जो शिक्षा विद्यार्थी में आत्मविश्वास पैदा नहीं करती, उसके मौलिक विचारों को प्रेरित नहीं करती उसमें भावात्मक एकता के बीज रोपण नहीं करती, वह सही अर्थ में शिक्षा है ही नहीं।

चरित्र निर्माण के लिए शिक्षा–मानव जीवन में चरित्र इतना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि स्वामी जी ने शिक्षा के कई उद्देश्यों में से एक उद्देश्य चरित्र निर्माण माना है। चरित्र का गुणात्मक सुधार ही शिक्षा है। मनुष्य का चरित्र उसके स्वयं की विचारधारा तथा वातावरण (जिसमें वह रहता है) से प्रभावित होता है। इस प्रकार किसी के चरित्र को समझने के लिए उसके विचार, चिंतन व वातावरण को समझना जरूरी है। स्वामीजी का मानना है कि ''संघर्ष न झेलकर आनन्द मनाने वाले व्यक्ति की अपेक्षा, कठिनाइयों, प्रतिकूल विचारों, समस्याओं से गुजरने वाले व्यक्ति का चरित्र कहीं अधिक श्रेष्ठ होता है।''

आज जो प्राथमिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है स्वामी जी ने इसकी आवश्यकता बहुत पहले अनुभव कर ली थी। स्वामी जी को विशाल जनसमूह को निरक्षर देखकर बड़ी पीड़ा होती थी। उनका विश्वास था कि इसकी उपेक्षा करके देश प्रगति के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता। स्वामीजी के अनुसार-''जब तक करोड़ों भारतवासी अशिक्षा के अंधकार में जीवन बिता रहे हैं तब तक मैं उस प्रत्येक नागरिक को देशद्रोही मानता हूँ जो उनके द्वारा चुकाए कर रूपी धन से शिक्षित हुआ है तथा अब उनकी ओर लापरवाह हो गया है।''

निर्भय होना–स्वामी जी ने कहा कि संसार में यदि किसी एक धर्म की शिक्षा देनी है तो वह है–'निर्भयता'। सर्वश्रेष्ठ भारतीय साहित्य और दर्शन सभी का निचोड़ निकालें तो वह शब्द निर्भयता ही होगा। निर्भयता का संस्कार बालकों को बचपन में ही देना अभिभावकों, गुरुजनों का दायित्व है। माताओं को भी बच्चों को डराना नहीं चाहिए बल्कि प्रारम्भ से ही भरत, राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम, हनुमान आदि महापुरुषों के कर्त्तव्य संबंधी कहानियाँ सुनाकर निर्भयता का संस्कार देना चाहिए। यदि देश के युवा सादगी, मितव्ययता को जीवन में अपनाएँ तो बहुत से झंझटों से बच सकते हैं। स्वामी विवेकानन्द साहस और निर्भयता अपने देश के युवाओं में देखना चाहते थे। वे ऐसे युवाओं से संसार को बदल देने का संकल्प अपने मन में संजोए हुए थे।

आज का युवा यदि स्वामी विवेकानन्द के विचारों का अध्ययन करे तथा उन्हें जीवन में अपनाएँ तो वह सकारात्मक विचारों से तो ओत-प्रोत होगा ही साथ ही देश के विकास में भी उसका महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। विश्व कवि रविन्द्र नाथ ठाकुर ने रोम्यारोलां से कहा था-''यदि आप भारत को समझना चाहते है तो विवेकानन्द का अध्ययन कीजिए, उनमें सबकुछ विधेयात्मक है, निषेधात्मक कुछ भी नहीं।'' स्वामीजी ने युवापीढ़ी को सन्देश दिया कि ''तुम जीवन का एक ध्येय बना लो, उस पर मनन करो, उसके सपने देखो, शरीर का प्रत्येक अंग उस लक्ष्य से ओत-प्रोत हो, अन्य विचारों को छोड़कर कठिन परिश्रम करो। बिना परिणाम सोचे अपने ध्येय की पूर्ति में लगे रहोगे तो मात्र छह माह में निश्चित ही लक्ष्य की प्राप्ति होगी।''

''उठो, जागो! और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।''

वरिष्ठ अध्यापक
रा.उ.मा.वि. साहूवाला तह. भादरा, जिला हनुमानगढ़-335501, **मो. 9413289287**

जयन्ती

क्रान्तिवीर : नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

❒ कमल नारायण

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस था जो एक प्रसिद्ध अधिवक्ता थे। इनकी माता का नाम प्रभा देवी था, जो एक सुसंस्कृत और धर्मपरायण महिला थी।

सुभाष चन्द्र बोस अपने माता-पिता की नौवीं सन्तान थे। बचपन से ही ये बड़े मेधावी थे। स्वाभिमानी होने का गुण इनमें कूट-कूट कर भरा हुआ था। सुभाष चन्द्र बोस का परिवार बहुत बड़ा था। इस बड़े परिवार में तथा माँ-बाप की व्यस्तता के कारण सुभाष को एकाकीपन की अनुभूति होना स्वाभाविक था। घर के वातावरण ने सुभाषचन्द्र बोस को अंतर्मुखी बना दिया था।

सन् 1902 में पाँच वर्ष की आयु में सुभाषचन्द्र को बेपटिस्ट मिशन स्कूल में दाखिल कराया गया। इस स्कूल में एंग्लो-इंडियन छात्रों की संख्या देशी छात्रों की अपेक्षा अधिक थी। स्कूल के प्रधान शिक्षक व शिक्षिका इंग्लैण्ड से आए थे। सुभाषचन्द्र स्कूल के अंग्रेजी वातावरण में पूरी तरह घुल-मिल गए थे। सुभाषचन्द्र को खेलकूद के प्रति कोई रुचि नहीं थी। जनवरी सन् 1909 में सुभाषचन्द्र को रोबेन्शा कॉलिजिएट स्कूल में भर्ती करा दिया गया। उन्हें अपने बढ़िया अंग्रेजी भाषा-ज्ञान तथा पारिवारिक संपन्नता के कारण बड़े सम्मान से देखा जाता था।

सुभाषचन्द्र बोस अभी सोलहवें वर्ष में प्रवेश कर रहे थे कि उन्हें ग्राम सेवा और ग्राम सुधार की धुन सवार हो गई। गाँव के एक स्कूल में जाकर कुछ दिनों तक उन्होंने पढ़ाया भी। वहाँ उन्हें बहुत आदर सम्मान मिला। कॉलेज के विद्यार्थी काल में सुभाषचन्द्र ने वेदांती रहस्यवादी के रूप में एक आध्यात्मिक गुरु की खोज में उत्तर भारत के सारे नगरों को छान मारा। साथ ही भ्रमण कर नयी-नयी जानकारियाँ हासिल की।

सुभाषचन्द्र को करुणा, दया और ममता अपने पिता से मिली थी। वे कॉलेज से घर आते जाते किसी भिखारिन को देखते तो उनका मन वेदना से तड़प उठता। सन् 1919 में सुभाषचन्द्र ने बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया।

इनके पिता जानकीनाथ बोस ने इनकी विलक्षण प्रतिभा और पढ़ाई के प्रति रुचि देखकर इन्हें इंग्लैण्ड भेजने का निर्णय किया। 25 अक्टूबर 1919 को सुभाषचन्द्र इंग्लैण्ड पहुँचे।

वहाँ उन्होंने कैंब्रिज में दाखिला लिया। इंग्लैण्ड में रहकर सुभाषचन्द्र ने 22 सितम्बर 1920 में भारतीय सिविल सेवा (I.C.S.) परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

सुभाषचन्द्र भारतीय संस्कृति, परम्परा तथा सभ्यता के उपासक और प्रशंसक थे। सुभाषचन्द्र देशबंधु चितरंजन दास के बड़े प्रशंसकों में से थे। कैंब्रिज निवास के दौरान सुभाष बाबू ने कॉलेज शिक्षण कार्य तथा समाचार पत्रों में निबन्ध लेखन का कार्य कर अपना इरादा प्रकट कर दिया। अतः 22 अप्रैल सन् 1922 को सुभाष बाबू ने आई.सी.एस. के पद से इस्तीफा दे दिया। भारतीय सिविल सेवा से त्याग पत्र देने वाले वे पहले भारतीय थे। अपना त्याग पत्र देने के बाद सुभाष बाबू कूद पड़े थे राजनीति में; कभी न निकलने के लिए। सुभाषचन्द्र बोस अत्यंत गम्भीर व उग्र तथा विद्रोही विचारधारा के सच्चे देशभक्त थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बने।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सुभाषबाबू 16 जनवरी, 1941 को भारत से बाहर चले गए। जर्मनी में हिटलर से मुलाकात कर सिंगापुर चले गए। जापान में बन्दी बनाए गए भारतीयों को उन्होंने मुक्त करवाया और उन्हीं के सहयोग से 'आजाद हिन्द फौज' की स्थापना की। 23 अक्टूबर 1943 को अंतरिम सरकार के मंत्रिमण्डल की बैठक में ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का फैसला किया। इस निर्णय के बाद 'आजाद हिन्द फौज' ने भारत को आजाद कराने के लिए प्रण किया। नेताजी ने सैनिकों को आह्वान किया-''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

इसके साथ ही नेताजी ने जब 'दिल्ली चलो' का वीरतापूर्ण उद्घोष किया तो आजाद हिन्द फौज के सैनिक पूर्वी सीमान्त प्रान्त पर पहुँच गए। 1944 में जब जापान का रंगून (बर्मा) पर कब्जा हो गया तो आजाद हिन्द फौज का दफ्तर भी सिंगापुर से रंगून चला गया। आजाद हिन्द फौज का भाग्य भी जापान के साथ जुड़ा हुआ था। जब तक जापान जीतता रहा, आजाद हिन्द फौज भी आगे बढ़ती रही। 23 अप्रैल, 1945 को जापान को रंगून छोड़ना पड़ा। उसके साथ ही आजाद हिन्द फौज के 50,000 सैनिकों में अधिकांश सैनिक खाद्यान्न की कमी के कारण मारे गए। 1945 तक अधिकतर सैनिक अंग्रेजों की पकड़ में आ गए जिससे आजाद हिन्द सेना असफल हो गई।

आजाद हिन्द सेना की सैनिक विफलता के बाद सुभाषचन्द्र बोस बर्मा को छोड़कर सिंगापुर चले गए। 18 अगस्त, 1945 को नेताजी सुभाष कुछ जापानी अफसरों के साथ टोकियो के लिए रवाना हुए। कहा जाता है कि लगभग दो बजे ताइवान के क्षेत्र में उनके हवाई जहाज में आग लग गई और वह भयानक विस्फोट के साथ गिर पड़ा। जापानी सरकार की विज्ञप्ति के अनुसार उसी रात 8-9 बजे के बीच नेताजी का देहान्त हो गया। किन्तु भारतीय जनमानस आज भी उनके निधन को स्वीकार नहीं कर पाया है।

क्रांतिवीर सुभाष के प्रयासों से अंग्रेजी सरकार की नींव हिल उठी थी और उन्हें भारत छोड़ने का मन बनाना पड़ा। आज देश अंग्रेजों की दासता से मुक्त हो गया किन्तु वह भारती पुत्र न जाने कहाँ खो गया? उनके जन्म दिन पर माँ भारती के लिए किए गए उनके देश भक्ति के कार्यों को याद कर हम अपने आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं। ऐसे महान क्रांतिकारी, माँ भारती के पुत्र को शत-शत नमन्!

सेवानिवृत्त अध्यापक
1/131, हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमानगढ़ संगम
मो. 9414474636

जन्मदिवस

भारत रत्न : डॉ. भगवानदास

❒ विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

भारत को शिक्षित राष्ट्र बनाने वालों में एक प्रमुख नाम डॉ. भगवान दास का है। इनका जन्म 12 जनवरी 1869 में हुआ। भगवानदास ने भाषा, शिक्षा व संस्कृति के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के साथ स्वतंत्रता आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया था। भारत के सर्वमान्य नेता लालबहादुर शास्त्री व सर्वपल्ली राधाकृष्णन् विद्यार्थी जीवन में डॉ. भगवानदास से अत्यंत प्रभावित थे। सबसे बड़ी बात यह है कि उनका व्यक्तिगत जीवन इतना आदर्श रहा है कि प्रत्येक भारतवासी आज भी उनसे प्रेरणा ले सकता है।

अत्यंत मेधावी बालक : भगवानदास का जन्म उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहर वाराणसी में अति प्रतिष्ठित एवं धनी व्यापारिक परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम साह माधवदास था। साह माधवदास के परिवार के लोग कुशल व्यापारी थे। धनी होने पर भी इनका परिवार भारतीय संस्कृति व जीवन मूल्यों में विश्वास करता था। इस कारण उनकी प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी में ही हुई। मैकालयी शिक्षा व्यवस्था लागू होने के कारण उस समय वाराणसी में अंग्रेजी भाषा व अंग्रेजी संस्कृति का बहुत प्रसार हो चुका था। भगवानदास ने अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी, अरबी, उर्दू, संस्कृत व फारसी भाषा का भी अध्ययन किया। अध्ययन की गहराई का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने 12 वर्ष की आयु में ही हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। शेख सादी की बोस्तां व गुलिस्ता नामक पुस्तकें बालक भगवानदास को बहुत प्रिय थी। स्नातक स्तर तक का अध्ययन पूर्ण करने के बाद कोलकाता से 18 वर्ष की आयु में पाश्चात्य दर्शन में अधिस्नातक उपाधि प्राप्त की। मेधावी होने के कारण अध्ययन पूर्ण होते ही भगवानदास को डिप्टी कलेक्टर के पद पर नियुक्ति मिल गई। उनका मन नौकरी करने का नहीं था। पिता की बात रखने के लिए नौकरी स्वीकार कर ली मगर पिता की मृत्यु के बाद सरकारी पद त्याग दिया।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश : सरकारी पद से मुक्त होते ही भगवानदास शिक्षा के प्रसार व स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ गए। उनकी रुचि राजनीति से अधिक देश के सामाजिक जीवन में थी। अंग्रेजी माध्यम से हो रही अंग्रेजी सोच वाली शिक्षा के प्रसार से भारत की भाषा, सभ्यता व संस्कृति तेजी से नष्ट होने लगी थी। वे इस अवनति को रोकने का उपाय खोजने में लगे थे; तभी उनका परिचय भारत सेविका एनीबेसेंट से हुआ। एनीबेसेंट का विचार था कि भारतीय भाषा में भारतीय मूल्यों की शिक्षा व्यवस्था करके ही भारतीय संस्कृति को बचाया जा सकता है। डॉ. भगवानदास ने अपने साधनों का उपयोग कर वाराणसी में सेन्ट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना करवाने में योगदान दिया। इस प्रयास ने पंडित मदनमोहन मालवीय को विश्वविद्यालय खोलने को प्रेरित किया। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रारम्भ सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में हुआ था। बाद में डॉ. भगवानदास ने काशी विद्यापीठ की स्थापना में पूर्ण सहयोग दिया तथा विद्यापीठ के प्रथम कुलपति का दायित्व भी स्वीकार किया। यह विश्वविद्यालय महात्मा गाँधी के स्वदेशी के विचारों से प्रभावित होकर खोला गया था। इसका सम्पूर्ण संचालन राष्ट्रवादी भारतीयों के पास था। अंग्रेजों से मान्यता व आर्थिक मदद नहीं ली गई। धन की व्यवस्था उद्योगपतियों द्वारा की जाती थी। आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. सम्पूर्णानंद, बाबू श्री प्रकाश आदि ने यहाँ शिक्षण कार्य किया। काशी विद्यापीठ स्वतंत्रता आंदोलन से पूरी तरह जुड़ा रहा। वर्तमान में इसे महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के नाम से जाना जाता है।

कुलपति जैसा व्यस्तता भरा दायित्व संभालने के बाद भी उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से मुँह नहीं मोड़ा। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण उनको जेल भेज दिया गया। महात्मा गाँधी से इनके घनिष्ठ सम्बन्ध बन गए।

स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति : राजनीति में प्रवेश करते ही अधिकांश नेता व्यस्तता का बहाना बना सामाजिक सरोकारों से मुँह मोड़ने लगते है। उन्होंने ऐसा नहीं किया। सभी व्यस्तताओं के चलते हुए भी वे हिन्दी के विकास में लगे रहे। हिन्दी सम्मेलन के अध्यक्ष पद का दायित्व ग्रहण कर पूर्ण शक्ति से कार्य करते रहे। इनके कार्यों को रेखांकित करने के लिए अनेक विश्वविद्यालयों ने भगवानदास को डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित किया।

सार्वजनिक जीवन व राजनीति में सेवानिवृत्ति की कोई आयु तय नहीं है। ऐसे में यह जानकर सुखद आश्चर्य होता है कि उन्होंने अपने जीवन में स्वयं ही इस आयु सीमा को लागू किया था। आयु सीमा रेखा के समीप पहुँचकर डॉ. भगवानदास ने राजनीति से दूरी बनाना प्रारम्भ कर दिया था। देश स्वतंत्र होने पर डॉ. भगवानदास से सरकार में महत्त्वपूर्ण पद संभालने का अनुरोध किया गया मगर उन्होंने विनयपूर्वक अस्वीकार कर दिया।

अध्ययन व लेखन : डॉ. भगवानदास की रुचि दर्शन व धर्मशास्त्र के अध्ययन में थी। उनका अध्ययन बहुत गहन व विस्तृत था। इसी कारण उन्होंने भारतीय दृष्टिकोण 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करवाया। परम्परागत ज्ञान के प्रशंसक होने के बावजूद भी डॉ. भगवानदास रूढ़िवादी नहीं थे। विदेश जाने पर धर्म नष्ट हो जाता है जैसी रूढ़ियों का उन्होंने पुरजोर खण्डन किया। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द की परम्परा का निर्वाह करते हुए विश्व दर्शन व धर्म का अध्ययन कर उसे वर्तमान समय के अनुसार नया स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया था। हिन्दी संस्कृत भाषा में 30 से भी अधिक पुस्तकों पर लेखन किया है। जीवन, मृत्यु, हर्ष, विषाद जैसी जीवन की जटिलताओं को समझाना डॉ. भगवानदास के लेखन का प्रमुख ध्येय रहा है। उनका मानना था कि बड़े के प्रति श्रद्धा या भय होता है, बराबर के प्रति स्नेह तथा क्रोध होता है और छोटे के प्रति दया अथवा घृणा होती है। ये ही छह आवेग अतिरंजित होने अथवा अनुपयुक्त विषयों के साथ संलग्न होने पर मनोविकार बन जाते हैं। इसी से अनेक प्रकार के उन्माद उत्पन्न होते हैं। वे मानते थे कि गुणों के अनुसार मनुष्यों के चार वर्ग पाए जाते हैं। जीवन में चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास तथा मनुष्य के चार पुरुषार्थों, धर्म, अर्थ,

काम और मोक्ष या ब्रह्मानंद में डॉ. भगवानदास की पूर्ण आस्था थी। वे मानते थे कि मनुष्य चार ऋणों के साथ उत्पन्न होता है। चार आश्रमों को जीते हुए मनुष्य चार ऋणों का भुगतान करता है।

डॉ. भगवानदास ने तटस्थ रूप से धर्मों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया है। उनके मत से सभी धर्मों के उसूल एक हैं। सभी धर्मों में यह माना गया है कि परमात्मा सबके हृदय में आत्मा के रूप से मौजूद है। सभी धर्मों में तीन अंग ज्ञान, भक्ति और कर्म हैं। सभी धर्म ईश्वर को निराकार मानते हैं फिर भी मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि के नाम से उसके लिए मकान बनाते हैं। उनके अनुसार धार्मिक स्थान बनाने की कमी सभी धर्मों में समान रूप से पाई जाती है। उनका लेखन धर्म की व्याख्या करने वाला रहा है। वे मानते हैं कि प्राचीन ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन से वर्तमान की समस्याओं का हल निकाल सकते हैं। डॉ. भगवानदास की पुस्तकें आज के संदर्भ में अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

उनके पास धन व सम्मान की कोई कमी नहीं थी फिर भी उनका जीवन अत्यन्त साधारण व सरल था। डॉ. भगवानदास भारत की ऋषि परम्परा के सच्चे अनुयायी थे। गृहस्थ होकर भी संन्यासी का जीवन जीते रहे थे। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने आग्रहपूर्वक उन्हें 'भारत रत्न' से अलंकृत किया था। डॉ. भगवानदास जैसे कर्मवीर के लिए पुरस्कार व सम्मान का कोई महत्त्व नहीं था। कहा जाता है कि 'भारत रत्न' पुरस्कार देने से डॉ. भगवानदास के साथ ही 'भारत रत्न' पुरस्कार का सम्मान भी अवश्य बढ़ा है। सन् 18 सितम्बर, 1958 के दिन डॉ. भगवानदास अपने महान कार्यों की स्मृति शेष छोड़कर इस संसार से विदा हुए। भारत सरकार ने उनके नाम का डाक टिकट भी जारी किया है। किसी सड़क, किसी उपनगर या छात्रावास का नाम डॉ. भगवानदास के नाम पर रखना ही पर्याप्त नहीं है, डॉ. भगवानदास के व्यक्तित्व के अनुकरण की प्रेरणा देना भी आवश्यक है।

2, तिलक नगर, पाली, (राजस्थान)
मो. 9829113431

हम सभी अपने जीवन में एक चीज तो निश्चित रूप से चाहते हैं वह है सफलता।

शिक्षक : एक मूर्तिकार

❐ **डॉ.अमित कुमार दवे**

शिक्षक शब्द को दर्शन व भाषायी व्याकरण में अनेक व्याख्याओं से सुशोभित किया है। शिक्षक/अध्यापक की पदवीं को समाज में श्रेष्ठ स्थान पर आरूढ़ किया गया है। शिक्षक का सामान्य अर्थ शिक्षा देने वाला। अध्यापक यह दो शब्दों अधि + आपक से मिलकर बना है अधि = अधिक अथवा ऊपर एवं आपक = देने वाला, तो अध्यापक का अर्थ हुआ कि छात्र में अथवा सामाज में जो कुछ भी विद्यमान है उससे अधिक देने वाला अध्यापक होता है। साथ ही विविध पक्षों पर विवेकी दृष्टि से विमर्शोपरान्त नव चिन्तन से युक्त विकासात्मक मत देने वाला होता है।

शिक्षक विमर्श में यदि शिक्षक को एक मूर्तिकार की संज्ञा से युक्त करें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि समाज व राष्ट्र के विकास में उसकी भूमिका एक कुशल मूर्तिकार के रूप में है।

शिक्षक एक मूर्तिकार कैसे?

एक बेडौल चट्टान का टुकड़ा पत्थर के रूप में यहाँ-वहाँ पड़ा रहता है, ठोकरें खाता रहता है। किन्तु वही पत्थर जब एक कुशल कारीगर अथवा मूर्तिकार के हाथों में आता है और उसकी परिकल्पना के आधार पर जब वह बेडौल पत्थर एक सुडौल मूर्ति के रूप में परिणत किया जाता है तो उस मूर्ति रूप पत्थर के प्रति जग श्रद्धावनत् होता है। मूर्तिकार अथवा कारीगर की परिकल्पना के परिणाम स्वरूप जग का पत्थर विशिष्ट स्थान पा लोकपूज्य बन जाता है। बेडौल चट्टान के टुकड़े को लोकपूज्य व लोकप्रिय बनाने का श्रेय उस मूर्तिकार अथवा कारीगर को जाता है जिसने उसे तराशा, अपनी कुशलता व चिन्तन के आधार पर उसे इस स्वरूप तक लाया।

उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में एक शिक्षक की मूर्तिकार-सी भूमिका होती है। शिक्षक के पास यहाँ-वहाँ से अनगढ़ पत्थर रूपी शिष्य वैयक्तिक व सामाजिक स्वरूप पाने हेतु आते हैं। जब बालक शिक्षा हेतु शिक्षा के कारखाने विद्यालय में प्रवेश करता है तब उसका आकार सामाजिक, वैयक्तिक, नैतिक, विवेक स्वरूप बेडौल पत्थर-सा होता है। वह बालक विद्यालय रूपी कारखाने में मूर्तिकार रूपी शिक्षक के हाथों में आता है। मूर्तिकार रूपी शिक्षक बालक की क्षमताओं, रुचियों, इच्छाओं व व्यवहारों के आधार पर अनुशासन की हथौड़ी से शिक्षण विधियों, मूल्यों, संस्कारों व आवश्यक सूचनाओं-सी छैनी के माध्यम से हल्का-हल्का-सा प्रहार करता हुआ एक निश्चित आकार प्रदान करता है। बेडौल पत्थर रूप बालक मूर्तिकार शिक्षक की कल्पना व कुशलता के अनुरूप ढलता हुआ एक निश्चित सामाजिक, राष्ट्रीय व्यक्तित्व के रूप में रूपान्तरित किया जाता है; जिसे समाज व राष्ट्र स्वीकार करते हैं। साथ ही उसकी योग्यताओं व व्यवहारों के प्रति श्रद्धावनत् हो राष्ट्रविकास हेतु अंगीकार करते हैं।

अतः यह निश्चित है कि एक शिक्षक मूर्तिकारवत् समाज से आए बेडौल स्वरूपों को उसकी योग्यता, आकांक्षा, व्यवहार व रुचियों के आधार पर अपनी कल्पनाशीलता व चिन्तन के आधार पर लोकमान्य, राष्ट्र स्वीकार्य स्वरूप देने में समर्थ होता है। शिक्षक द्वारा बालक के एक स्वरूप का निर्धारण व जनमान्य बनाने का व्यवहार उसे एक कुशल मूर्तिकार की श्रेणी में रखता है।

अन्त में शिक्षा, समाज, राष्ट्र व विश्व भी शिक्षक से यह अपेक्षा करता है कि वह अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, इच्छाओं, विवेकी दृष्टि व परिकल्पनाओं के आधार पर एक कुशल मूर्तिकार अथवा कारीगर के रूप में अपने आपको प्रस्तुत करे व अपनी भूमिका का समीचीन निर्वहन कर शिक्षा, समाज, राष्ट्र व विश्व को एक निश्चित स्वरूप में ढालने हेतु सतत् प्रयासरत रहे एवं अपनी कुशलताओं की हथौड़ी-छैनी नित्य निर्माण हेतु मूर्तिकारवत् चलाया करे।

-सहायक आचार्य
शिक्षा संकाय (लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय) (सी.टी.ई.),
जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ,
वि.वि. डबोक, उदयपुर
मो. 9414567296

कविता

रूप तेरा निराकार नहीं

❐ सुश्री अवन्तिका तूनवाल

सच कहती हूँ माँ तुमसे, सुन्दर कोई अवतार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

तपती दुपहरी में माँ तूने, हरे पेड़ सी छाँव दी।
दुःख भँवर में फँसी हुई को, बीच समन्दर नाव दी।।

जख्मों पर चन्दन बन पसरी, तुमसे बड़ी रसधार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

गूँगे सपनों को माँ तूने, पंख लगा पहिचान दी।
ठोकर खाकर गिरे हुए के, सहारे की लकड़ी थाम दी।।

खुशियों की नींव लगा दी तूने, तुझसे प्यारा उपहार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल,रूप तेरा निराकार नहीं।।

पतझड़ से बेरंग हुए, हर पत्ते को पहिचान दी।
काँटो के पथ पर फूल बिछाकर, सबको खुशियाँ दान दी।।

सूना है वो उपवन जिसमें, तेरी कली की कतार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल,रूप तेरा निराकार नहीं।।

छोड़ कर तेरा आँगन माँ, क्यूँ मुझको जाना पड़ा।
क्यूँ नाजों से पली कली का, अजनबी से पाला पड़ा।।

जिन्दगी बलिदान माँगती, मिली सीख हरबार यही।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

पढ़ लिए सबके चेहरे, ममता तुम्हारी आस में।
झूठे मिले हैं रिश्ते नाते, जीवन मिले तेरी प्यास में।।

न मिला है न मिलेगा, तुमसे सस्ता प्यार कहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

कैसे करूँ मैं बातें तुमसे, तू वहाँ रहती मैं यहाँ।
ढूँढ ना पाऊँ तेरी सूरत, हर जगह क्यूँ यहाँ वहाँ।।

एक बूँद से मोती बनना, तुझ बिन माँ साकार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

जीना मुश्किल तेरे बिना माँ, मरना भी आसान कहाँ?
कोशिश थी छूने की आसमाँ, पर बिन तेरे पहिचान कहाँ?

तूफानों से मुझे बचाया, तुमसे बड़ी पतवार नहीं।
भाव भरा है तेरा आँचल, रूप तेरा निराकार नहीं।।

व्याख्याता
रा.आ.उ.मा.विद्यालय. शेखावास. भीम, जिला- राजसमन्द (राज.)
मो. नं. 9001368022

मासिक गीत

युग की यही पुकार

**युग की यही पुकार, वसन्ती चोला रंग डालो।
त्याग तितिक्षा का रंग है यह, सुनो जगत वालों।**

वसन्ती चोला रंग डालो।

**इस चोले को पहन भगत सिंह, झूला फाँसी पर।
इस चोले का रंग निराला था, वाणी झाँसी पर।
त्याग और बलिदान न भूलो, ऊँचे पद वालों।।1।।**

**वासन्ती चोले को, भामाशाह ने अपनाया।
नरसिंह का चोला तो सबसे अद्भुत रंग लाया।
इस चोले से बढ़े द्रव्य की, शोभा धन वालों।।2।।**

**इसे पहन कर हरिश्चन्द्र ने, सत्य नहीं छोड़ा।
चली अग्नि पथ पर तारा ने, पहना यह चोला।
मानवीय गरिमा न भुलाओ, भटके मन वालों।।3।।**

**परमहंस के इस चोले को, जिसने अपनाया।
संस्कृति के झण्डे को जिसने, नभ तक फहराया।
अपने गौरव को पहिचानो, युवा शक्ति वालों।।4।।**

**भूल गए हम अपना पौरुष, गए अनय से हार।
हुए संकुचित हृदय हमारे, बन बैठे अनुदार।
लेकिन अब तो दिशा बदलकर, बढ़ो लगन वालों।।5।।**

साभार :
'युग शिल्पी संगीत'
शान्तिकुंज, हरिद्वार

पर्व

सूर्य उपासना का पर्व : मकर संक्रान्ति

❒ महावीर सिंह राठौड़

मकर संक्रान्ति भारत का ऐसा महत्त्वपूर्ण धार्मिक व राष्ट्रीय पर्व है जो हमारी संस्कृति को मजबूती प्रदान करता है। मकर संक्रान्ति सहस्त्राब्दियों से अनेक सांस्कृतिक धाराओं का संगम स्थल बना हुआ है। मूलतः यह सूर्योपासना का पर्व है जिसे ऋतु पर्व भी कहते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में भी इस त्योहार की लोकप्रियता और प्रभावशीलता उसी रूप में विद्यमान है जैसा यह आदिकाल में मनाया जाता रहा है।

'संक्रान्ति' शब्द का शाब्दिक अर्थ है सम्यक् क्रान्ति (सहज परिवर्तन) खगोलीय दृष्टि से सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में गमन करना। अतएव जिस राशि में सूर्य प्रवेश करता है उसे उसी संक्रान्ति से अलंकृत किया जाता है। जब सूर्य धनु राशि से होकर मकर राशि में प्रवेश करता है तो मकर संक्रान्ति कहलाती है। मकर बारह राशियों में से एक है। 14 जनवरी को सूर्य अपनी कक्षा में परिवर्तन कर दक्षिणायन से उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करता है। भारतीय ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में हुए परिवर्तन को अन्धकार से प्रकाश की ओर परिवर्तन माना जाता है।

डॉ. पाण्डुरंग लिखते है कि विषुवतों के आवागमन के कारण ही मकर संक्रान्ति चौदह जनवरी को पड़ती है। जब खेतों में फसल पकने को तैयार हो, शरीर शीत के कारण विवश-संकुचित बना हुआ हो तब पौष माह के अन्तिम दिन शीत से मुक्ति पाने के लिए ऊर्जा का आह्वान ही इस तिथि संक्रान्ति का अवलम्ब बनता है। सूर्य के उत्तरायण होने की बेला का दिन मकर संक्रान्ति है इस दिन पुण्यफल विशेष माना जाता है। इस दिन सूर्य की उपासना की जाती है, शक्तिदाता और प्रकाशीय तीव्रता का स्रोत होने से सहृदय करता है। पुराणों में इसे 'जीवन' नाम दिया गया है। यह आरोग्य अधिष्ठाता है। आरोग्य के देवता के साथ ही निर्धनता निवारक भी है। ऋग्वेद में स्तुति, आदित्य मंत्रों और गायत्री मंत्रों में भी सूर्य आराधना का बहुत महत्त्व माना गया है। मकर संक्रान्ति का महत्त्व भारतीय जीवन में सर्वाधिक रूप से है। विभिन्न रीति-रिवाजों और परम्पराओं के अनुसार देश के प्रत्येक प्रान्त में मनाया जाता है। दान-पुण्य व्रत-पूजा, यज्ञ-हवन और मनोरंजन अर्चना के रूप में पूरे देश को अनुरंजित करता है।

महाभारत का एक लोकप्रिय आख्यान है कि युद्ध में मृत्यु की सन्निकट अवस्था प्राप्त होते हुए भी भीष्म पितामह ने प्राण त्याग करने के लिये सूर्य भगवान के उत्तरायण में आने तक शर-शैया पर प्रतीक्षा की और माघ मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में मध्याह्न के समय ध्यान मग्न होकर महाप्रयाण किया।

शुक्ल पक्षस्य चाष्टाम्यां माघ मास्यपार्थिव,
प्राजापत्ये च नक्षत्रे मध्यं प्राप्ते दिवाकरे।
निवृतमात्रे त्वयन उत्तरे वै दिवाकरे,
समावेशयदात्मनभात्मन्येव समाहितः।।

यही नहीं अपितु दिव्य ऋषियों द्वारा यह शंका किए जाने पर कि क्या युद्ध में घायल भीष्म दक्षिणायन में मृत्यु स्वीकार करेंगे? भीष्म पितामह ने दृढ़तापूर्वक कहा कि मैं सूर्य के उत्तरायण होने पर ही अपने लोक की यात्रा करूँगा। कहा गया है कि भीष्म पितामह मूलतः द्यौ नामक वसु देवता थे तथा शापवश इस मृत्यु लोक में आए थे। उन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। दक्षिणायन की अवधि में देवलोक की रात्रि होती है, द्वार बन्द रहते हैं (कहा भी जाता है कि देवशयन कर रहे हैं) अतः भीष्म पितामह ने वहाँ बाहर द्वार पर प्रतीक्षा करने की अपेक्षा यहाँ श्रीकृष्ण के सान्निध्य में सत्संग करना उचित समझा और सूर्य के उत्तरायण होने तक पृथ्वी लोक पर ही प्रतीक्षा की। शास्त्रों में लिखा गया है कि जिस मार्ग में प्रकाश स्वरूप अग्नि, दिन, शुक्ल पक्ष और उत्तरायण का अधिपति देवता निवास करता है, शरीर छोड़कर उस मार्ग से गए हुए ब्रह्मज्ञानी प्रथमतः ब्रह्मलोक में पहुँचकर ब्रह्मा जी के सान्निध्य में रहते हुए परमधाम को प्राप्त होते हैं।

वैसे भी व्यवहार में यह प्रसिद्ध है कि मकर संक्रान्ति पर शत्रु दमन करने के लिए सैन्य संचार करना चाहिए। पुराणों के अनुसार महाराजा सगर के 60 हजार पुत्र जो कि कपिल देव के क्रोध के कारण भस्मीभूत हुए पड़े थे। इनके पौत्र भगीरथ ने वहाँ जाकर कपिल देव को प्रसन्न किया और उनके उद्धार का मार्ग पूछा तो उन्होंने कहा कि गंगा के द्वारा ही उनका उद्धार सम्भव है। गंगा शंकर भगवान के जटा जूट में बद्ध घूम रही थी। तपस्या करके भगीरथ ने गंगा को मार्ग छोड़ने की प्रार्थना की तो वहाँ से स्रोत निकला जो आगे सात धाराओं में विभाजित हुआ। तब भगीरथ ने गंगा से प्रार्थना की। भगीरथ आगे चले, गंगा भगीरथ के पीछे-पीछे चली। कपिल आश्रम में 60 हजार सगर के पुत्रों की भस्मी को अपने साथ लेकर पूर्व के समुद्र में सम्मिलित हो गयी तथा उनका उद्धार किया। यह गंगा सागर संगम कपिल के आश्रम में मकर संक्रान्ति पर ही सारे देश में महापर्व के रूप में मनाया जाता है। हजारों नहीं लाखों की संख्या में श्रद्धालु वहाँ जाकर स्नान करते हैं। मकर संक्रान्ति का पर्व सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी नाम से मनाया जाता है। कहीं तिलों का दान, कहीं गुड़ का प्रयोग, कहीं मूँग-अरहर से अर्चना, कहीं फल अन्न से भोग तो कहीं हल्दी रंगोली भाटे के चौक मांडणे, तो कहीं फूलों रंगों की मनभावन रंगोली से सूर्य देवता की पूजा की जाती है।

राजस्थान तो वैसे ही सांस्कृतिक त्योहारों की जन्मभूमि है। यहाँ मकर संक्रान्ति पर्व उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। यहाँ तीर्थ स्थान पर जाकर स्नान करने की महत्ता है। पुष्कर, गलता आदि सरोवर में सूर्योदय से पहले ही हजारों श्रद्धालु स्नान करने पहुँच जाते हैं। स्नान के पश्चात् दान किया जाता है। इस दिन लुभावनी अल्पनाएँ, गेरु, खड़िया, हिरमिच आदि रंगों के मांडने मांडे जाते हैं। मूँग दाल, चावल मिलाकर खिचड़ी, तिल के लड्डू, बाजरा, घी, गुड़, नमक आदि भोज्य पदार्थ एवं ऊनी कम्बल, रजाई, वस्त्रादि का दान किया जाता है। कुछ व्यक्ति मकर संक्रान्ति पर किसी विशेष कार्य हेतु अनुष्ठान भी करते हैं तथा वर्ष पर्यन्त अगली संक्रान्ति तक निर्वाह भी करते हैं। राजस्थान में इस दिन खूब पतंगबाजी करते हैं।

इस दिन असंख्य पतंगे आकाश में दिखाई देती है। पंतग सूर्य का पर्यायवाची शब्द है। राजस्थान में मीठे गुड़ के चावल व तिल की बनी हुई मिठाइयाँ या लड्डू बनाए जाते हैं। ये पदार्थ शीत ऋतु में हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

मकर संक्रान्ति पर तिल व सरसों का दान का महत्त्व 'शिव रहस्य' में भी बताया गया है। 'ब्रह्माण्ड पुराण' में लिखा गया है कि इस शुभ बेला में दधिमंथन कर दान किया जाता था जिससे उन्हें श्रीकृष्ण जैसा पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। इसी विधान का अनुसरण करतें हुए गुरु द्रोणाचार्य की पत्नी कृपि ने भी अश्वत्थामा जैसे पराक्रमी पुत्र को प्राप्त किया था। श्री कृष्ण द्वारा युधिष्ठिर को मकर संक्रान्ति के पुण्य अवसर पर ताम्बूल दान देने का वर्णन 'वायु पुराण' में किया गया है। इस अवसर पर पवित्र नदी या सरोवर में स्नान कर अन्नदान की परम्परा राजस्थान ही नहीं पूरे भारत में अत्यन्त प्राचीन है।

तमिलनाडू में मकर संक्रान्ति को पोंगल त्योहार मनाया जाता है। पोंगल का शाब्दिक अर्थ है 'उबालना'। इस दिन सूर्य, वरुण और वायु को अच्छी फसल प्राप्ति में सहायक होने का धन्यवाद अर्थात् अर्पण दिवस माना जाता है। यह उत्सव तीन दिनों तक मनाया जाता है। पहला दिन 'मोगी पोंगल' कहलाता है। इस दिन पारिवारिक उत्सव होते हैं। दूसरे दिन 'सूर्य पोंगल' कहा जाता है। इस दिन नये धान को कूटकर निकाला गया चावल, दूध, घी और गुड़ के साथ घड़े में उबाला जाता है। इस तरह जो खीर बनती है उसे सूर्य देवता को अर्पित किया जाता है। तीसरा दिन पशु पोंगल कहलाता है। इस दिन पशुओं को नहला धुला कर उनका शृंगार किया जाता है। उनकी पूजा की जाती है तथा स्वच्छ भोजन खिलाया जाता है। इससे किसान के जीवन में पशुओं की महत्ता को स्वीकार किया गया है।

पंजाब में इस दिन से नव संवत्सर प्रारम्भ होता है। इस दिन नये धान की खिचड़ी के साथ-साथ तिल के लड्डू व मूलियों का दान किया जाता है। मूली दान के पीछे यह भावना निहित होती है कि मूली अब पक चुकी है अतः मकर संक्रान्ति के दिन अन्तिम बार प्रयोग की जाती है। मान्यता है कि लोहड़ी के दिन अग्नि के सम्मुख माथा टेकते समय यदि कोई सच्चे मन से किसी बात की कामना करता है तो वह अवश्य पूरी होती है।

केरल में मकर संक्रान्ति पर्व को 'ओणम' पर्व के नाम से मनाते हैं। इस दिन केरलवासी प्रातः स्नान कर भगवान के मन्दिर में जाकर विशेष पूजा अर्चना करते हैं। घर पर विशेष पकवान बनाए जाते हैं तथा खूब हर्षोल्लास से यह पर्व मनाते हैं। जम्मू व कश्मीर में इस संक्रान्ति को सबसे बड़ी संक्रान्ति मानते हैं। इस दिन दान आवश्यक माना जाता है। इसको शिशिर संक्रान्ति भी कहते हैं। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अपने पितरों के नाम की मिट्टी से बनी अंगीठी, चावल, नमक व श्रद्धानुसार धन दान किया जाता है। गुजरात में मकर संक्रान्ति को 'उधरायण' पर्व के रूप में मनाते हैं क्योंकि इस दिन सूर्य उधरायण अर्थात् उत्तरायण में प्रवेश या गमन करता है। गुजरात में इस दिन पतंग उड़ाने का विशेष महत्त्व है। इस उत्सव को 'पतंग उत्सव' भी नाम दिया गया है। अहमदाबाद में विशेष पतंगबाजी होती है जिसे देखने के लिये कई देशी व विदेशी पर्यटक आते हैं। बंगाल में मकर संक्रान्ति के दिन प्रातः तीर्थ स्थानों, नदी तटों तथा सरोवरों में स्नान कर पूजा अर्चना की जाती है तथा घरों में विशेष भोजन बनाया जाता है।

महाराष्ट्र में इस दिन सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। घर की नई नवेली दुल्हन पड़ौसी सुहागन स्त्रियों के साथ हल्दी व कुमकुम की रस्म पूरी करती हैं। सूर्य को अर्घ्य देकर घर की सभी महिलाएँ सभी परिवार के छोटे सदस्यों को तिल व चावल देती है जिसे तिलहन भरना कहते हैं। बिहार में मकर संक्रान्ति को विशेष उत्साह से मनाते हैं। इस दिन विवाहोपरान्त आने वाले प्रथम मकर संक्रान्ति के पुत्री के ससुराल से पीहर पक्ष में विविध सामग्री भेजी जाती है तथा दानस्वरूप ब्राह्मणों को तिल के लड्डू, घी, पापड़, चावल आदि दिए जाते हैं। अतः इसे मौगली बिहु भी कहते हैं। मध्य प्रदेश में यह दिन 'खिचड़ी संक्रान्ति' के रूप में मनाया जाता है। खिचड़ी, तिल के लड्डू, गुड़ आदि का दान किया जाता है। इस दिन गौ-धन के तिलक लगाकर उन्हें चिवड़ा, गुड़ खिलाया जाता है।

उड़ीसा में मकर संक्रान्ति 'पाना संक्रान्ति' के नाम से मनायी जाती है। इस दिवस को सौर महीने का प्रथम दिन मनाते हैं। इस दिन एक छोटे से बर्तन के पेंदे में छेद करके उसे मीठे पेय पदार्थ 'पाना' से भरकर उसे तुलसी के पौधे पर लटका दिया जाता है। बर्तन से पेय पदार्थ का गिरना इस बात का सूचक है कि अब वर्षा होगी। उड़ीसा में संक्रान्ति इस बात का द्योतक है कि अब शीघ्र ही वर्षाऋतु प्रारम्भ होगी तथा कृषि चक्र प्रारम्भ होगा। सिन्धी समाज के लोग भी मकर संक्रान्ति के एक दिन पूर्व लोहड़ी मनाते हैं तथा मकर संक्रान्ति के दिन मूली, चावल, मूंग, तिल के लड्डू, कपड़े आदि दान में देते हैं।

प्रत्येक प्रान्त में नाम कुछ भी हो लेकिन एक ही प्रकार का उल्लास व हर्ष सभी लोगों में मिलता है। मकर संक्रान्ति का पर्व हमारी भारतीय संस्कृति व परम्परा का सूचक है जो मिल-जुल कर रहने तथा मिल बाँटकर कर खाने का भाव लिए हुए है। 'मत्स्य पुराण' के अनुसार मकर संक्रान्ति के दिन शुद्ध व ताजे जल से स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर शुद्ध विचारों के साथ सूर्य की उपासना करनी चाहिए। इस दिन एक बार भोजन करना चाहिये तथा श्रद्धानुसार चावल, तिल, गुड़, अनाज एवं तिल से बनी विभिन्न वस्तुएँ, ऊनी कम्बल या कपड़े आदि दान में देना चाहिए। गायों को चारा व भिखारियों को खाना खिलाना इस दिन पुण्य का कार्य माना जाता है। मकर संक्रान्ति के दिन या उस महीने में दान पुण्य करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। मकर संक्रान्ति पर महिलाओं की विशेष भूमिका होती है। महिलाएँ ही दान पुण्य अधिक करती है पूजा अर्चना करती है। महिलाएँ इसे सुहाग का प्रतीक पर्व भी मानकर अपने लम्बे सुहाग की कामना करती है।

मकर संक्रान्ति सम्पूर्ण भारतवर्ष में नए वर्ष के उपलक्ष्य में अलग-अलग नाम व प्रकार से मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति पर्व सहज रूप में सबको एक करके नई ऊर्जा व उल्लास का संचार कर अपना आध्यात्मिक महत्त्व भी स्थापित कर देता है। शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पुष्टि प्रदान करने वाला यह पर्व वैदिक व पौराणिक काल से ही मनाते आ रहे हैं। संक्रान्ति पर्व किसी जाति धर्म का नहीं, अपितु संसार के हर जीवमात्र के लिए विशिष्ट पर्व है क्योंकि सूर्य सभी धर्मों, सम्प्रदायों एवं समाजों के लिए वंदनीय है। अतः यह सर्वसमाज का पर्व सभी के लिए मंगल फलदाता है।

प्रधानाचार्य
20 सूर्या नगरी, रोड नं. 1,
रीजनल कॉलेज के सामने,
पुष्कर रोड, अजमेर-305004
मो: 9414014257

विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष के विविध रूप

❒ आकांक्षा यादव

मानव इतिहास की सबसे पुरानी पर्व परम्पराओं में से एक नववर्ष है। नववर्ष के आरम्भ का स्वागत करने की मानव प्रवृत्ति उस आनन्द की अनुभूति से जुडी हुई है जो बारिश की पहली फुहार के स्पर्श पर, प्रथम पल्लव के जन्म पर, नव प्रभात के स्वागतार्थ पक्षी के प्रथम गान पर या फिर हिम शैल से जन्मी नन्हीं जलधारा की संगीत तरंगों से प्रस्फुटित होती है। विभिन्न विश्व संस्कृतियाँ इसे अपनी-अपनी कैलेण्डर प्रणाली के अनुसार मनाती हैं। वस्तुतः मानवीय सभ्यता के आरम्भ से ही मनुष्य ऐसे क्षणों की खोज करता रहा है, जहाँ वह सभी दुःख, कष्ट व जीवन के तनाव को भूल सके। इसी के अनुरूप क्षितिज पर उत्सवों और त्योहारों की बहुरंगी झांकियाँ चलती रहती हैं।

इतिहास के गर्त में झांकें तो प्राचीन बेबिलोनियन लोग अनुमानतः 4000 वर्ष पूर्व से ही नववर्ष मनाते रहे हैं, उस समय नव वर्ष का ये त्यौहार 21 मार्च को मनाया जाता था जो कि वसंत के आगमन की तिथि भी मानी जाती थी। प्राचीन रोमन कैलेण्डर में मात्र 10 माह होते थे और वर्ष का शुभारम्भ 1 मार्च से होता था। बहुत समय बाद 713 ई. पू. के करीब इसमें जनवरी तथा फरवरी माह जोड़े गए। सर्वप्रथम 153 ई.पू. में 1 जनवरी को वर्ष का शुभारम्भ माना गया एवं 45 ई.पू. में जब रोम के तानाशाह जूलियस सीजर द्वारा जूलियन कैलेण्डर का शुभारम्भ हुआ, तो यह सिलसिला बरकरार रहा। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला साल, यानि ईसा पूर्व 46 ई. को 445 दिनों का करना पड़ा था। 1 जनवरी को नववर्ष मनाने का चलन 1582 ई. के ग्रेगेरियन कैलेण्डर के आरम्भ के बाद ही बहुतायत में हुआ। दुनिया भर में प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेण्डर को पोप ग्रेगरी अष्टम ने 1582 में तैयार किया था। ग्रेगरी ने इसमें लीप ईयर का प्रावधान भी किया था। ईसाइयों का एक अन्य पंथ ईस्टर्न आर्थोडॉक्स चर्च रोमन कैलेण्डर को मानता है। इस कैलेण्डर के अनुसार नया साल 14 जनवरी को मनाया जाता है। यही वजह है कि आर्थोडॉक्स चर्च को मानने वाले देशों रूस, जार्जिया, येरुशलम और सर्बिया में नया

साल 14 जनवरी को मनाया जाता है।

आज विभिन्न विश्व संस्कृतियाँ नव वर्ष अपनी-अपनी कैलेण्डर प्रणाली के अनुसार मनाती है। हिब्रू मान्यताओं के अनुसार भगवान द्वारा विश्व को बनाने में सात दिन लगे थे। इस सात दिन के संधान के बाद नया वर्ष मनाया जाता है। यह दिन ग्रेगेरियन कैलेण्डर के मुताबिक 5 सितम्बर से 5 अक्टूबर के बीच आता है। इसी तरह इस्लाम के कैलेण्डर को हिजरी साल कहते हैं। इसका नव वर्ष मोहर्रम माह के पहले दिन होता है। इस्लामी कैलेण्डर एक पूर्णतया चन्द्र आधारित कैलेण्डर है, जिसके कारण इसके बारह मासों का चक्र 33 वर्षों में सौर कैलेण्डर को एक बार घूम लेता है। इसके कारण नव वर्ष प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेण्डर में अलग-अलग महीनों में है। चीन का भी कैलेण्डर चन्द्र गणना पर आधारित है। चीनी कैलेण्डर के अनुसार प्रथम मास का प्रथम चन्द्र दिवस नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। यह प्रायः 21 जनवरी 21 फरवरी के बीच है।

दुनिया भर में नव वर्ष मनाने का अपना-अपना अंदाज है। ब्रिटेन में लोग नए साल का स्वागत आतिथ्य भाव से करते हैं। मान्यता है कि वर्ष का पहला मेहमान उनके लिए ऐश्वर्य व सौभाग्य लेकर आता है। शर्त यह है कि यह मेहमान पुरुष होना चाहिए। उसके लिए तोहफा लाना अनिवार्य होता है। मेहमान मुख्यद्वार से प्रवेश करता है और अपने साथ पारंपरिक तौर पर रसोईघर का सामान, घर के मुखिया के लिए शराब या आग जलाने के लिए कोयला जैसे तोहफे लाता है। वह पीछे के दरवाजे से बाहर जाता है। तोहफे बगैर उसे घर में आने की इज़ाज़त नहीं होती।

डेनमार्क में लोग नए साल के दिन घर की पुरानी प्लेटों को अपने पड़ोसियों, रिश्तेदारों और दोस्तों के घरों के सामने तोड़ते हैं। इसे दोस्ती और आत्मीयता का प्रतीक माना जाता है। समझा जाता है कि जिस भी घर के सामने सबसे ज्यादा टूटी हुई प्लेटें होती हैं, वह सबसे अधिक प्रिय होता है। मध्य और दक्षिण अमेरिका में इस दिन यहाँ के लोग पीले रंग के कपड़े खरीदते हैं, जो सोने (धातु) का प्रतीक है। पुर्तगाल और स्पेन में लोग नए साल के मौके पर 12 अंगूर खाते हैं। उनका मानना है ये आगामी 12 महीनों में उनके लिए खुशहाली लाएँगे।

जर्मनी में लोग नये साल के स्वागत के लिए ठंडे पानी में पिघला हुआ सीसा डालते हैं। इससे बनने वाली आकृति भविष्य की जानकारी देती है। यानी अगर दिल का आकार बना तो शादी होगी। गोलाकार आकार बना तो साल सौभाग्यशाली रहने वाला है। इसके अलावा नए साल की पूर्व संध्या पर खाए गए भोजन का कुछ भाग आधी रात तक बचा कर रखा जाता है। मान्यता है कि इससे आने वाले साल में घर में पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री रहेगी। वहीं चिली में मध्यरात्रि के समय शैंपेन भरे गिलास में सोने की अंगूठी रखी जाती है, जो सौभाग्य का प्रतीक समझी जाती है। फिलीपींस में नए साल के दिन लोग पोलका डॉट्स (गोल बिन्दुओं) वाले कपड़े पहनते हैं और गोल आकृति का फल खाते हैं। इसे समृद्धि का प्रतीक समझा जाता है। प्यूर्टो रिको में नए साल के मौके पर दरवाजे या बालकनी से ठंडा पानी बाहर फेंका जाता है।

जापान में नए साल को ओसोगात्सु कहा जाता है। इस दिन सभी तरह का कारोबार बंद रहता है। बुरी ताकतों को दूर रखने के लिए इस दिन घर के मुख्यद्वार के ऊपर रस्सी बांधी जाती है। नए साल के आगमन के साथ ही जापानी जोर-जोर से हँसने लगते हैं। घड़ी में 12 बजने से पहले 108 घंटियाँ यह दिखाने के लिए बजाई जाती हैं कि इतनी परेशानियों का सफाया कर

दिया गया है। ऑस्ट्रेलिया में नए साल के दिन सार्वजनिक छुट्टी होती है। लोग 31 दिसम्बर की आधी रात से सीटियाँ, कार के हॉर्न और चर्च की घंटियाँ बजाना शुरू कर देते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में नए साल पर चर्च की घंटियाँ बजने के साथ ही लोग बंदूक से गोलियाँ चलाने लगते हैं।

भारत के भी विभिन्न हिस्सों में नववर्ष अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। भारत में नव वर्ष का शुभारम्भ वर्षा का संदेशा देते मेघ, सूर्य और चंद्र की चाल, पौराणिक गाथाओं और इन सबसे ऊपर खेतों में लहलहाती फसलों के पकने के आधार पर किया जाता है। इसे बदलते मौसमों का रंगमंच कहें या परम्पराओं का इन्द्रधनुष या फिर भाषाओं और परिधानों की रंग-बिरंगी माला, भारतीय संस्कृति ने दुनिया भर की विविधताओं को संजो रखा है। असम में नववर्ष बीहू के रूप में मनाया जाता है, केरल में पूरम विशु के रूप में, तमिलनाडु में पुत्थांडु के रूप में, आन्ध्र प्रदेश में उगादी के रूप में, महाराष्ट्र में गुड़ीपड़वा के रूप में तो बांग्ला नववर्ष का शुभारंभ वैशाख की प्रथम तिथि से होता है।

भारतीय संस्कृति में नववर्ष के आरम्भ की पुरानी परम्पराओं में से एक नव संवत्सर भी है। माना जाता है कि जगत की सृष्टि की घड़ी (समय) यही है। इस दिन भगवान ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना हुई तथा युगों में प्रथम सत्ययुग का प्रारंभ हुआ।

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्म ससर्ज प्रथमे अहनि।
शुक्ल पक्षे समग्रेतु तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् ब्रह्मापुराण के अनुसार ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना चैत्र मास के प्रथम दिन, प्रथम सूर्योदय होने पर की। इस तथ्य की पुष्टि सुप्रसिद्ध भास्कराचार्य रचित ग्रंथ 'सिद्धांत शिरोमणि' से भी होती है, जिसके श्लोक में उल्लेख है कि लंका नगर में सूर्योदय के क्षण के साथ ही, चैत्र मास, शुक्ल पक्ष के प्रथम दिवस से मास, वर्ष तथा युग आरंभ हुए। अतः नववर्ष का प्रारंभ इसी दिन से होता है और इस समय से ही नए विक्रम संवत्सर का भी आंरभ होता है, जब सूर्य भूमध्य रेखा को पार कर उत्तरायण होते हैं। इस समय से ऋतु परिवर्तन होनी शुरु हो जाती है। वातावरण समशीतोष्ण होने लगता है। ठंडक के कारण जो जड़-चेतन सभी सुप्तावस्था में पड़े होते हैं वे सब जाग उठते हैं, गतिमान हो जाते हैं। पत्तियों-पुष्पों को नई ऊर्जा मिलती है। समस्त पेड़-पौधे, पल्लव रंग-बिरंगे फूलों के साथ खिल उठते हैं। ऋतुओं के एक पूरे चक्र को संवत्सर कहते हैं। संवत्सर, सृष्टि के प्रारंभ होने के दिवस के अतिरिक्त, अन्य पावन तिथियों, गौरवपूर्ण राष्ट्रीय, सांस्कृतिक घटनाओं के साथ भी जुड़ा है। रामचन्द्र का राज्यारोहण, धर्मराज युधिष्ठिर का जन्म, आर्य समाज की स्थापना तथा चैत्र नवरात्र का प्रारंभ आदि जयंतियाँ इस दिन से संलग्न हैं। इसी दिन से माँ दुर्गा की उपासना, आराधना, पूजा भी प्रारंभ होती है। यह वह दिन है, जब भगवान राम ने रावण का संहार कर, जन-जन को दैहिक-दैविक-भौतिक सभी प्रकार के तापों से मुक्त कर, आदर्श रामराज्य की स्थापना की। सम्राट विक्रमादित्य ने अपने अभूतपूर्व पराक्रम द्वारा शकों को पराजित कर उन्हें भगाया और इस दिन उनका गौरवशाली राज्याभिषेक किया गया।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ लगभग सभी जगह नववर्ष मार्च या अप्रैल माह अर्थात् चैत्र या बैसाख के महीनों में मनाए जाते हैं। पंजाब में नववर्ष बैशाखी नाम से 13 अप्रैल को मनाई जाती है। सिख नानकशाही कैलेण्डर के अनुसार 14 मार्च होला मोहल्ला नया साल होता है। इसी तिथि के आसपास बंगाली तथा तमिल नववर्ष भी आता है। तेलगू नव वर्ष मार्च-अप्रैल के बीच आता है। आंध्र प्रदेश में इसे उगादी (युगादि = युग + आदि का अपभ्रंश) के रूप में मनाते हैं। यह चैत्र महीने का पहला दिन होता है। तमिल नववर्ष विशु 13 या 14 अप्रैल को तमिलनाडु और केरल में मनाया जाता है। तमिलनाडु में पोंगल 15 जनवरी को नव वर्ष के रूप में आधिकारिक तौर पर भी मनाया जाता है। कश्मीरी कैलेण्डर नवरेह 19 मार्च को आरम्भ होता है। महाराष्ट्र में गुडी पड़वा के रूप में मार्च-अप्रैल के महीने में मनाया जाता है, कन्नड नव वर्ष उगाडी कर्नाटक के लोग चैत्र माह के पहले दिन को मनाते हैं, सिंधी उत्सव चेटीचंड, उगाडी और गुडी पड़वा एक ही दिन मनाया जाता है। मदुरै में चैत्र महीने में चित्रैय तिरुविजा नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। मारवाड़ी और गुजराती नववर्ष दीपावली के दिन होता है, जो अक्टूबर या नवंबर में आती है। बंगाली नववर्ष पोहेला बैसाखी 14 या 15 अप्रैल को आता है। पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में इसी दिन नव वर्ष होता है। वस्तुतः भारतवर्ष में वर्षा ऋतु की समाप्ति पर जब मेघमालाओं की विदाई होती है और तालाब व नदियाँ जल से लबालब भर उठते हैं तब ग्रामीणों और किसानों में उम्मीद और उल्लास तरंगित हो उठता है। फिर सारा देश उत्सवों की फुलवारी पर नववर्ष की बाट देखता है। इसके अलावा भारत में विक्रम संवत, शक संवत, बौद्ध और जैन संवत, तेलगु संवत भी प्रचलित हैं, इनमें हर एक का अपना नया साल होता है। देश में सर्वाधिक प्रचलित विक्रम और शक संवत हैं। विक्रम संवत को सम्राट विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की खुशी में 57 ईसा पूर्व शुरु किया था।

नववर्ष आप पूरे विश्व में एक समृद्धशाली पर्व का रूप अख्तियार कर चुका है। इस पर्व पर पूजा-अर्चना के अलावा उल्लास और उमंग से भरकर परिजनों व मित्रों से मुलाकात कर उन्हें बधाई देने की परम्परा दुनिया भर में है। अब हर मौके पर ग्रीटिंग कार्ड भेजने का चलन एक स्वस्थ परंपरा बन गई है परन्तु पहला ग्रीटिंग कार्ड भेजा था सन् 1843 में हेनरी कोल ने। हेनरी कोल द्वारा उस समय भेजे गए 10,000 कार्ड में से अब महज 20 ही बचे हैं। आज तमाम संस्थाएँ इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम आयोजित करती हैं और लोग दुगुने जोश के साथ नववर्ष में प्रवेश करते हैं। इस उल्लास के बीच ही यही समय होता है जब हम जीवन में कुछ अच्छा करने का संकल्प लें, सामाजिक बुराइयों को दूर करने हेतु दृढ़ संकल्प लें और मानवता की राह में कुछ अच्छे कदम और बढ़ाएँ।

विश्वास! विश्वास!! विश्वास!!!
अपने पर विश्वास,
अपने कार्य पर विश्वास
और ईश्वर पर विश्वास।
बस यही सफलता का मूलमंत्र है।

टाइप 5 निदेशक बंगला,
पोस्टल ऑफिसर्स कॉलोनी,
जेडीए सर्किल के निकट, जोधपुर-342001
मो. 09413666599

आदेश-परिपत्र : जनवरी, 2018

1. **कर्मचारियों के वेतन स्थिरीकरण प्रकरणों के निस्तारण करने हेतु।**
2. **प्रारम्भिक शिक्षा में पदस्थापित नियमित अध्यापक माध्यमिक शिक्षा में उच्च पद पर चयनित होने पर बकाया एरियर भुगतान करने के सम्बन्ध में।**

1. कर्मचारियों के वेतन स्थिरीकरण प्रकरणों के निस्तारण करने हेतु।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● कार्यालय आदेश ● इस कार्यालय के आदेश क्रमांक-शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34851/2017 दिनांक 03.11.2017 एवं 29.11.2017 द्वारा राज्य सरकार के आदेश क्रमांक-एफ. 15(1) एफ.डी./रूल्स/2017 दिनांक 30.10.2017 के अनुसार पुनरीक्षित संशोधित वेतनमान 2017 प्रभावी दिनांक 01.10.2017 अनुसार राज्य कर्मचारियों के वेतन स्थिरीकरण प्रकरणों का निस्तारण करने हेतु अधीनस्थ कार्यालयों के लेखाधिकारी/सहायक लेखाधिकारी-प्रथम को आदेशानुसार कार्मिकों के वेतन स्थिरीकरण 2017 अनुमोदन हेतु अधिकृत किया गया था।

राज्य सरकार के वित्त विभाग के नोटिफिकेशन क्रमांक एफ. 15 (1) एफ.डी./रूल्स/2017 दिनांक 09.12.2017 द्वारा पुनरीक्षित संशोधित वेतनमान 2017 को दिनांक 01.01.2016 से प्रभावी करने के आदेश प्रसारित किये गये है। अतः समस्त कार्मिकों के पुनरीक्षित संशोधित वेतनमान 2017 (द्वितीय संशोधन) प्रभावी दिनांक 01.01.2016 अनुसार अनुमोदन की कार्यवाही करेंगे। इस हेतु निम्न दिशा निर्देश जारी किए जाते हैं:-

1. यह नियम राजस्थान सिविल सेवा संशोधित वेतनमान (द्वितीय संशोधन) से जाने जावेंगे।
2. ये आदेश दिनांक 01.01.2016 से प्रभावी होंगे।
3. आदेशानुसार दिनांक 01.01.2016 से 31.12.2016 की अवधि का एरियर राशि का भुगतान देय नहीं होगा।
4. निर्देशानुसार दिनांक 01.01.2017 से 30.09.2017 तक की अवधि का एरियर निर्देशानुसार 03 किश्तों में कार्मिकों को जी.पी.एफ. खाते में जमा करवाया जावेगा।
5. दिनांक 01.01.2004 या उसके पश्चात् नियुक्त हुए कार्मिकों को निर्देशानुसार दिनांक 01.01.2017 से 30.09.2017 तक की अवधि का एरियर भुगतान नगद 03 किश्तों में देय होगा।
6. संशोधित वेतनमान 2017 (द्वितीय संशोधन अनुसार) संशोधित वेतन एवं भत्ते माह अक्टूबर 2017 देय माह नवम्बर 2017 से नगद देय होगा।
7. संशोधित विकल्प नियमानुसार वित्त विभाग द्वारा जारी आदेश दिनांक 09.12.2017 से 03 माह की अवधि में प्राप्त कर सेवा पुस्तिका में इन्द्राज पश्चात् सेवापुस्तिका पर चस्पा किया जावे।
8. शेष शर्तें जारी समसंख्यक आदेश दिनांक 03.11.2017 एवं 29.11.2017 अनुसार यथावत् रहेगी।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34851/2017 दिनांक : 14.12.2017

2. प्रारम्भिक शिक्षा में पदस्थापित नियमित अध्यापक माध्यमिक शिक्षा में उच्च पद पर चयनित होने पर बकाया एरियर भुगतान करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34851/2017 दिनांक : 19.12.2017 ● समस्त उप निदेशक, माध्यमिक शिक्षा ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक-प्रथम/द्वितीय ● विषय : प्रारम्भिक शिक्षा में पदस्थापित नियमित अध्यापक माध्यमिक शिक्षा में उच्च पद पर चयनित होने पर बकाया एरियर भुगतान करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निर्देशित किया जाता है कि पूर्व में प्रारम्भिक शिक्षा में कार्यरत नियमित शिक्षक/कार्मिक जो अब माध्यमिक शिक्षा में उच्च पदों पर चयनित होकर किसी भी पद पर कार्यरत है उनका समस्त बकाया एरियर भुगतान प्रारम्भिक शिक्षा से प्राप्त जी.ए. 55 के आधार पर माध्यमिक शिक्षा विभाग के स्तर पर आहरित किया जाना सुनिश्चित करें।

उक्त आदेश तत्काल प्रभाव से लागू होंगे।

● **वित्तीय सलाहकार,** माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/स्थिरी-अ/34851/2017 दिनांक : 19.12.2017

आवश्यक सूचना

● 'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ। ● कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अतः अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है। ● कतिपय रचनाकार अपने एकाधिक बैंक खाता लिखकर भिजवा देते हैं और उक्त खाते का उपयोग समय-समय पर नहीं करने के कारण वह बंद भी हो चुका होता है। परिणामस्वरूप उक्त मानदेय खाते में जमा नहीं हो पाता। जिसकी शिकायत प्राप्त होती है। किसी रचनाकार के एकाधिक खाते हैं तो रचनाकार अपने SBI बैंक खाते को प्राथमिकता देकर अद्यतन व्यक्तिगत जानकारी उपर्युक्तानुसार प्रत्येक रचना के साथ अलग-अलग संलग्न करें। -वरिष्ठ संपादक

माह : जनवरी, 2018	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठक्रमांक	पाठ का नाम
8.1.2018	सोमवार	जयपुर	12	अनिवार्य हिन्दी	परीक्षामाला	
9.1.2018	मंगलवार	उदयपुर	12	अनिवार्य अंग्रेजी	परीक्षामाला	
10.1.2018	बुधवार	जयपुर	12	भूगोल	परीक्षामाला	
11.1.2018	गुरुवार	उदयपुर	12	रसायन विज्ञान	परीक्षामाला	
12.1.2018	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		स्वामी विवेकानन्द
13.1.2018	शनिवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारा त्योहार–मकर संक्रान्ति
15.1.2018	सोमवार	जयपुर	12	व्यवसाय अध्ययन	परीक्षामाला	
16.1.2018	मंगलवार	उदयपुर	12	जीव विज्ञान	परीक्षामाला	
17.1.2018	बुधवार	जयपुर	12	गणित	परीक्षामाला	
18.1.2018	गुरुवार	उदयपुर	12	इतिहास	परीक्षामाला	
19.1.2018	शुक्रवार	जयपुर	12	राजनीतिक विज्ञान	परीक्षामाला	
20.1.2018	शनिवार	उदयपुर	12	लेखाशास्त्र	परीक्षामाला	
22.1.2018	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		बसंत पंचमी/सरस्वती जयन्ती
23.1.2018	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		देश प्रेम दिवस
24.1.2018	बुधवार	जयपुर	12	हिन्दी साहित्य	परीक्षामाला	
25.1.2018	गुरुवार	उदयपुर	12	भौतिक विज्ञान	परीक्षामाला	
27.1.2018	शनिवार	जयपुर	8	हिन्दी	परीक्षामाला	
29.1.2018	सोमवार	उदयपुर	10	अंग्रेजी	परीक्षामाला	
30.1.2018	मंगलवार	जयपुर	8	अंग्रेजी	परीक्षामाला	
31.1.2018	बुधवार	उदयपुर	10	संस्कृत	परीक्षामाला	

निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग राजस्थान, अजमेर।

शिविरा पञ्चाङ्ग

जनवरी 2018

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

जनवरी 2018 ● कार्य दिवस–21, रविवार–04, अवकाश–06, उत्सव–05 ● 1 से 6 जनवरी– शीतकालीन अवकाश। **11 से 13 जनवरी–**राज्य स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला का आयोजन (SIERT) **12 जनवरी–**स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (राष्ट्रीय युवा दिवस–उत्सव), केरियर डे का आयोजन (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय) **14 जनवरी–**मकर सक्रान्ति (उत्सव) **15 से 31 जनवरी–**केजीबीवी में शैक्षिक किशोरी मेलों का आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान) **16 जनवरी–**समुदाय जागृति दिवस (अमावस्या) (सर्व शिक्षा अभियान) **20 जनवरी–**अध्यापिका मंच की द्वितीय बैठक का आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान) **22 जनवरी–**बसन्त पंचमी/सरस्वती जयन्ती (उत्सव), गार्गी पुरस्कार समारोह। **23 जनवरी–**सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती, देश प्रेम दिवस (उत्सव) **24 जनवरी–**राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन (सर्व शिक्षा अभियान) **26 जनवरी–**गणतंत्र दिवस (अवकाश–उत्सव अनिवार्य) **30 जनवरी–**शहीद दिवस (प्रात: 11.00 बजे दो मिनट का मौन) **नोट :–** शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन एवं विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,राजस्थान,अजमेर) **माह जनवरी : 2018 में सर्व शिक्षा अभियान से सम्बन्धित कार्यक्रम–●** मासिक कार्यशाला ● एचएम लीडरशिप प्रशिक्षण ● State Level Resources Person Training on National Deworming Day-2018 ● शाला सिद्धि कार्यशाला (राज्य स्तरीय) ● शाला सिद्धि कार्यशाला (जिला स्तरीय) ● शाला सिद्धि कार्यशाला (राज्य समीक्षा बैठक) ● केजीवीबी शिक्षिकाओं हेतु विषयवार कार्यशाला।

अभिलेख संधारण

कर्मचारियों के सेवा रिकॉर्ड का कम्प्यूटरीकरण

❐ पल्लव मुखर्जी

भारत सरकार 13वें वित्तीय आयोग की सिफारिश पी.आर. तथा वर्तमान राज्य सरकार द्वारा माननीया मुख्यमंत्री महोदया के सुराज संकल्प 2013 के बिन्दु संख्या 12.04 **'कर्मचारियों के सेवा रिकॉर्ड का कम्प्यूटरीकरण किया जाए'** की अनुपालना में इस परियोजना को तत्काल क्रियान्वित किया जाना है। IHRMS (Integrated Human Resource Management System) राजस्थान सरकार, स्थानीय निकाय, स्वशासी संस्थान एवं पंचायती राज संस्थान के समस्त अधिकारी/कर्मचारियों की सेवा पुस्तिका (सर्विस बुक) में दर्ज सभी सूचनाएँ एवं पेंशनर्स की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को इलेक्ट्रोनिक रूप में संधारित करने की एक महत्त्वपूर्ण परियोजना हैं।

कर्मचारियों को IHRMS (Integrated Human Resource Management System) से निम्न सुविधाएँ प्राप्त होगी :-

1. स्वयं से सम्बंधित समस्त सूचनाएं एक स्थान पर उपलब्ध होगी यथा पे स्लिप, GA-55, SIPF की कटौती का विवरण, अवकाश, स्थानान्तरण, पदोन्नति, वेतन पर लाभ आदि।
2. ऑन लाईन सेवा पुस्तिका सत्यापन।
3. सेवा निवृत्ति पर डिजिटल सेवा पुस्तिका।

विभाग की ओर से 12 जिलों यथा जयपुर, अजमेर, बारां, भरतपुर, बीकानेर, चुरू, झालावाड़, जोधपुर, कोटा, पाली, उदयपुर एवं जयपुर (गोनेर) में नवनिर्मित डिजिटल लर्निंग सॉल्युशन रूम्स के माध्यम से राजकीय कार्मिकों के सेवा अभिलेख की एकीकृत ऑनलाइन सूचना प्रणाली वेबसाइट के डेटा फीडींग का प्रशिक्षण दिनांक 02.01.2017 एवं 03.01.2017 आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में प्रत्येक जिले में लगभग 120 संस्था प्रधान, प्रत्येक मण्डल एवं जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के संस्थापन शाखा के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया है। **वर्तमान में उक्त कार्य प्रगति पर है तथा जिन कार्मिकों का अभी तक सर्विस बुक ऑन लाईन नहीं हुआ हैं उन्हें अविलम्ब सर्विस बुक ऑन लाइन फीड किया जाना हैं।** शिक्षा विभाग (स्कूल शिक्षा) के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं पेंशनर्स की सर्विस बुक का डेटा एवं पर्सनल इन्फोर्मेशन सिस्टम (पी.आई.एस.) के डाटा ऑन लाइन करने तथा प्रभावी क्रियान्वयन **दिशा-निर्देश** :

1. परियोजना वेबसाइट : http//ihrms.raj.nic.in पर योजना की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध है तथा एम्पलाईज एवं पेंशनर्स डेटा की एंट्रीज भी इसी पोर्टल पर की जानी है।
2. http//ihrms.raj.nic.in पर डाउनलोड ऑप्शन के द्वारा PIS Manual डाउनलोड किया जा सकता है। जिससे PIS date entry की पूरी प्रक्रिया दर्शायी गयी हैं।
3. इस परियोजना की जानकारी एवं प्रक्रिया के सम्बन्ध में दिशा निर्देश पूर्व में शिक्षा विभाग द्वारा दिनांक 02.01.17 एवं 03.01.17 को नवनिर्मित Digital Learning-Solution Rooms के माध्यम से दिए गए थे जिससे प्रत्येक जिले में मास्टर ट्रेनर तैयार किया जा सके।
4. सर्विस बुक एवं PIS data entries निम्न प्रकार से की जा सकती है:-

(अ) स्वयं एम्पलाईज द्वारा ऑन-लाइन एंट्रीजः- एम्पलाई अपने एम्पलाई आई.डी. (16 character Emp ID given by SIPF department) से लॉगिन कर सकते हैं। सर्वप्रथम पासवर्ड भी एम्पलाइ आई.डी. ही होगा। प्रथम लॉगिन करने पर पासवर्ड बदलना अनिवार्य होगा।

(ब) सामान्य लॉगिन समस्या व उनके निदान हेतु http//ihrms.raj.nic.in वेब पोर्टल पर लाल अक्षरों से लिखे लॉगिन प्राब्लम के आगे नीले अक्षरों में लिखे Click here को क्लिक कर के देखा जा सकता है।

(स) एम्पलाई द्वारा PIS FORM में डाटा भरवा कर कलेक्ट करनाः- यदि एम्पलाई ऑन लाईन नहीं भर सके तो IHRMS website पर डाउनलोडः-PIS फोर्मेट में जाकर PIS फोर्मेट का फॉर्म डाउनलोड करके एम्पलाईज द्वारा भरवाया जा सकता हैं। फॉर्म पर कलेक्ट किया गया डाटा HO/DDO द्वारा वेबसाइट पर एंट्री करवाया जा सकता है।

(द) HO/DDO द्वारा entries:- HO/DDO का login in ID DDO कोड़+treasury code (Ex. यदि DDO कोड 069001 हैं एवं treasury code 35 हैं तो लॉगिन इन आई.डी 06900135 होगा) अर्थात् सर्वप्रथम पासवर्ड भी लॉगिन आई.डी. ही होगा, प्रथम लॉगिन करने पर पासवर्ड बदलना अनिवार्य होगा।

(य) एम्पलाई द्वारा ऑन-लाईन दर्ज किया गया डेटा HO/DDO द्वारा प्रमाणित (verify) करना होगा जो कि इस पोर्टल के सॉफ्टवेयर में संबंधित ऑप्शन को क्लिक करके किया जा सकता है।

(र) HO/DDO लॉगिन से दर्ज किया गया डेटा प्रमाणित (verify) माना जायेगा।

(ल) प्रमाणित (verify) करने के लिए IHRMS में Data Validation:- PIS data (module wise) or PIS data (all in one) option के द्वारा किया जा सकता है। एम्पलाई के डाटा को ✓ करके validate बटन क्लिक करने से validate हो जाएगा, डेटा में कोई करेक्शन करने के लिए करेक्शन वाले मॉड्यूल में जाकर एडिट किया जा सकेगा तथा करेक्शन करके वहीं से वेलिडेट किया जा सकेगा।

(व) HO/DDO द्वारा प्रमाणित किया गया डाटा एम्पलाई द्वारा बदला नहीं जा सकेगा।

सभी एम्पलाई का कुछ डाटा पहले से अन्य डाटाबेस से पार्ट किया जा चुका है। अतः लॉगइन करने पर एम्पलाई का बेसिक डाटा दिखने लगेगा।

अनुभाग अधिकारी
कम्प्यूटर अनुभाग, मा.शि.राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414059007

रपट

छात्रा वर्ग 19 वर्ष

63वीं राष्ट्रीय विद्यालयी वॉलीबॉल प्रतियोगिता

❒ सुभाष चन्द नेहरा

63वीं राष्ट्रीय विद्यालयी वॉलीबॉल प्रतियोगिता छात्रा संवर्ग 19 वर्ष के आयोजन का दायित्व स्कूल गेम्स फैडरेशन के द्वारा सत्र 2017-18 का निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान को दिया गया। निदेशालय द्वारा इस प्रतियोगिता का आयोजन चूरू संभाग के जिला सीकर में स्थित राआउमावि. ढाँढ़ण को दिया गया तथा यह प्रतियोगिता 15 से 19 नवम्बर, 2017 तक आयोजित हुई।

राजस्थान जो मेहमान नवाजी के लिए पूरे विश्व में विख्यात है, ने अपनी परम्परा का निर्वहन करते हुए देश के विभिन्न राज्यों के दल जो इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आए, उनके आगमन पर ढाँढ़ण (सीकर) के नज़दीक स्थित चूरू रेल्वे स्टेशन पर भव्य स्वागत कर प्रतियोगिता स्थल के लिए बसों के माध्यम से पहुँचाए। प्रत्येक दल के सदस्यों एवं दलाधिपति का मालाओं व राजस्थानी साफा पहनाकर जनप्रतिनिधियों एवं शिक्षा अधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। स्वागत कार्यक्रम से समस्त दलों को अपार हर्ष का अनुभव हुआ। स्वागत स्थल पर अल्पाहार की भी व्यवस्था की गई थी।

प्रतियोगिता आयोजन स्थल पर खिलाड़ियों के दल प्रभारियों व प्रतिनियुक्त समस्त कार्मिकों के आवास एवं भोजन की निशुल्क व्यवस्था ढाँढ़ण वेलफेयर सोसायटी द्वारा वातानुकूलित कमरों में की गई। प्रतियोगिता का उद्घाटन 15 नवम्बर, 2017 को विद्यालय के खेल स्टेडियम में श्री राजकुमार रिणंवा देवस्थान मंत्री राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमान् नन्दकिशोर महरिया विधायक फतेहपुर की अध्यक्षता में हुआ। अति विशिष्ट अतिथि के रूप में एसजीएफआई. के सचिव श्री राजेश मिश्रा एवं उपाध्यक्ष श्री राधाकृष्ण परिहार उपस्थित रहे। इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियाँ एवं उत्कृष्ट मार्च पास्ट तथा पटाखों से आसमान गुँजायमान हो गया। अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि महोदय ने सभी दलों के खिलाड़ियों

प्रभारियों प्रतिनियुक्त कार्मिकों का जिले में स्वागत व अभिनन्दन करते हुए शेखावाटी की धरा पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का अनुरोध किया। इससे पूर्व उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा (चूरू परिक्षेत्र) चूरू ने सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनन्दन किया। प्रधानाचार्य श्री भागीरथ सिंह माहिच द्वारा प्रतियोगिता का परिचय दिया गया तथा जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (प्रथम) सीकर द्वारा व्यवस्थाओं व कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

प्रतियोगिता में देश भर से 27 टीमों की 324 छात्रा खिलाड़ी, 81 प्रशिक्षक एवं दलाधिपति उपस्थित हुए। प्रतियोगिता हेतु 8 पुल बनाए गए जिनमें अन्तिम 8 स्थानों में केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश गुजरात, हरियाणा, केन्द्रीय विद्यालय संगठन एवं विद्याभारती ने प्रवेश किया। सेमीफाइनल में तमिलनाडु, केरल, हिमाचल प्रदेश व केन्द्रीय विद्यालय की टीमें पहुँची, जिनमें फाइनल में केरल व हिमाचल के मध्य मुकाबला हुआ और केरल की टीम ने लगातार दूसरी बार राष्ट्रीय चैम्पियन होने का गौरव हासिल किया। जबकि तमिलनाडु ने केन्द्रीय विद्यालय संगठन को हराकर तीसरा स्थान हासिल किया।

समापन समारोह दिनाँक 19 नवम्बर, 2017 को फाइनल मैच के तुरन्त बाद हुआ। फाइनल मैच का मुख्य आकर्षण विभाग प्रमुख श्रीमान् नथमल डिडेल (IAS), निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान की खेल मैदान पर उपस्थिति रही। उनके मुख्य आतिथ्य एवं पुलिस अधीक्षक सीकर राठौर विनीत कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें अति विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेश मिश्रा अर्जुन अवार्डी एवं रामावतार जाखड़ सचिव भारतीय वॉलीबॉल संघ उपस्थित रहे। प्रतियोगिता के भामाशाह श्री निर्मल कुमार भरतिया भी कार्यक्रम की शोभा बने हुए थे। मुख्य अतिथि ने सभी विजेता खिलाड़ियों को प्रतीक चिह्न, पदक एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया एवं सभी खिलाड़ियों को निरन्तर आगे से आगे बढ़ने का आशीर्वाद प्रदान किया। मुख्य अतिथि ने ढाँढ़ण वेलफेयर सोसाइटी के समस्त पदाधिकारियों का प्रतियोगिता आयोजन में किए गए सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने गौरवमयी आयोजन के लिए विभाग के शिक्षा अधिकारियों प्रतिनियुक्त शारीरिक शिक्षकों का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

यह आयोजन स्कूली शिक्षा के राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में ऐतिहासिक एवं मिनी ओलम्पिक का प्रतीक बन गया। इसके शानदार आयोजन में विभाग व ढाँढ़ण वेलफेयर सोसायटी के योगदान को सभी खिलाड़ियों व प्रशिक्षकों द्वारा सराहा गया।

शारीरिक शिक्षक
रामावि. रामसीसर, (सीकर)
मो. 9079789378

18 का इतिहास - है कुछ खास

❒ पुष्पा शर्मा

नए साल का आगाज है। आओ मंगल कामना करें, साथ ही 2018 के साथ 18 पौराणिक एवं ऐतिहासिक बातों को जानने का प्रयास करें, ताकि नवीन के साथ प्राचीन भी स्मृतियों में तरोताज़ा बना रहे।

- **सिन्धु सभ्यता स्थल**–हड़प्पा के टीले में पकी हुई ईंटों से निर्मित 18 वृत्ताकार चबूतरे मिले हैं जिनका उपयोग अनाज पीसने के लिए होता था।
- **पुराण**–हमारे प्राचीन ग्रन्थों में पुराणों का विशेष महत्त्व है। यह 18 हैं- ब्रह्मा पुराण, पद्म पुराण, विष्णु पुराण, शिव पुराण, नारदपुराण, भागवतपुराण, मार्कण्डेयपुराण, अग्निपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्त, लिंगपुराण, वराहपुराण, स्कन्दपुराण, वामनपुराण, कूर्मपुराण, मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण, ब्रह्मांडपुराण।
- **महाभारत में 18 का महत्त्व**–महाभारत उत्तरवैदिक काल का एक महान ग्रन्थ है। इसमें कुल 18 अध्याय (पर्व) हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भी 18 अध्याय हैं। महाभारत के युद्ध में कौरवों की ओर से 11 अक्षौहिणी सेना और पांडवों की ओर से 7 अक्षौहिणी सेना ने भाग लिया। इस प्रकार 18 अक्षौहिणी सेना ने यह युद्ध लड़ा जो 18 दिन चला।
- **अष्टादश तीर्थ (मौर्य प्रशासन)**– मौर्यकाल के प्रशासन का भारतीय प्रशासनिक इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अर्थशास्त्र में 18 तीर्थों का उल्लेख है-पुरोहित, समाहर्ता, सन्निधाता, सेनापति, युवराज प्रदेष्ठा, नायक, कर्मान्तिक, व्यवहारिक, मंत्रिपरिषद, अध्यक्ष, दण्डपाल, अन्तपाल, दुर्गपाल, नागरक, प्रशास्ता, दौवारिक, अन्तवर्शिक, आटविक।
- **अशोक के अभिलेख (लघु शिलालेख)**–मुख्य 14 शिलालेखों के वर्ग में सम्मिलित नहीं होने के कारण इन्हें लघु शिलालेख कहा गया। लघुशिला लेख (18 स्थान) निम्न स्थानों से प्राप्त हुए- रूपनाथ (म.प्र.), गुर्जरा (म.प्र.), सहसाराम (बिहार), भाब्रूबैराठ (राजस्थान), मस्की (कर्नाटक), ब्रह्मगिरि (मैसूर), सिद्धपुर, जटिंगरामेश्वर, एर्रगुडी, गोविमठ, पालकिगुंडू, राजुलमंडगिरि, अहरौरा, सारोमारो, नेत्तुर, उडेगोलन, पनगुड़रिया, सन्नाती।
- **गुप्तकालीन अभिलेख**–कुमार गुप्त के समय में गुप्तकालीन सर्वाधिक अभिलेख प्राप्त हुए, जिनकी संख्या 18 है।
- **पदिनेकिल्लकणक्कु**–यह तृतीय संगम का तीसरा संग्रह ग्रन्थ है। इसमें सदाचारपरक 18 गीत हैं-नलदियर, इन्नारपथु, ऐतीनएम्बुद, तिनौमोलिएम्बुद, ऐतीननइलुपाद, तिनौमालिनूरम्बुद, कुरल, एलादि, शीरूपंचक्लम, तिरीकदुकम, पलपोलि, मुदुमोलिक्कांची, नन्मणिक्कैके, कारनारपथु, कल्लिवल्लिनार इनियवैनारपथु, आचारकोवै, इनिलै।
- **श्रेणियाँ (शिल्प)**–जातकों में 18 प्रकार की श्रेणियाँ का उल्लेख मिलता है।
- **राजस्थान के क्षेत्र**–भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान- ढूंढाड़, ऊपरमाल, खेराड, मत्स्यप्रदेश, बांगड़क्षेत्र, हाड़ौती का पठार, गिरवा, छप्पन का मैदान, अबुर्द, भौमट, भौराट का पठार, मेवाड़, मेरवाड़ा, थली, बांगड़, गोडवाड, शेखावटी, मारवाड़।
- **मारवाड़ का प्रताप (संघर्ष गाथा)**– मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन ने 18 वर्ष तक मारवाड़ की रक्षा के लिए संघर्ष किया इसीलिए इन्हें मारवाड़ का प्रताप भी कहा जाता है।
- **मतदान आयु**– भारत के प्रत्येक नागरिक को संविधान के अनुसार 18 वर्ष की आयु में मतदान का अधिकार प्रदान किया गया है।
- **विधिक अधिकार**– राजस्थान लोक सेवाओं के गांरटी अधिनियम 2011 के अन्तर्गत जनता से जुड़े 18 विभागों को सम्मिलित किया गया है।
- **डाक घर**– 1866-67 ई. में जयपुर राज्य में 18 अंग्रेजी डाकघर स्थापित किए गए।
- **राज्यसभा सीटें (तमिलनाडु)**– वर्तमान में तमिलनाडु में राज्यसभा की 18 सीटें निर्धारित हैं।
- **ताल (कुमाऊँ)**– ढोल सागर यानि गढ़वाल, कुमाऊँ का दर्शन शास्त्र जहाँ ढोल सागर के माध्यम से देवी-देवताओं की स्तुति, नरसिंह, नागराजा, कोरेल, छेदवा, विदवा, भाषर....आदि की गाथाएँ 18 ताल की नौबत के साथ गाई जाती है।
- **तत् वाद्य**– जिनका निर्माण लकडी या धातु से होता है और जिनमें तार लगे होते है वह वाद्ययंत्र इसमें सम्मिलित माने जाते है। राजस्थान में तत् वाद्ययंत्र- रावणहत्था, पेली, जंतर, इकतारा, चिकारा, अपंग, भपंग, दोतारा, कोंडी, कामायचा, टोटो, भुंगल, दुकाका, रबाब, रवाज, सुरिन्दा, तम्बूरा, सुरमंडल।
- **अंक शास्त्र**– अंक 18 दुनिया भर में विशेष शुभ अंक माना जाता है। मान्यताओं के आधार पर अंक 18 का उच्चारण करने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। हिब्रू भाषा में जीवन शब्द को व्यक्त करने के लिए अंक 18 का उपयोग किया जाता है।
- **बहमनी साम्राज्य**– इस राज्य में कुल 18 सुल्तानों ने लगभग 1347-1527 ई. तक शासन किया। इस राज्य का अंत एवं विजयनगर का महानतम शासक कृष्णदेव राय का उत्कर्ष एक साथ हुआ।

पत्नी श्री बृजकिशोर शर्मा
प्रधानाचार्य, सापुन्दा रोड, ज्योति कॉलोनी,
केकड़ी (अजमेर) 305404
मो. 9829377057

तैयारी कैसे करें?

राजस्थान प्रशासनिक सेवा : प्रारम्भिक परीक्षा

❒ जयपाल सिंह राठी

प्रशासनिक सेवा में जाने के लिए अधिकतर युवाओं के मन में इच्छा होती है इसके लिए उन्हें प्रतिस्पर्द्धा के दौर से गुजरना भी होता है इस लेख में शुरुआती दौर में प्रथम सोपान प्रारंभिक परीक्षा को पास करने के लिए तैयारी कैसे करें पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

सर्वप्रथम स्वयं का आकलन करना बेहद जरूरी है एक कुशल प्रशासक के बारे में किसी शायर ने कहा है–

''बुलन्द निगाहें, सुखन दिल नवाज, जहाँ पुर सोज यहि है रफ्ते सफर 'मीर' ए–कारवाँ के लिए''

अर्थात् उसकी नज़रें बुलन्द हों मिलनसार एवं खुशमिजाज किसी भी कार्य को करने के लिए अपनी जान की भी बाजी लगाने वाला हो। इस प्रकार ये गुण एक प्रशासक में होने चाहिए। आत्मविश्लेषण जरूरी है यदि ये गुण हैं तो समझो मिशन को अच्छी राह मिल गई है तद्नुसार तैयारी की रणनीति बनाकर अपने प्रयास को मूर्त रूप देने के लिए तत्पर हो जाइए।

वैसे देखा जाए तो पढ़ना तो सभी जानते हैं, लेकिन क्या पढ़ना चाहिए और कैसे पढ़ना चाहिए, ऐसा बहुत कम व्यक्ति जानते हैं। इस विषय में बेकन महाशय की ये पंक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं ''Some books are to be tasted, others to be swallowed and some few to be chewed and digested'' इस प्रकार से तैयारी के लिए अध्ययन कैसे करें इस विषय में कुछ बातें हैं जिन पर अमल करना समीचीन होगा।

सर्वप्रथम पाठ्यक्रम की पूर्ण जानकारी होना जरूरी है वैसे पूर्व लेख में संक्षिप्त रूप में जानकारी दी गई थी जिसकी विस्तृत जानकारी होना जरूरी है।

इसके पश्चात एक बात और ध्यान देना आवश्यक है कि परीक्षा की प्रकृति कैसी है? यह प्रारंभिक परीक्षा केवल प्रत्याशियों की अधिक संख्या को कम करने हेतु छंटनी परीक्षा है। इसमें

निर्धारित मानदण्डानुसार प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्याशियों की संख्या निश्चित की जाती है। इसमें सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के होते हैं जिसमें प्रत्येक प्रश्न के उत्तर विकल्पों में दिए होते हैं उनमें से सही विकल्प चुनना होता है। इसमें ध्यान देने योग्य बात यह है कि गलत उत्तर देने पर $^1/_3$ अंक प्राप्तांकों में से काट लिया जाता है। इस परीक्षा की प्रकृति को समझना बहुत आवश्यक है कुछ प्रत्याशी तो प्रतियोगी परीक्षा में एक–एक अंक की महत्ता को ध्यान में रखते हुए कि एक अंक के अन्तर से हजारों प्रत्याशियों को पीछे छोड़ा जा सकता है तो वे अधिक से अधिक सवाल करने की कोशिशें करते हैं किन्तु इस कोशिश में वे कुछ गलत उत्तर भी दे देते हैं जिसका परिणाम उन्हें मुख्य परीक्षा से वंचित कर देता है। इसलिए ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस प्रवृत्ति से बचना चाहिए। जिस प्रश्न का उत्तर सही तरह नहीं आता है उसे छोड़ दें इससे समय की बचत भी होगी तथा गलत उत्तर के लिए अंक भी नहीं कटेंगे। किसी भी दशा में संयोग का सहारा नहीं लिया जाए प्रयास सही उत्तर देने का ही हो दूसरे शब्दों में कहा जाए तो इसके लिए पल्ले में गाँठ बाँध लेनी चाहिए जो हमेशा अभ्यास कराती रहे कि गलत उत्तर नहीं देने हैं। जो यह ध्यान नहीं रखते वे अच्छी तैयारी होते हुए भी असफल हो जाते हैं।

अगला चरण आता है पठन सामग्री का, पठन सामग्री कैसी हो किस लेखक की पुस्तकें खरीदी जाएं? किस स्तर की पुस्तक है? तथा लेखक का क्या स्तर है? सभी बातों को ध्यान में रखकर ही पठन सामग्री खरीदी जाए। आजकल प्रकाशकों की कोई कमी नहीं हैं तथा पुस्तकों की भी कमी नहीं हैं, अपडेट तथा शुद्ध वर्तनी वाली पुस्तकों की अवश्य कमी है। ऐसी पुस्तकें अवश्य क्रय की जानी चाहिए। इसके अलावा भी एक बात ध्यान रखनी है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में छोटी कक्षाओं की पुस्तकें भी महत्त्वपूर्ण हैं तथा वे सस्ती भी होती हैं अवश्य ही क्रय की जाए ऐसी पुस्तकों में बहुत ही बारीकी से और समझाकर सविस्तार जानकारी दी हुई होती है। इसके अतिरिक्त पत्र–पत्रिकाएँ भी अवश्य पढ़ें क्योंकि इनमें Current जानकारी दी हुई होती है शुद्ध वर्तनी तथा सही अर्थ के लिए हमेशा स्तरीय शब्द कोश का ही सहारा लिया जाए। समसामयिक घटनाओं से सम्बन्धित जानकारी के लिए दैनिक समाचार पत्रों, प्रतियोगी परीक्षाओं से सम्बन्धित पत्रिकाओं को भी आधार बनाया जाए।

परीक्षा की तैयारी के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि Syllabus को ध्यान में रखते हुए हर Topic की तैयारी अति आवश्यक है यह परीक्षा बिल्कुल अलग है इतना ही नहीं जो अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षाएँ हम देते आए हैं उससे भी अलग प्रकृति की है। Academic परीक्षा में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं की तैयारी कर भी अच्छे अंक लाए जा सकते हैं। किन्तु इस प्रतियोगी परीक्षा में गहन तैयारी की आवश्यकता है कोई बिन्दु छोड़ना असफलता की ओर जाना है अतः विस्तार से अध्ययन की आवश्यकता है अध्याय का कोई भी बिन्दु ऐसा नहीं रहना चाहिए जिसकी जानकारी न हो इस संदर्भ में एक कहावत है जो अध्ययन के सही तरीकों की ओर इशारा करती है 'When I read I forget when I write I remember when I do I retain.' अर्थात् पढ़ा हुआ भूला हुआ होता है। लिखा हुआ कुछ याद होता है किन्तु जब उसको Practical रूप से करके देखते हैं तो उसे पूर्ण रूप से आत्मसात किया हुआ कहा जाएगा। अर्थात्

अध्ययन सामग्री को पूर्णतया आत्मसात् करने ही सही तैयारी होगी। कुछ ऐसी पठन सामग्री जिसके भूलने के अवसर अधिक हैं उसको अन्य तरीकों से सम्बद्ध करके याद किया जाना चाहिए।

उपर्युक्त सभी बातों के अलावा एक महत्त्वपूर्ण पहलू और भी जिक्र करने योग्य है वह है समय प्रबन्धन, समय का प्रबन्धन बड़े ही सोच-विचार कर करना चाहिए। योजनानुसार रणनीति तैयार कर समय की धारा के साथ-साथ चलना जरूरी है। समय रहते यदि पूर्ण तैयारी नहीं की तो वही बात होगी ''का वर्षा जब कृषि सुखाने समय बीत गया फिर का पछताने'' इतना ही नहीं समय का ख्याल परीक्षा में रखना जरूरी है। समय तीन घण्टा अंक 200 तथा प्रश्न 150 तीनों का तालमेल बिल्कुल सही होना चाहिए एक प्रश्न के लिए जितना समय मिला है उससे ज्यादा नहीं खर्च करना चाहिए। जो प्रश्न नहीं आता है उसमें उलझना समय बरबाद करना है अतः उसे छोड़कर अन्य प्रश्न में वह समय दिया जाए तो उचित रहेगा। यदि आपके पास जानकारी है किन्तु समय पूरा हो चुका तो आपकी जानकारी धरी रह जाएगी और आप तैयारी होते हुए भी हाथ मलते रह जाओगे। अतः सजग रहें।

प्रेरणा इन्सान का भविष्य बदल देती है अतः हमें प्रेरणा से प्रेरित होकर अपने मिशन की ओर बढ़ना है जो भी हमारी राह में प्रेरक आए उनका सम्मान करें उन पर यकीन करें उन्हें आत्मसात् करें उनके अनुसार कार्य करें तो वे जिन्दगी की तस्वीर बदलकर रख देंगे। इसके लिए योग्य गुरु आदर्श पथप्रदर्शक की तलाश कर उसके निर्देशन में कार्य करें तो बेहतर फलदायी होगा। महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धी प्रेरक प्रसंगों को भी अपनाएं निश्चित रूप से वे हमें सम्बल प्रदान करेंगे।

दार्शनिक अन्दाज़ जताती ये पंक्तियाँ हमें बताती हैं-

''Woods are lovely dark and deep
But I have promised to keep And miles to go and miles to go before I sleep.''

ये पंक्तियाँ आवाहन करती हैं अभी बहुत कुछ करना बाकी है जब ठान लिया है तो करना ही है समय रहते करना ही है। गुप्त जी की ये पंक्तियाँ भी कम प्रेरणादायी नहीं हैं।

भला कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलम्बन को
नर हो न निराश करो मन को।

आखिर में कतिपय बिन्दुओं पर गौर फरमाना भी इम्तिहान में मुफीद रहेगा। विदित हो यह परीक्षा राज्य सरकार की बेहतरीन भर्ती प्रक्रियाओं में शुमार है इसमें ''First hand Study is required'' यह परीक्षा मुख्य परीक्षा से भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यदि इसमें सफलता नहीं मिली तो मुख्य परीक्षा से वंचित होना पड़ेगा। गत परीक्षाओं के प्रश्न-पत्रों को भी संग्रहित करना न भूलें क्योंकि इनसे ही परीक्षा के पैटर्न की सही जानकारी मिलेगी। पाठ्यक्रम की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं से अध्ययन करते वक्त अपने स्वयं के नोट्स बनाएं। इससे यह फायदा होगा कि उनको परीक्षा से पूर्व अल्प समय में भी दोहराया जा सके। यह परीक्षा राजस्थान राज्य की परीक्षा है अतः इसमें राज्य की समस्त प्रकार की जानकारी से अपडेट होना आवश्यक है तथा उसमें किसी भी प्रकार की भ्रान्ति नहीं रहनी चाहिए। ध्यान रहे सफलता व परिश्रम का कोई शार्टकट नहीं होता कड़ी मेहनत, पक्का इरादा, आशावादी भाव से ईमानदारी पूर्वक प्रयास करते रहें यह सही है। ''God helps those Who help themselves'' में विश्वास रखें। कुछ भ्रान्तियां जैसे परीक्षा का माध्यम अंग्रेजी सही रहता है। अंग्रेजी माध्यम के प्रत्याशियों को अधिक सफलता मिलती है यह एक धारणा है। सफलता आपकी तैयारी पर निर्भर करती है। परिवार की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालती। यदि आप कड़ी मेहनत से तैयारी करते हैं। आज मिथक टूट रहे हैं। इसलिए परम्परावादी प्रवृत्ति को त्याग कर इसी धारणा में विश्वास बनाएं कि पक्का इरादा, कड़ी मेहनत, दूरदृष्टि ही मंज़िल तय करने में मददगार होगी। हिम्मते मर्द मददे खुदा।

सृजन है अधूरा विश्वभर में, कहीं भी
पूर्णता नहीं है। प्रस्तुत लेख में चन्द सुझाव हैं। आशा है प्रतियोगियों के लिए मददगार साबित होंगे। शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ संपादक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9460392523

प्रेरक प्रसंग

सहृदयता

सुभाष-सुभाष, क्या कर रहा है बेटा? पुकारती हुई माता प्रभावती जी उनके कमरे में आ गई। सुभाष कमरे में नहीं थे। अचानक उनकी दृष्टि अलमारी की ओर गई। चींटियों की एक लम्बी कतार अलमारी के अन्दर जा रही थी। अलमारी खोली तो देखा कि पुस्तकों के पीछे कुछ सूखी रोटियाँ पड़ी है। बालक के इस विचित्र कार्य पर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। तभी सुभांष कहीं से आ गए और बिना बोले माँ के पास चुपचाप खड़े हो गए। माँ ने पूछा क्या बात है? बेटे! आज तू कुछ उदास लग रहा है। ये अलमारी में रोटियाँ क्यों रखी हैं?

रोटियों की बात आते ही उनकी आँखों से आँसू छलक आए। भरे गले से उन्होंने बताया, माँ! मैं अपने स्कूल के रास्ते में रोज एक रोटी एक बूंढी माँ को देता था। जो चौराहे के पास भीख माँगा करती थी। कई दिनों से वह नहीं मिली इसलिए उनके हिस्से की रोटी बचाकर अलमारी में रख रहा हूँ। मैं अभी भी वहीं से आ रहा हूँ, अब वह कभी नहीं मिलेगी। उसकी मृत्यु हो गई है। यह कहते हुए जोर-जोर से रोने लगे। माताजी उसे गले से लगाकर सांत्वना देने लगी। एक भिखारिन के प्रति बालक की इतनी गहरी आत्मीयता देखकर माँ का हृदय भर आया। उनकी आँखों में आँसू आ गए। प्रेम विभोर हो कर बोली-बेटा! तुझे जन्म देकर मैं धन्य हो गई। तू मनुष्य नहीं किसी देवता का अंश है।

इस विशाल सहृदयता और आत्मीयता का प्रभाव सुभाष बाबू के समग्र जीवन में झलकता है। जन-जन का दुःख दर्द उनका अपना दुःख बन गया। कदाचित इसीलिए भारत माँ की स्वाधीनता उनका संकल्प बन गया।

संकलन : सुमित्रा राठौड़
ए-बी-22, महावीर नगर,
बाड़मेर (राज.)
मो. 8559805631

मूल्य आधारित शिक्षा

यस सर नहीं, जय भारत

❒ संदीप जोशी

शिक्षा में राष्ट्रीय मूल्य संचारित करने की दृष्टि से बहुत सारे कार्य हो सकते हैं, होते भी हैं। सारी शिक्षा पाठ्यपुस्तक और गृह कार्य के रूप में ही हो, यह आवश्यक नही, अपेक्षित भी नहीं। अनौपचारिक रूप से ....सहजता से सीखी हुई बातें ज्यादा परिणामकारी होती हैं।

छात्र उपस्थिति से जुड़े ऐसे ही दो छोटे से करणीय कार्य यहाँ प्रस्तुत हैं। मूल्याधारित शिक्षा में ये दो उपाय भी उपयोगी सिद्ध होंगे।

सब विद्यालयों की सब कक्षाओं में प्रतिदिन हाजरी भरी जाती हैं/उपस्थिति ली जाती हैं ।

ज़रा विचार कीजिये उस समय विद्यार्थी क्या बोलते हैं ?

अनुमानतः 90% स्कूल में बच्चे बोलते हैं – यस सर ।

हाजरी नम्बर 1 –यस सर

हाजरी नम्बर 2– यस सर

3–यस सर .....।

यह 'यस सर' क्या संस्कार देता है? ..... गुलामी का, जी हजूरी का, बंधन का, हाजरी उठाने का ।

विकल्प–इस 'यस सर' के स्थान पर राष्ट्रीय मूल्य की प्रेरणा देने वाला कोई शब्द हो सकता है जैसे जय भारत अथवा जय हिन्द ।

हाजरी नम्बर 1– जय भारत

हाजरी नम्बर 2 – जय भारत

हाजरी नम्बर 3 – जय भारत ।

कितना अच्छा लगता है ।

यह हो सकता है, मैंने किया हैं ।

मेरी कक्षाओं में बच्चे अनेक वर्षों से उपस्थिति के समय 'यस सर' या 'प्रजेंट सर' नहीं....'जय भारत' कहते हैं।

इस के पीछे के मर्म को भी समझना चाहिए। माना किसी कक्षा में 30 विद्यार्थी हैं ।

तो उपस्थिति के समय 'यस सर' होने से प्रतिदिन हर विद्यार्थी 30 बार 'यस सर–यस सर' सुनता हैं।

एक महीने में लगभग 750–800 बार,

एक साल में लगभग 7000 बार यस सर ...

सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन में यह आंकड़ा लाख बार यस सर तक भी जा सकता हैं।

बचपन में जब संस्कारों की नींव भरी जा रही हो, भावी जीवन का आधार तैयार हो रहा हो .....तब एक लाख बार जी–हजूरी का यह भाव 'यस सर' क्या शिक्षा देगा?

इसके स्थान पर बार बार चारों तरफ 'जय हिंद या जय भारत' होगा तो...वह अपना जीवन भी भारत की जय के लिए लगाने का मन बनाएगा।

बार बार जो शब्द बोला और सुना जाता हैं, उसका संस्कार तो पड़ता ही हैं । 4 –5 वर्ष की आयु से लेकर कम से कम 15–16 वर्ष तक रोज रोज 'यस सर' कहना ठीक हैं या रोज 'जय भारत' कहना?

शिक्षा का एक उद्देश्य राष्ट्रीय चरित्र का गठन करना भी हैं। बीएड. के अध्ययन के दौरान पहला ही प्रश्न पत्र उदीयमान भारत में शिक्षा का हैं। उदीयमान भारत की आकांशा उच्च राष्ट्रीय चरित्र वाली पीढ़ी का निर्माण हैं और इस दृष्टि से उपस्थिति में 'जय भारत' का सामान्य सा दिखने वाला प्रयोग भी एक बड़ी भूमिका निभा सकता है।

मेरी कक्षाओं में बच्चे अनेक वर्षों से उपस्थिति के समय यस सर या प्रजेंट सर नहीं ....जय भारत कहते हैं। एक बार मैंने फेसबुक पर इस सम्बन्ध में लिखा। सबको अच्छा लगा।

सम्भव हैं कुछ स्थानों पर पहले से चल रहा हो, इस फेसबुक पोस्ट के बाद बहुत जगह यह प्रयोग प्रारम्भ हुआ। अब तो अनेक विद्यालयों में उपस्थिति *जय हिंद सर* से होने लगी हैं ।

एक बार व्यक्तिगत बातचीत में 'राजस्थान पत्रिका' के वरिष्ठ पत्रकार प्रदीप बीदावत जी को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने 26 जनवरी, 2017 को गणतंत्र दिवस के कवरेज में इस प्रयोग को विशेष रूप से प्रकाशित किया, 'पाथेय कण' जैसी व्यापक प्रसार वाली पत्रिका में भी इसे स्थान मिला। नागौर के शिक्षक मित्र श्री कमल जांगिड़ जी के विद्यालय में भी यह परम्परा बनी और वहाँ के 'दैनिक भास्कर' में इसे स्थान मिला।

बात निकली तो दूर तक जानी थी,अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि अभी हाल में मध्यप्रदेश के शिक्षामंत्री जी ने इसे राज्य भर में स्थापित करने का निर्णय लिया हैं।

गर्व का विषय हैं कि राजस्थान का शिक्षक भी ,स्वयं प्रेरणा से सर्वत्र जय हिंद–जय भारत करने में प्रयासरत हैं। सभी शिक्षक साथियों से आग्रह हैं कि वे अपनी कक्षाओं में जय भारत/जय हिंद के सम्बोधन से हाजरी लेना प्रारम्भ करें।

2..कक्षा कक्ष उपस्थिति से जुड़ी एक और बात, एक और आग्रह ।

बात बाल मनोविज्ञान से जुड़ी है।

उम्र के हर पड़ाव पर व्यक्ति को खुद का नाम बहुत प्रिय होता हैं। विशेष रूप से छात्र जीवन में तो विद्यार्थी खुद के नाम से बहुत लगाव रखते हैं। कॉपी और किताब में अनेक स्थान पर विद्यार्थी अपना नाम लिखते हैं, तरह तरह से डिजाइन बना कर लिखते हैं। हस्ताक्षर करते रहते हैं।कभी कभी दीवार पर, टेबल पर, अख़बार पर भी यह नाम वाली कलाकारी सहज दिख जाती हैं। कुल मिला कर इस उम्र में खुद का नाम बहुत

प्रिय होता हैं। मगर अक्सर कक्षा कक्ष उपस्थिति नाम से नहीं लेकर हाजरी नम्बर से ली जाती हैं।

क्रमांक की बजाय नाम का प्रयोग ही करना चाहिए। इससे आत्मीयता, अपनापन व परिचय बढ़ता हैं।

क्रमांक से बुलाना थोड़ा औपचारिक जैसा लगता हैं। अप्रत्यक्ष रूप से यह पक्ष छात्र अनुशासन को भी प्रभावित करता हैं। नाम से बुलाने में आत्मीयता झलकती हैं। भारत में विद्यालय को परिवार माना जाता हैं। एक परिवार यदि संयुक्त भी हो और बच्चे ज्यादा हो तब भी उन्हें किसी नम्बर से नहीं बुलाते न ...

फिर विद्यालय परिवार में भी ऐसा हो सकता हैं। परीक्षा में व्यवस्था की दृष्टि से रोल नम्बर जरूरी हैं, वो रहना चाहिए।

पर कक्षा-कक्ष की दैनिक उपस्थिति हाजरी नम्बर की बजाय नाम से हो तो गुरु-शिष्य सम्बन्धों में अपनापन बढ़ेगा, आत्मीयता बढ़ेगी। मनोवैज्ञानिक रूप से छात्र स्वयं को शिक्षक और विद्यालय के ज्यादा निकट महसूस करेंगे।

यह छात्र के हित में हैं,शिक्षक के हित में हैं, विद्यालय के भी हित में हैं।

छोटे छोटे दिखने वाले ऐसे प्रयोग भी मूल्य आधारित शिक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं।

शांति नगर बी ब्लॉक,
रामदेव कॉलोनी, जालोर
मो. 9414544197

चरित्र एक सर्वोपरि सम्पदा

चरित्र की महत्ता पैसे से कहीं बढ़ कर है। जिसने धन के लोभ में चरित्र खो दिया है अथवा चरित्र खोकर धन कमाया है उसने मानो पाप ही कमाया है। चरित्रहीन व्यक्ति का संसार में कहीं भी आदर नहीं होता फिर उसका बैंक बैलेंस कितना ही लम्बा चौड़ा क्यों न हो, इसके विपरीत चरित्रवान व्यक्ति निर्धनता की दशा में भी सब जगह सम्मान की दृष्टि से ही देखा जाता है।

अंग्रेजी भाषा शिक्षण कौशल

❐ भुवनेश स्वामी

सामान्यतः यही देखा गया है कि बोर्ड परीक्षाओं में अंग्रेजी को लेकर हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों में भय व्याप्त रहता है। विशेष रूप से ग्रामीण अँचल के विद्यार्थियों को तो बोर्ड का अंग्रेजी का प्रश्न पत्र संकट समान ही लगता है। यहाँ तक कि विद्यार्थी तो विद्यार्थी, शिक्षकों को भी विद्यार्थियों को अंग्रेजी में अच्छे अंक दिलवाना कठिन लगता है।

तो पहले यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि बोर्ड परीक्षा तथा इसमें अंग्रेजी के सिलेबस का उद्देश्य क्या है? इस परीक्षा का वास्तविक उद्देश्य भाषायी मापदंडो के माध्यम से यह जानने का प्रयास करना है कि एक वर्ष में विद्यार्थी ने अंग्रेजी भाषा की कितनी समझ विकसित की है। अंग्रेजी भाषा को कितनी सहजता से वह प्रयोग में ले पाने में सक्षम हुआ है, किस स्तर की भाषायी अभिरुचि व भाषायी कौशल का वह निर्माण कर पाया है। अपनी समझ के अनुसार वह किस प्रकार का उत्तर लिख सकता है तथा क्या उसमें यह क्षमता विकसित हो गई है कि वह अंग्रेजी बिना कठिनाई लिख तथा पढ़ सकता है।

वास्तव में यह सिलेबस विद्यार्थियों को भविष्य में अंग्रेजी सम्बन्धित चुनौतियों के लिए तैयार करता है। अब गौर करते हैं कुछ विधियों पर जो शिक्षक व विद्यार्थी के आपसी तालमेल व सहयोग पर आधारित है। इनके प्रयोग से न केवल बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकेंगे बल्कि अंग्रेजी भाषा कौशल की आधारशिला भी तैयार होगी।

1. Handwriting:-"First impression is the last impression" जिसने भी लिखा है एकदम सटीक लिखा है। विद्यार्थी ने भले ही वर्ष भर कड़ी मेहनत की हो, परंतु यदि उसकी हेंडराइटिंग अस्त-व्यस्त है तो आशा के अनुरूप अंक नहीं प्राप्त होंगे और इसके विपरीत यदि Handwriting सुन्दर तथा प्रभावशाली है तो अंक तो विद्यार्थी उस प्रश्न में पहले से ही प्राप्त कर लेगा।

अतः जिन विद्यार्थियों की Handwriting अच्छी नहीं हैं, शिक्षक अगर गृहकार्य के साथ उन्हें एक छोटा गद्यांश रोज लिखने के लिए दे तो एक महीने में ही प्रत्यक्ष रूप से निखार दिखाई देगा। अगर इसका आरम्भ A.B.C. से भी करना पड़े तो भी उसमें कोई हर्ज नहीं होना चाहिए। अच्छी Handwriting निश्चित रूप से अच्छे अंको से उत्तीर्ण होने की सम्भावनाओं को प्रबल करेगी।

Regular test and writing practice :-
अंग्रेजी में कहावत है-

2. "constant dropping wears the stone away" लगातार अभ्यास से क्या सम्भव नहीं है। विद्यार्थी Test के माध्यम से जितना अधिक लिखेगा, उतना ही परीक्षा के लिए उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा। बोर्ड परीक्षा में बाकी रहे समय को देखते हुए अब आवश्यक है कि अंग्रेजी का शिक्षक हर सप्ताह में 2 टेस्ट लेकर यह जानेगा कि विद्यार्थी के उत्तर लेखन में कौनसे सुधारों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए-लिखते समय कुछ विद्यार्थी हाशिये से काफी आगे लिख देते हैं। ऐसी गलतियों में शिक्षक बताए कि इतना आगे न लिखा जाए तथा उस स्थान को उत्तर लेखन में विधिवत रूप से प्रयोग में लिया जाए।

अगर पर्याप्त समय रहे तो हर दिन 5-10 मिनट कक्षा आरम्भ होते ही कठिन प्रश्नों के उत्तर बार-बार लिखवाकर भी अभ्यास से लेखन क्षमता को सुदृढ़ किया जा सकता है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि विद्यार्थी द्वारा आरम्भ से गलत-सलत लिखना समस्या नहीं है वो तो आरम्भ में होगी ही। महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि निरन्तरता से अभ्यास होता रहे।

3. Revision:- अच्छे अंक प्राप्त करने का रहस्य अधिक से अधिक याद करना नहीं बल्कि अधिक से अधिक बार दोहराना है। शिक्षाविदों के अनुसार अगर किसी पाठ को 5 बार 'रिवाइज' कर लिया जाए तो वह कंठस्थ हो जाता है। इसकी प्रकिया इस प्रकार होगी प्रथम बार प्रश्न याद करने के तुरंत बाद में, दूसरा उसी दिन सोने से पहले, तीसरा अगले दिन नए को आरम्भ करने से पूर्व, चौथा रविवार या अवकाश के दिन तथा पाँचवा महीने के अंत में। इस प्रकार

किए 'रिविजन' से उसको परीक्षा से पहले केवल सरसरी निगाह से देखना भर होता है तथा उत्तर मस्तिष्क में ऐसे सजीव हो उठता है जैसे आज ही याद किया हो।

4. Performa:- गणित में जैसे तरीके के अंक होते है वैसे ही अंग्रेजी Composition में भी Performa सही लिखने के अंक होते है। letter, Notice, Application, speech etc. इन सभी के अपने विशेष Performa है। कहा जा सकता है कि 10 में से 3 अंक इसी के लिए निर्धारित है। अतः शिक्षक performa के अभ्यास पर विशेष ध्यान दें।

5. use of English by teacher :- प्रायः यही दृष्टिगत होता है कि अंग्रेजी का शिक्षक भी हिन्दी भाषा का प्रयोग करके अंग्रेजी शिक्षण कर रहा है। एक दृष्टिकोण से यह उचित भी लगता है, अन्यथा विद्यार्थी समझेगा कैसे? परन्तु दूसरा दृष्टिकोण अधिक उचित लगता है जिसमें 80:20 के अनुपात में हिन्दी व अंग्रेजी का प्रयोग हो, लिखने व पढ़ने की तरह सुनना भी भाषायी विकास में सहायक है अगर कुछ विशेष वाक्यों को विद्यार्थी बार-बार शिक्षक से सुनेगा तो निश्चित रूप से आवश्यकता होने पर उनका प्रयोग भी कर सकेगा। लगातार सुनने के अभ्यास से विद्यार्थी अलग-अलग Sentence Pattern को भी समझने लग जाएगा। बहुत कम शिक्षा के बाद भी 5-6 भाषाओं को फर्राटेदार रूप से बोलने वाले टुरिस्ट गाइडों के बारे में आपने भी सुना होगा। वे सीखते टुरिस्टों से ही तो है। कुछ इस प्रकार के वाक्य कक्षा में प्रयोग हो सकते है।

Let us start the class
why you did not do your home work?
we shall meet tomorrow.

बाकी शिक्षक आवश्यकता के अनुसार किन्हीं भी वाक्यों का प्रयोग कर सकते हैं।

6. Learning difficult words:- कठिन शब्दों को याद करना भी कई बार विद्यार्थियों के लिए कठिन हो जाता है और यह भली भाँति हमें ज्ञात है कि गलत स्पेलिंग के अंक भी काट लिए जाते हैं। इसका सामान्य उपाय लिख-लिखकर अभ्यास करना माना गया है। एक विधि और है जिसका प्रयोग अगर अभ्यास से सीख लिया जाए तो यह विधि वरदान स्वरूप है। इस विधि का नाम है Mnemonics. इसमें शब्दों को तोड़कर मस्तिष्क में काल्पनिक दृश्यों या चित्रों को बनाकर शब्द याद किया जाता है। बाजार में इससे सम्बन्धित साहित्य भी उपलब्ध है।

उदाहरण के लिए :- Belittle का अर्थ है छोटा करना या अधिकार समाप्त करना, तो इसे याद करने के लिए हम तोड़ेंगे तथा बाद में कल्पना से कोई सम्बन्ध बनाकर शब्द को जोड़ेंगे। एक मधुमक्खी(Bee) जो छोटी होती जा रही है (little), तो हो गया Belittle। एक मुश्किल शब्द लेते है Judicious (समझदार) एक जुं (Ju) जो (D) आकार की है (ci) देखती है (us) हमें और इसलिये वह समझदार है। तो हो गया Judicious मतलब 'समझदार'। ऐसे बार-बार कल्पना में लाने तथा लिखने से शब्द के साथ दृश्य जुड़ जाएगा तथा कल्पना में रहेगा।

7. Practice of Basic sentence pattern :- यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विधि है। अगर इसका प्रयोग अभ्यास में आ जाए तो विद्यार्थी हर प्रश्न का उत्तर लिख पाने में सक्षम हो सकता है। फिर चाहे वह उत्तर भूल गया हो या याद किया हुआ प्रश्न न आया हो। वैसे भी बोर्ड परीक्षा में सभी प्रश्नों के उत्तर सही कर देना सम्भव नहीं है ऐसे में इस Basic sentence pattern का अभ्यास जहाँ मेधावी विद्यार्थियों को बेहतरीन अंक दिला सकता है वहीं भाषायी दृष्टिकोण से कमजोर विद्यार्थियों को निश्चित रूप से उत्तीर्ण करा सकता है।

अंग्रेजी का सबसे महत्त्वपूर्ण Structure है Subject + verb + object यह पेटर्न एक सामान्य वाक्य निर्माण के लिए पर्याप्त है। 70% वाक्य इसी पेटर्न पर आधारित होते है मान लीजिए कि Best Teacher पर लिखा है तो इस प्रकार लिखा जा सकता है।

Mr. Ram sharma is my
favourite teacher.
He teaches english.
He gives home work daily.
He likes teaching.
He loves all studeuts. etc

सभी वाक्य sub. + verb + obj. के पेटर्न पर आधारित है। इस प्रकार किसी भी प्रश्न का उत्तर एक बार तो लिखा ही जा सकता है। बशर्ते पूर्व में अभ्यास किया हुआ हो।

8. Attempting each question:- विद्यार्थी के मस्तिष्क में यह बात बिठा देनी आवश्यक है कि कोई भी प्रश्न छोड़ना तो है ही नहीं, न आने वाले प्रश्नों को वह basic sentence pattern से हल करें जो पिछली विधि में स्पष्ट किया गया है।

मान लीजिए विद्यार्थी ने 30 में से 24-25 प्रश्न किए तथा 5-6 वह किसी कारण से छोड़ रहा है, परन्तु समझ के अनुसार यदि वह कैसे भी इनको हल करने का प्रयत्न करे तो 8-10 अंक तो उसकी झोली में आ ही जाएँगे जो परसेन्टेज लाने में महत्त्वपूर्ण साबित होंगे।

9. Composition:- प्रश्न पत्र के कुल अंको में से लगभग आधे अंक केवल Composition के हैं। इसके प्रश्न विद्यार्थी के भाषा स्तर व कौशल का परीक्षण करते हैं। इसलिए इन्हें तो अतिरिक्त समय व अभ्यास दिया जाना आवश्यक है ही। शिक्षक निम्न विधि से इनका अभ्यास करवा सकते हैं। शिक्षक पहले तो Topic के Tense को स्पष्ट कर दे ताकि विद्यार्थी अतिरिक्त प्रयास से बचे। अब शिक्षक सभी वाक्यों के एक-एक शब्द की हिन्दी तथा बाद में वाक्य को Grammar के दृष्टिकोण से समझाए कि देखिये यह Past की घटना है अतः past simple का प्रयोग हो रहा है या वर्तमान काल का Topic जैसे Letter है तो Present simple का प्रयोग होगा। ध्यान रहे कि एक समय में एक ही वाक्य पर ध्यान दे, इसके पश्चात दूसरी लाइन पर कार्य हो। बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है। मेहनत अवश्य रंग लाएगी तथा सभी लाइन कंठस्थ हो जाएगी।

इस Drilling अभ्यास से Composition में अच्छे वाक्य सुनिश्चित किए जा सकते हैं और अच्छी बात यह है कि इस अभ्यास में Grammar के भी Topic कवर किए जा सकेंगे और अंत में सबसे महत्त्वपूर्ण है प्रेरणा, जो विद्यार्थी को शिक्षक से मिलती है। इसके अभाव में कुछ भी संभव नहीं। भाषायी तौर पर हिन्दी माध्यम के विद्यार्थी अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों से पिछड़ जाते हैं। अतः हम शिक्षकों का दायित्व है कि विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाएँ। ये प्रयोग नए लग सकते हैं परंतु इनका प्रयोग करने में कोई हानि भी नहीं है।

यदि शिक्षक प्रतिदिन आत्मप्रेरणा से इन विधियों का कक्षा में प्रयोग करे व अभ्यास करवाए तो चमत्कृत कर देने वाले परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं।

व्याख्याता, रा.आ.उ.मा.वि, अयाना, कोटा
मो. 8385933498

कक्षा-कक्ष में अभिव्यक्ति

भाषा : स्वतंत्रता एवं अवसर

❐ प्रमोद दीक्षित 'मलय'

शिक्षा और भाषा के मुद्दों पर काम करने के कारण अक्सर विद्यालयों में जाना होता है। बच्चों के साथ बैठना और उनसे बातें करना भी मेरे काम में शामिल होता है। तो विद्यालयों में भ्रमण के दौरान स्पष्ट रूप से यह देखने में आया कि शिक्षण में नवाचारों के प्रयोग और बालकेंद्रित प्रयासों को गति देने के आग्रहों के बाद भी शिक्षकों के अध्यापन के तौर-तरीके न केवल परम्परागत शिक्षक केंद्रित, भय एवं दण्ड प्रधान है बल्कि शिक्षक कक्षा का वातावरण बोझिल, अरुचिकर और नीरस बनाए रखने के लिए जिम्मेवार भी हैं। कुछ स्वप्रेरित शिक्षकों को छोड़कर अभी भी शिक्षकों के एक बड़े हिस्से द्वारा ऐसे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं किए जा रहे हैं जिससे बच्चों को विद्यालय अपनी स्वप्निल जगह लगे। हम बच्चों को यह एहसास नहीं दिला पाए हैं कि विद्यालय वह रचनात्मक स्थान है जहाँ वे अपने सपनों की उड़ान भर सकते हैं, कल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकते हैं। विद्यालय उस फलक की तरह नहीं उभर पाया जहाँ बच्चे मौलिक चिंतन को अभिव्यक्त कर सकें और विचारों का आदान-प्रदान कर सकें। कक्षा में प्रस्तुत विषय पर उनके अभिमत देने के लिए कोई जगह नहीं बन सकी है। आज भी बच्चों के दिलो-दिमाग में शिक्षक हावी है। विद्यालय उसे अपना-सा लगे और यह तभी संभव होगा जब शिक्षकों को हर बच्चा अपना-सा लगने लगे।

एक प्राथमिक विद्यालय में मेरा जाना हुआ। मैं बरामदे में प्रधानाध्यापक के साथ बैठा था। वे विद्यालय के अभिलेख एवं पंजिकाएँ आदि दिखा रहे थे। निश्चित रूप से सभी पंजिकाएँ साफ-सुथरी, सुन्दर लिखावट में थीं। बगल के कक्ष से किसी शिक्षक के पढ़ाने की ध्वनि आ रही थी। सम्भवतः भाषा की कक्षा थी। शिक्षक गाय पर निबन्ध लिखा रहे थे। निबन्ध कुछ इस प्रकार था, 'गाय के चार पैर होते हैं, गाय के दो आँखें, दो कान, दो सींग होते हैं। एक लम्बी पूँछ होती है। चार थन होते हैं। गाय विविध रंग की होती है। गाय भूसा खाती है। गाय गोबर करती है। गाय हमारी माता है, आदि।' फिर शिक्षक का आदेशात्मक स्वर गूँजा, 'इस निबन्ध को अच्छी तरह से रट लेना, कल सुनूँगा।' शिक्षक महोदय एक विशेष प्रकार का संतुष्टि का भाव लिए उस कक्षा से निकलकर दूसरी कक्षा में चले गए। कहना पड़ेगा कि शिक्षक ने अपनी ओर से भरपूर मेहनत की है। लेकिन क्या इस पूरे पीरियड में एन.सी.एफ.-2005 का तनिक भी असर दिखा। क्या बच्चों का परिवेश से सम्बंध जुड़ पाया? क्या बच्चों के मन में उमड़ते प्रश्नों को स्थान मिल पाया है? क्या पूरे समय में बच्चों के मन की बातें जानने की कोई कोशिश हुई या बच्चों को गाय को लेकर उनके अपने अनुभव साझा करने के अवसर मिले? एक ही उत्तर मिलेगा- नहीं, बिल्कुल नहीं।

मैं आश्चर्यचकित था कि एक शिक्षक इस प्रकार कैसे पढ़ा सकता है। अब मेरे लिए अवसर मुँह बाए खड़ा था कि मैं उस कक्षा में प्रवेश करूँ और बच्चों से बातचीत करूँ। मेरे कक्षा में जाते ही बच्चे सहम-से गये और खिड़की से बाहर झाँक रहे बच्चे चुप होकर बैठ गए। मैं अनुभव कर रहा था कि बच्चों में एक डर छुपा बैठा है, लेकिन उनमें मेरे बारे में जानने की उत्सुकता थी। मेरे पीछे विद्यालय के प्रधानाध्यापक भी खड़े थे। उन्होंने बच्चों से कहा, ''चुपचाप सीधे बैठो, ये हमारे अधिकारी है। बी.आर.सी. से आए हैं। जो कुछ पूछा जाए सही-सही बताना।'' यह कहते हुए वे कक्षा में घूम रहे थे और बिना किसी बात के दो-तीन बच्चों के सिरों पर हल्की चपत भी लगायी। मेरे मना करने पर बोले, ''सर, मैं अनुशासन के मामले में बहुत कड़ा आदमी हूँ, मेरे रहते बच्चों की मजाल नहीं है कि कोई टस से मस हो जाएँ।''

मैंने उनसे कहा कि ''मैं बच्चों से अकेले में बात करना चाहता हूँ।'' वे यह कहते हुए बाहर निकल गए कि यदि बच्चे शोर या मुझे परेशान करें तो मैं उन्हें तुरन्त बुला लूँ। मैंने कहा कि ''आपकी जरूरत नहीं पड़ेगी।'' अब कक्षा में केवल मैं और बच्चे थे। मैंने बच्चों को अपना परिचय दिया और उनसे भी उनका परिचय देने को कहा। एक भी बच्चा नहीं बोला। सभी सिर झुकाए बैठे रहे। मैंने कई बार कोशिश की। एक भी बच्चे ने नाम नहीं बताया। मैंने एक लड़के को उसका नाम बताने को संकेत किया। वह पैरों की कैंची बनाए और हाथों की अँगुलियों को आपस में फँसाये सिर झुकाए खड़ा हो गया। मैंने देखा वह सिर झुकाए पैर के अँगूठे से फर्श पर कुरेदने जैसा काम कर रहा था और अँगुलियाँ तोड़-मरोड़ रहा था। एक लड़की से पूछा तो उसने अपनी शर्ट का कोना पकड़े छत पर निगाहें जमा ली। इसी तरह और दो-तीन बच्चों से उनका परिचय जानना चाहा लेकिन वे अबोले ही रहे। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि बच्चे अपने नाम क्यों नहीं बता पा रहे। मैं सोच रहा था कि क्या करूँ, कहाँ से बात शुरू करूँ। तभी, शायद कक्षा में नजर जमाए बरामदे में खड़े, प्रधानाध्यापक चिल्लाए, ''अरे, मुँह में दही जमाए हो क्या। क्यों नहीं बोलते, वैसे तो आसमान सर पे उठाए रहते हो।''

मुझसे बोले, ''सर आपसे डर रहे हैं, इसीलिए नहीं बोल रहे।'' मैंने बच्चों से मेरे चेहरे की ओर देखने को कहा और मैंने अपने चेहरे पर विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनाई तो वे सब खिलाखिला कर हँस पड़े, उनके साथ मैं भी हँस पड़ा। कक्षा का वातावरण थोड़ा हल्का हुआ। अब वे मुझसे नजरें मिला रहे थे। मैंने ब्लैकबोर्ड कुछ क्रिया शब्द लिखे- हँसना, रोना, दौड़ना, डरना, गुस्सा करना, चिल्लाना आदि। मैंने बच्चों से पढ़ने को कहा। कुछ पढ़ पाए, कुछ नहीं। अब मैंने कहा कि मैं इनमें से कोई शब्द पढ़ूँगा और आप सब वैसी क्रिया-अभिनय करेंगे। मैंने पढ़ा-रोना। बच्चों ने कुछ भी नहीं किया। मैंने कई बार कोशिश की लेकिन बच्चों ने नहीं किया। उन्हें शायद शर्म आ रही थी। वे कुछ झिझक रहे थे। उनके लिए सम्भवतः यह सब पहली बार हो रहा था। मैंने प्रक्रिया में बदलाव किया। अच्छा तो आप में से कोई एक शब्द पढ़ो और मैं वह क्रिया करूँगा। लेकिन शब्द पढ़ने से पहले अपना परिचय भी देंगे। एक लड़की सकुचाती-सी खड़ी हुई और अपना नाम 'रजनी' बोलते हुए

शब्द पढ़ा–रोना। तो मैं रोने का अभिनय करते हुए रोने लगा। बच्चे खूब हँसे तालियाँ बजाकर। फिर दूसरे बच्चे ने अपना नाम 'राज' बोला और शब्द पढ़ा– डरना। तो मैंने डरने की क्रिया की। अब बच्चे बातचीत का मजा लेने लगे थे। हर कोई अपना परिचय देना, शब्द पढ़ना और मुझे वैसी क्रिया करते देखना चाहता था। शब्द पढ़ने हेतु खड़े होने के लिए बच्चों में होड़–सी शुरु हो गई। वे 'अब मैं..... अब मैं..... ' अपना नाम बोलते और हाथ से अपने सीने की ओर संकेत करते खड़े होने लगे। इस कारण कक्षा में थोड़ा अफरातफरी का माहौल बन गया और शोरगुल भी होने लगा। मैंने कहा कि सबको मौका मिलेगा। आप सब अपनी–अपनी जगह पर बैठिए। कक्षा में बिल्कुल शान्ति छा गई और वे सब मेरे चेहरे की ओर टकटकी लगाए देखने लगे। मैं बोला कि अब मैं कोई भी शब्द बोलूँगा और आप सब एक साथ चेहरे पर वैसा भाव लाते हुए क्रिया करेंगे। मैंने कहा रोटी, तो बच्चों ने रोटी बनाने और खाने का भाव प्रदर्शन किया। नींबू कहने पर उनके चेहरे पर खट्टेपन के भाव उभरे। ऐसे ही जलेबी, गन्ना, मिर्च, दाल–चावल, जाड़ा आदि शब्द बोले, बच्चों ने उसी प्रकार की अभिव्यक्ति की।

अब बच्चे बिल्कुल खुलकर बातें कर रहे थे। मैं तो बच्चों को गाय पर निबन्ध लिखने के बारे में बात करने आया था। तो उस दिशा में बच्चों को मोड़ते हुए बातचीत का सिलसिला प्रारम्भ किया। तो बताओ, आप लोगों में से किस–किस के पास कोई जानवर है। बच्चे बताने लगे–बैल, भैंस, गाय, कुत्ता, बकरी, भेड़, पड़वा (नर भैंस), बिल्ली, सुअर आदि। बच्चों ने बातचीत में यह भी बताया कि ये जानवर क्या काम करते हैं। खेती–किसानी और अन्य कार्यों में इनकी क्या उपयोगिता है। यदि ये जानवर न हो तो फिर ये काम कैसे निबटाए जाएँगे। बच्चों ने इस पर भी अपने विचार रखे। अच्छा गाय किनके पास है। लगभग तीन चौथाई बच्चों के हाथ ऊपर उठ चुके थे। ''आप लोग गाय के साथ क्या करते हो। परिवार के अन्य लोग क्या करते हैं? सुबह से शाम तक गाय के साथ क्या–क्या घटित होता है। तो आप लोग गाय के साथ जैसा भी कार्य–व्यवहार देखते हैं, उन अनुभवों को लिखना है। यह आपका अपना निबन्ध होगा। जिनके पास गाय नहीं है वे अपने पड़ोसी की गाय पर अपना अनुभव लिख लाएँगे।'' तभी एक लड़की ने कहा कि ''अभी तो सर ने एक निबन्ध लिखाया है तो उसका क्या।'' मैंने कहा ''वह एक सूचना है कि अगर कोई जानवर इस प्रकार की पहचान का हो तो उसे गाय कहा जाएगा। ठीक है, कल हम लोग फिर मिलेंगे तो आगे बात करेंगे।''

मैं घर आ गया था। अपनी डायरी में आज दिनभर की गतिविधियों को दर्ज करते हुए आँखों से नींद गायब थी। सुबह का बेसब्री से इन्तजार था। बच्चे क्या लिखेंगे, कैसे लिखेंगे, यह सब पढ़ने की मन में आतुरता थी। ऐसा लग रहा था कि आज की रात जैसे दो रातों को मिलाकर एक रात बना दी गयी हो। लेकिन सुबह तो होनी ही थी।

दूसरे दिन जब विद्यालय पहुँचा तो बच्चे इन्तजार करते मिले। मुझे देखते ही सब अपनी–अपनी कापियाँ लेकर निबन्ध दिखाने दौड़ पड़े। हर कोई अपनी कापी पहले दिखा लेना चाहता था। मैंने सभी के निबन्ध देखे। मैं आश्चर्यचकित था कि ये कल के वही बच्चे हैं जो बोल–लिख नहीं पा रहे थे और आज गाय पर अपने अनुभवों के आधार पर निबन्ध लिख कर लाए हैं। सबने अपने निबन्ध गाय के साथ उनके निजी सम्बंधों के आधार पर लिखा था। बहुत प्यारी बातें उभर कर आई थी। गाय और उससे जुड़ी हर छोटी–बड़ी बात को बच्चों ने बखूबी लिखने की कोशिश की थी। उनके लेखन में वर्तनी की बहुत अशुद्धियाँ थी लेकिन भाषा उनकी अपनी थी जिसमें उनके परिवेश की बोली के शब्द घुल–मिले थे। भाव और उनका प्रवाह सहज था। मौलिक चिन्तन तो था ही, कल्पना को व्यक्त होने का भरपूर अवसर भी मिला था। हर निबन्ध में उनकी अपनी छाप थी। लेकिन दो कापियाँ देखकर मैं ठिठका। दोनों में बहुत समानताएँ थीं। दोनों कापियों में लगभग एक जैसी बातें लिखी गई थी। राहुल ने लिखा था, ''मेरा बाबू पार साल बल्लान गाँव के चम्भू बाबा के मेला से एक गाय लाया है। गाय के एक बछवा है। बाबू खेत से हरियार (हरी घास) लाता है और कटिया मशीन से कतर कै भूसे मा मिलाते है। अम्मा भूसे में खरी (खली) से सानी लगाती है और दोहनी करती है। दोहने में मैं भूसा में पिसान धुरुकता हूँ और गाय ढाई लीटर दूध देती है। बाबू सुबेरे पहर का दो लीटर दूध बेच आता है। वहै पैसे का आलू–भांटा लाते है और कापी, पेन लाता है। इतवार का दूध अम्मा औट लेती है और मिठई बनाती है। एक पहरे का दूध का माठा भांते है तौ नेनू निकर आता है तौ रोटी मा चुपर लेते है। नेनू टघराय के एक किलो घी जुहा लिया है। गोबर से अम्मा कंडा पाथती है और सुखा जाने पर चुल्हा मा रोटी बनाने को आग बारते है। मैं रोज सुबेरे और स्कूल से लौटने के बाद बछवा को खेलाता हूँ और उसके साथ–साथ दौड़ता हूँ। गाय पहले सबका मारती थी पर अब नहीं मारती है।'' यह निबन्ध पढ़कर मन खुश हो गया। बच्चे के अपने भाव, उसकी अपनी भाषा में, मातृभाषा में जैसे किसी सरोवर से डुबकी लगा–लगाकर बाहर निकल रहे हों। दूसरी कॉपी आकांक्षा की थी। उसने राहुल की बातों से मिलती–जुलती बातें पूछ लिखी थीं। मैंने पूछा ''दोनों की कापियों में ये बातें एक जैसी कैसे हैं?'' उनके उत्तर सोचने को मजबूर कर रहे थे। राहुल का कहना था कि उसकी अपनी गाय के साथ दिनभर जो होता है उसे वह देखता है, उसी को लिखा है। आकांक्षा ने कहा कि उसके पास गाय नहीं है। उसने जो निबन्ध लिखा है वह राहुल की गाय पर है। राहुल उसके पड़ोस में रहता है। राहुल और उसके मम्मी–पापा जो कुछ भी गाय के साथ दिनभर करते हैं उसे वह देखती है। उसी आधार पर यह निबन्ध लिखा है। बच्चों का यह प्रयास दिल को सुकून दे रहा था। कुछ बच्चों ने यह भी बताया कि उन्होंने अपने पालतू कुत्तों पर भी इसी प्रकार निबन्ध लिखा है। मैं बच्चों में निबन्ध लेखन की बन गई एक सामान्य समझ देख पा रहा था।

मैं सोच रहा था कि हमारे शिक्षक बच्चों को लेखन के, अभिव्यक्ति के ऐसे मौलिक अवसर क्यों नहीं उपलब्ध करा पा रहे। बच्चों को मौलिक चिंतन के पर्याप्त अवसर दिए जाने चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 में इस बात की बार बार अनुशंसा की गई है कि बच्चों को रटने के बजाय उनमें समझ विकसित करते हुए मौलिक चिंतन–मनन के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। हम अपने तरीके लाद कर कहीं बच्चों की सोचने–समझने की, उसकी मौलिक और प्राकृतिक सोच को कुंद और धारहीन तो नहीं कर रहे, सोचना पड़ेगा।

सहसमन्वयक (हिन्दी)
ब्लॉक संसाधन केन्द्र नरैनी
79/18, शास्त्री नगर, अतर्रा–210201,
जिला–बांदा, उ. प्र.
मो. 9452085234

संस्कार

व्यसन मुक्त बालक-राष्ट्र का गौरव

❒ रमेशचन्द्र दाधीच

'ड्रग सेवन से बालक अवसाद में। बालक ने सहपाठी को गोली मारी। कक्षा में चले लात घूसे। छात्र ने अध्यापक के साथ किया दुर्व्यवहार। बालक ने घर में चोरी की।' उपर्युक्त सुर्खियाँ देश-विदेश के समाचार पत्रों में नित्य हमें देखने को मिलती है। हो सकता है ये घटनाएँ वर्तमान में हमारे राज्य में कम हो। लेकिन इन घटनाओं का अंकुरण-अस्तित्व है। बालक अपराधी-ऐसा क्यो? क्या समाधान? उपर्युक्त बिन्दुओं पर थोड़ा सा मंथन करें तो हम पाएँगे कि इसमें कहीं न कहीं बालक की संगति एवं ड्रग्स (नशा) की उपलब्धता है।

जैसा कि भारतवर्ष ऋषि मुनियों की जननी पुण्यधरा है। उन्हीं महापुरुषों के पौरुष के बल पर ही हमारी मातृभूमि 'विश्वगुरु' के पद से सुशोभित हुई। इसके मूल में संस्कारवान शिक्षा, माता-पिता व गुरु का आज्ञापालन, बुजुर्गों एवं महापुरुषों की व्यसन मुक्त जीवन शैली, सात्विक भोजन, शुद्ध आचार-विचार तथा शुद्ध वातावरण है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र-21वीं सदी हमारे देश को विकासशील से विकसित बनाने की सदी है। इस बात में कोई संदेह नहीं कि विकास की गाड़ी पटरी पर चल चुकी है। लेकिन गति धीमी एवं बाधा युक्त है। जिन्हें हमारा राष्ट्र निश्चित रूप से पार पाएगा। लेकिन-नशा, व्यसन, ड्रग्स, तंबाकू, पान-मसाला, अफीम, गांजा, चरस, हेरोईन, कोकीन, ब्राउन सुगर, अनियंत्रित मोबाइल, टी.वी. का उपयोग, social media, facebook, आदि जिनका नाम हमारे बचपन में सुनने में भी नहीं आता था; ये सभी दुर्गुण देश की वास्तविक संपत्ति बालक के शरीर, मनःमस्तिष्क को खोखला करने लग गए हैं। जिसके दुष्प्रभाव से लती, व्यसनी, नशेड़ी नागरिक तैयार होंगे।

आवश्यकता है समय रहते त्वरित गति से इस जहर से बालकों को बचाना।

व्यसन के दुष्प्रभाव-

शारीरिक दुष्प्रभाव : प्रतिरोधक क्षमता में कमी, असाध्य रोगों का प्रादुर्भाव, शारीरिक दुर्बलता, असामयिक मृत्यु। (उच्च रक्तचाप, हृदयघात, कैंसर, अस्थमा, मधुमेह आदि)

सामाजिक दुष्प्रभाव : समाज में गरीबी, बीमारी, अपराध, आतंक, बाल यौन शोषण, यौन अपराध। चोरी, डकैती, हत्या, आत्महत्या की वृद्धि।

आर्थिक दुष्प्रभाव : सम्पूर्ण देश में प्रतिवर्ष 14 खरब रुपये की धनराशि नशे पर खर्च होती है। उसी अनुपात में नशे से उत्पन्न रोगों के उपचार में खर्च होती है तथा उसी अनुपात में अपराध नियंत्रण, अपराध रोकथाम में राष्ट्रीय सम्पत्ति का खर्च करना होता है।

व्यसन की लत लगने में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक हैं :-

- सात्विक भोजन एवं सात्विक विचारों का अभाव।
- अनियंत्रित जीवन शैली, स्वच्छन्दता का विस्तार।
- अश्लील साहित्य।
- असामाजिक लोगों एवं समुदायों से संपर्क।
- असामाजिक गतिविधियों को प्रोत्साहन व समर्थन।

अंग्रेजी में भी कहा गया है-

If you lost your wealth, Nothing is lost.
If you lost your health, something is lost.
If you lost your character, everything is lost.

इसी क्रम में व्यसन से बचाव (चरित्र के बचाव) के उपाय-

पारिवारिक स्तर पर-एस.डी.एम.सी. एवं पी.टी.ए. में अभिभावकों को घरेलू स्तर पर निम्नांकित गतिविधियों से अवगत करवाया जाना अपेक्षित है।

- अभिभावक बालकों को सात्विक भोजन एवं सात्विक विचारों की खुराक उपलब्ध कराएँ।
- अभिभावक बालकों की संगति, मित्रों तथा दैनिक गतिविधियों पर नजर रखें। साथ ही टी.वी. मोबाइल व सोशल मीडिया के नियंत्रित उपयोग पर ध्यान दें। बंद कमरे की संस्कृति को रोकें।
- बालक मनोरंजन व खेल के साथ दैनिक कार्यक्रमानुसार अध्ययन पर ध्यान दें।
- बालकों को माता-पिता समय दें। उचित आवश्यकताओं की पूर्ति करें तथा वर्ष में अवकाश के दौरान 'पारिवारिक भ्रमण (देशाटन)' करें।

विद्यालय स्तर पर-

- प्रार्थना सभा में 'नशा नहीं करने का' संकल्प दिलवाया जाए।
- प्रार्थना सभा में-सात्विक साहित्य एवं महापुरुषों के अनुकरणीय कार्यों की जानकारी दी जाए।
- प्रार्थना सभा में नाड़ी शोधन, भ्रामरी प्राणायाम, प्राणाकर्षण प्राणायाम आदि करवाए जाए। सूर्य नमस्कार प्रभावी सिद्ध होगा।
- राज्य सरकार के आदेशानुसार 'नशीली सामग्री मुक्त' विद्यालय पर्यावरण।
- सतोगुणी मन बनाया जाए।
- सृजनशील, रचनात्मक गतिविधियों में व्यस्त रखा जाए।

उपसंहार-राजस्थान के छात्र वर्ग में अभी 'नशा' का जहर नहीं घुल पाया है लेकिन पैर पसारने प्रारंभ कर दिये है। समय रहते सावधानी नहीं बरती गई तो बाद में इसका इलाज कठिन होगा। पूर्ण विश्वास के साथ उपर्युक्त प्रकल्प निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होंगे तथा न केवल राजस्थान अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष सृजनशील, रचनात्मक, विकसित एवं प्रभाव शाली राष्ट्र बनेगा तथा विश्व सिरमौर होगा।

प्राध्यापक
राज. जैन गुरुकुल उ.मा.वि.,
ब्यावर, अजमेर (राज.)
मो. 9413843202

विद्यादानं परमं दानं

मनोविज्ञान

प्रतिस्पर्धा में पिसता बचपन

❒ तन्मय पालीवाल

पाँच वर्षीय माधव कक्ष में रट-रट कर पाठ याद कर रहा हैं, बीच-बीच में उसकी माँ रोहिणी गलत याद करने पर उसे थोड़ा झिड़कती है तो थोड़ा प्यार से समझाती है। इस दौरान माँ तनावग्रस्त व माधव रूपी बचपन कुम्हलाया-सा प्रतीत होता है।

उक्त काल्पनिक लघु चित्रण कमोबेश शहरी भारतीय समाज का सत्य प्रतिरूप कहा जाए तो भी अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। एक दौर था जब बचपन की अपनी मौज-मस्ती, उमंग, उत्साह, नटखटपन, शरारतों एवं मासुमियत के साक्षात् दर्शन यत्र-तत्र हो जाया करते थे किंतु अब बचपन रूपी स्वर्णिम अवस्था अपनों की महत्त्वाकांक्षाओं की भेंट चढ़ रही है तो यह निःसंदेह चिंतनीय एवं विचारणीय स्थिति है। इस प्रकार के हालात विशेष रूप से मेट्रो सिटी, शहरों, अब तो छोटे कस्बों में भी देखे जा सकते है। किसी समय मोहल्ले बच्चों की बस्ती से पूर्णतः आबाद रहते थे किंतु विभिन्न कारणों के साथ-साथ अल्पायु में ही व्यस्त दिनचर्या के साथ बालक कहीं न कहीं परिवेश से पृथक हो रहा है संभवत् इसी कारण से NCF 2005 में पाठ्यक्रम को परिवेश से जोड़ने हेतु विशेष बल दिया गया है। बच्चा इस भागती-दौड़ती दुनिया की प्रतिस्पर्धा में कहीं पिछड़ न जाए इस चिंता में अभिभावक अल्पायु से ही बालक की व्यस्त एवं बोझमय जीवनचर्या का निर्माण कर देते हैं। बस्ते का बोझ, ट्यूशन इसके पश्चात् भाँति-भाँति की क्लासेज के साथ ही बचपन की स्वाभाविक मस्ती कहीं गुम-सी हो रही है। प्रायः आजकल व्यस्त दिनचर्या के दौरान बच्चे को थोड़ा समय मिलता भी है तो वह समय अनजाने में ही मनोरंजन हेतु टेलीविजन, मोबाइल, कम्प्यूटर जैसे यांत्रिक उपकरणों के भेंट हो जाता है। बालक का एकपक्षीय अथवा द्विपक्षीय विकास नहीं होकर सर्वांगीण विकास हो इस बात का पूर्णतः ध्यान रखा जाना चाहिए। बचपन झुलसे नहीं अपितु यह अवस्था जीवन निर्माण की श्रेष्ठतम अवस्था बने इस दृष्टि से बच्चों की वर्तमान जीवनचर्या एवं जीवनपद्धति पर ही पुनः आत्मावलोकन किया जाए तो निश्चित रूप से वह बालहित में होगा।

भारतवर्ष में सन् 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीति लागू होने के बाद इसका भारतीय समाज पर बहुआयामी प्रभाव पड़ा है। शिक्षा पूर्णतः रोजगारोन्मुखी हो गई है। शिक्षा जो कि सर्वांगीण विकास पर बल देती थी, उसका मुख्य एवं संभवतः एकमात्र लक्ष्य बच्चा भविष्य में अच्छी नौकरी प्राप्त कर सकें, हो गया हैं। लक्ष्य से उत्पन्न दबाव का असर भी दूरगामी रूप से बच्चे के बचपन पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हुआ है। इसके साथ ही पुरुषार्थ चतुष्ट्य की अवधारणा में वर्तमान समाज में अर्थ को प्रधानता प्राप्त होने लगी है। इसका असर भी बच्चे के बचपन पर परोक्ष रूप से हुआ है। शिक्षा का प्रथम व एकमात्र लक्ष्य अर्थोपार्जन ही हो गया। जिसके कारण परंपरागत भारतीय नैतिक मूल्य आधारित शिक्षा गौण-सी हुई एवं अंग्रेजी की प्रधानता शिक्षण एवं व्यवसाय क्षेत्र में हुई है। इससे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में हो इस अवधारणा पर भी चोट हुई है।

साथ ही अभिभावक की प्राथमिकता, बच्चे आधुनिकता की दौड़ में पिछड़ न जाए इस हेतु, बालक की अत्याधुनिक शिक्षा एवं रहन-सहन पर विशेष बल दिया जाने लगा है। बच्चा बहुमुखी बने इस हेतु भाँति-भाँति के प्रशिक्षण एवं कलाओं का ज्ञान भी अल्पायु से ही दिया जाने लगता है। इस समस्त कसरत के पीछे अभिभावकों की सोच बालक के हितकारी के रूप में ही होती है किंतु इस मशक्कत के दौरान बचपन मौज-मस्ती लुप्त-सी हो रही है। बच्चों में भरपूर मात्रा में ऊर्जा होती है। उसकी ऊर्जा का सदुपयोग हो इस हेतु आउटडोर गतिविधियों में बच्चों का शामिल होना जरूरी है। जब बच्चे बाहर अपने साथियों के साथ खेलते हैं, तो उनका दिमाग का ज्यादा विकास होता है। आउटडोर गतिविधियों से दूर रहने वाले बच्चों का इम्यून सिस्टम भी कमजोर पाया गया। हाल ही में 12 अक्टूबर को ग्लोबल आउटडोर क्लास रूम डे अभियान भी चलाया गया। बच्चों की बढ़ती व्यस्तता का अनुमान इस शोध से लग सकता है कि 10 देशों पर हुए मार्केट रिसर्च फर्म एडलमैन इंटेलिजेंस के सर्वे के मुताबिक 56 प्रतिशत बच्चे केवल एक घंटे या उससे भी कम समय घर से बाहर खेलते हैं। इसके अलावा भारत के 56 प्रतिशत अभिभावकों ने स्वीकार किया कि अपने बच्चों की तुलना में उन्हें अपने बचपन में कहीं ज्यादा बाहर खेलने को मिला। एक क्षण के लिए यह विचार करना आवश्यक है कि बालक में सृजनात्मकता उत्पन्न हो इस हेतु उसे फुरसत के क्षण भी मिलने चाहिए। विशेष रूप से बड़े शहरों में **वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी** वाली आयु तो असमय ही विलुप्त सी हो गई।

शहरी भारतीय समाज में जहाँ माता-पिता दोनों ही आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कामकाजी है। ऐसे में बालक के बचपन के समक्ष विकट संकट है। बालक व्यस्त रहें इस हेतु उसकी दिनचर्या भी प्रायः व्यस्त बना दी जाती है। बड़े शहरों में ऐसे हालात प्रायः देखे जा सकते है जहाँ बच्चा अपने माता-पिता से सुबह विद्यालय से जाते समय ही मिल पाता है क्योंकि शाम के समय जब कामकाजी माता-पिता घर आते है तो बच्चा स्वप्नों की दुनिया में खो चुका होता है। कहीं-कहीं तो ऐसी स्थितियाँ भी देखने को मिलती है पिताजी प्रातःकालीन वेला में जब काम पर निकलने का समय होता है तो उस समय बच्चा सो रहा होता है और जब रात को लौटे तो उस समय बच्चा या तो सो चुका होता है अथवा स्कूल के काम में व्यस्त होता है। समाज का स्वरूप अर्थप्रधान होने से कहीं न कहीं इसकी कीमत भी बच्चे चुका रहे हैं क्योंकि कामकाजी अभिभावक अपने बच्चों को आवश्यक समय भी बेहद मुश्किल से दे पाते हैं। इस प्रकार बच्चे के साथ समय व्यतीत करने में इन दिनों स्मार्टफोन भी कहीं न कहीं अप्रत्यक्ष दीवार का काम करते हुए से देखे जा सकते हैं।

छोटे-छोटे बच्चे जब भारी-भारी स्कूली बस्ते लेकर विद्यालय जाते हैं तो विचार आता है कि इस शिक्षा के बोझ से विद्यार्थी कहीं वास्तव में दब न जाए। स्वाभाविक एवं आवश्यक शिक्षा की अवधारणा कहीं लुप्त सी प्रतीत हो रही है क्योंकि प्रतिस्पर्धा के इस दौर में बालक कहीं पिछड़ न जाए इस भ्रम में उसे दुनिया भर का किताबी ज्ञान उसके बाल सुलभ मस्तिष्क में भर दिया जाता है इसके साथ ही अध्ययन में अत्यधिक व्यस्तता के कारण कई बालक अपने परिवेश से भी अनभिज्ञ रह जाता है। साथ ही आयु के जिस दौर में मस्ती एवं खेलने के दिन होते उसमें वह रटन्त प्रधान अध्ययन में अपना समय दे रहा है।

बचपन के समक्ष एक और गंभीर चुनौती है उसके अध्ययन-अध्यापन का माध्यम अंग्रेजी भाषा होना। मात्र हिन्दी की पढ़ाई को छोड़कर सभी विषय अंग्रेजी में बालक को पढ़ाए जाते हैं। विशेष रूप से निजी शिक्षण संस्थाओं में तो अंग्रेजी की ही प्रधानता देखी जा सकती है। जबकि विभिन्न शैक्षिक आयोगों, विभिन्न शिक्षाविदों की यह मान्यता रही है कि प्रारंभिक शिक्षा बालक की मातृभाषा में ही होनी चाहिए। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 350क में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा में सुविधाएँ हेतु बल दिया गया है। शहरों सहित छोटे-छोटे कस्बों में अंग्रेजी की बढ़ती मान्यता से बच्चों में रटने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। प्रारंभिक स्तर पर सभी विषय अंग्रेजी में अध्ययन-अध्यापन से बालक को अंग्रेजी शब्दों को याद करने में अतिरिक्त परिश्रम करना पड़ता है। इससे भी कहीं न कहीं अध्ययन-अध्यापन गतिविधि की स्वाभाविकता समाप्त होकर बोझिल सी हो जाती है। यह भी विचारणीय है कि जब जापान, चीन एवं रूस जैसे देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान कर सतत् विकास की ओर अग्रसर है तो फिर भारतवर्ष क्यों नहीं बढ़ सकता? अतः बाल हित में प्रारंभिक शिक्षा पूर्णतः मातृभाषा में ही होनी चाहिए ताकि समझ प्रधान शिक्षा को बढ़ावा मिल सकें व रटन्त की पद्धति से भी मुक्ति मिल सकें।

ग्रामीण परिवेश में बालक को अलग प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण उसका बचपन प्रभावित हो रहा है। गरीबी, अशिक्षा जैसी अनेकानेक समस्याओं का सामना ग्रामीण भारत में बचपन को करना पड़ रहा है। हालांकि सम्पूर्ण राष्ट्र में केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा बच्चों के हित में अनेकानेक कल्याणकारी योजनाएँ एवं कार्यक्रम क्रियान्वित किए जा रहे हैं, सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगत हो रहे हैं बावजूद इसके अभी इस दिशा में बहुत किया जाना शेष है।

बच्चे पंचतंत्र की कहानियाँ सुनना चाहते हैं, वे बहते जल को देखना व उसमें कागज की कश्ती चलाना चाहते हैं, पहाड़ों एवं मैदानों पर स्वतंत्रतापूर्वक विचरण करना चाहते हैं। हालांकि इस प्रकार के हालात दुष्प्राप्य नहीं है किन्तु इस हेतु बच्चों को समय देना नितांत आवश्यक है। बच्चों के पास असंख्य भोली एवं निष्कपट बातें हैं, यदि उनसे बातें की जाए तो बहुत से मासूम सवाल एवं जिज्ञासाएँ सुनने का अवसर मिल सकता है। किन्तु इन सबके लिए सर्वप्रथम बच्चे को अभिभावकों एवं परिवारजनों का सकारात्मक समय मिलना चाहिए। बचपन प्रतिस्पर्धा में झुलसे नहीं एवं बाल सुलभ नटखटपन बच्चों में बना रहें इस हेतु निम्नलिखित उपाय प्रभावी हो सकते हैं-

1. अभिभावक बच्चों को पूरा समय देवें।
2. यथासंभव संयुक्त परिवार को महत्त्व देवें।

3. बालक को सनातन संस्कृति से जोड़ें।
4. बालक को पंचतंत्र की कथाएँ सुनाई जावें।
5. बालक के समाजीकरण पर ध्यान देना जरूरी।
6. योग, ध्यान व मैदानी खेल से बच्चों को जोड़ना जरूरी।
7. बालक के मानसिक एवं शारीरिक विकास पर ध्यान जरूरी।
8. प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा आधारित हो।
9. बच्चे में स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित करें।
10. बच्चे में रटन्त के स्थान पर समझ आधारित शिक्षा पर बल देना जरूरी।

समय गतिमान है, भूमण्डलीकरण के इस दौर में बच्चा समय के साथ पिछड़े नहीं इस बात का पूर्णतः ध्यान रखना बेहद आवश्यक है किंतु बच्चे की रुचि एवं उसकी अभिवृत्तियों को भी मान देना आवश्यक है। बच्चे आज भी अपने भविष्य को लेकर बहुत सजग है। बचपन स्वर्णिम हो इस हेतु बच्चों को सकारात्मक समय देना आवश्यक है। इस एक पहल से बचपन को महत्त्वपूर्ण अवलम्बन प्राप्त हो सकता है। ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति बचपन है, यह जीवन की भागमभाग एवं व्यस्तता में न कुम्हलाए, नहीं मुरझाए, इस हेतु उसका विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। बचपन अत्याधुनिक सुविधाओं का मोहताज नहीं है। उसे तो अपने अभिभावकों एवं परिवार के ऊर्जावान एवं सकारात्मक समय की आवश्यकता है।

हमारी पीढ़ी के अनेकानेक लोगों को बचपन में यद्यपि अत्याधुनिक सुविधाएँ नहीं मिली किन्तु हम सौभाग्यशाली रहे कि हमें अभिभावकों का पूर्ण सकारात्मक समय मिला जिससे तनावमुक्त बचपन एवं विकास का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। सतत विकास की अवधारणा के साथ ही सतत बचपन भी बेहद महत्त्वपूर्ण है। अतः बच्चों को उनका बचपन सुरक्षित एवं सुखद मिले इस हेतु बहुमुखी सद्प्रयत्न अनवरत आवश्यक है। आखिर बचपन सुरक्षित है तभी तो भावी जीवन संरक्षित है।

व्याख्याता
श्री सरस्वती सदन, वल्लभपुरा, गोविन्द चौक,
नाथद्वारा, जिला-राजसमंद (राज.)
मो: 09530081655

जानकारी

विद्यालय में प्राथमिक चिकित्सा

❒ भूरमल सोनी

वैसे तो प्रत्येक नागरिक को प्राथमिक चिकित्सा की जानकारी होना आवश्यक है। ताकि कहीं भी किसी जगह कोई दुर्घटना हो जाए तो पीड़ित की तत्काल सहायता की जाकर उसकी जान बचाई जा सके। दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को प्राथमिक उपचार व उसकी सहायता कर मौत के मुँह में जाने से रोका जा सकता है।

माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेशानुसार सड़क दुर्घटना व अन्य आकस्मिक घटनाओं में पीड़ित की जान बचाना जरूरी है। निर्णय अनुसार दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाने वाले व्यक्ति को पुलिस व गवाह या अन्य कानूनी पचड़े में शामिल नहीं किया जाएगा। आम लोगों में यह भ्राँति है कि सड़क दुर्घटना में घायल को अस्पताल पहुँचाने पर कई कानूनी व पुलिस के चक्कर में फँसना पड़ सकता है परन्तु यह सब कुछ सही नहीं है। यहाँ तक डॉक्टर व अस्पताल में अपना परिचय देने की भी आवश्यकता नहीं है।

अक्सर देखा जाता है कि स्कूलो में भी कई बार छात्र-छात्राओं के साथ कई प्रकार की दुर्घटनाएँ हो जाती है ऐसे में अध्यापकों-विद्यार्थियों को भी प्राथमिक-चिकित्सा की जानकारी होनी जरूरी है तथा प्रत्येक स्कूल में प्राथमिक चिकित्सा पेटी भी अति-आवश्यक है जिसमें प्राथमिक इलाज की सामग्री उपलब्ध हो।

प्राथमिक सहायक के लिए आवश्यक–

1. उसे धैर्यवान होना चाहिए।
2. वह चतुर व सचेत हो।
3. दयालु व स्पष्टवादी हो।
4. प्राथमिक दुर्घटनाओं में उपचार से भलीभाँति परिचित हो।
5. विभिन्न चोट में खून बहना, हड्डी टूटना आदि बातों में सहायक व सहायता का ज्ञान।
6. सहायता करने वाले को सर्वप्रथम पीड़ित की स्थिति को देखकर निर्णय लेना चाहिए कि उसको किस प्रकार की सहायता की जरूरत है।
7. प्राथमिक सहायता करने वाले को अपनी सीमा के बाहर किसी प्रकार का कार्य नहीं करना चाहिए।
8. डॉक्टर, एम्बूलेंस आने तक दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को ढककर सचेत रख हिम्मत व ढाढ़स दिलाते रहें।
9. मुँह में पानी डालकर, पानी पिला कर नहीं, उसे केवल गीले कपड़े को होठ पर रखकर चूसाना चाहिए।
10. प्रथम सहायक को दुर्घटना ग्रस्त की स्थिति को भांपकर पता लगाना चाहिए कि पीड़ित के साथ कैसी घटना घटी है।
11. नाड़ी का ज्ञान, दिल की धड़कन को बार-बार चैक कर उसे अचेत नहीं होने दें। जिसका ज्ञान-प्रथम सहायक को होना जरूरी है।
12. प्रथम सहायक को कृत्रिम सांस देने के साथ मजबूत कलेजा रखना पड़ता है वह घबराए नहीं।

स्कूल में प्राथमिक चिकित्सा पेटी–

प्रत्येक स्कूल में प्राथमिक चिकित्सा पेटी (फस्ट एड बॉक्स) अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। इस बॉक्स में चिकित्सक के परामर्श अनुसार दवाई रुई, पट्टियाँ, टींचर, डिटोल, दर्द निवारक टेबलेट, ट्यूब (आयन्टमेंट), कैंची, चाकू, ब्लेड, कॉटन पैड, उल्टी दस्त चक्कर व अन्य छोटी-मोटी चोट में काम आनें वाली वस्तुओं का संग्रहण होना चाहिए। प्राथमिक वस्तुओं की एक्सपायरी डेट समय-समय पर ध्यान में रख उपयोग करना चाहिए। यथा सम्भव खाने की दवा विद्यार्थियों को चिकित्सीय परामर्श से ही दें। किसी भी स्थिति में तुरन्त विद्यार्थियों के घर पर अभिभावकों को सूचित कर वस्तुस्थिति से तत्काल अवगत करवाएँ। बाह्य चोट व अन्य दुर्घटना में स्थिति अनुसार सहयोग कर अस्पताल शीघ्र भिजवाने की व्यवस्था की जाए।

नाक से खून बहना (नकसीर)–

कई बार गर्मी के दिनों में विद्यार्थियों के नाक से खून बहने लग जाता है जिसे नकसीर कहते है। तथा कई विद्यार्थियों के सर्दी में भी खून बहने लगता है।

उपचार:– पीड़ित को कुर्सी या चौकी पर ऐसे बिठाएँ कि उसका सिर पीछे की ओर झुका रहे हाथ आगे की ओर लटके रहे। उसके चेहरे पर पानी में भिगोकर तौलिया या गीला रुमाल नाक पर रख सिर पर पानी डालें। श्वास मुँह से लेने दें यदि खून बहना बन्द न हो तो नाक में रुई का फोहा डाल गर्दन पीछे रखते तुरंत डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

मिरगी आना–

यह रोग पैतृक है जिसमें किसी भी समय तथा कहीं भी यह दौरा आ सकता है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि छात्र के इस रोग की जानकारी स्कूल में दी जावे। अचानक मिरगी का दौरा आने पर व्यक्ति गिर जाता है तथा चोट व दुर्घटना का शिकार हो जाता है। मरीज बेसुध हो जाता है। **लक्षण**–दाँत आपस में भिंच जाते हैं और मुँह से झाग निकलने लगते हैं, आँखे बंद हो जाती है, शरीर जकड़ जाता है, टाँगें व हाथ झटके के साथ हिलने लगते है तथा श्वास धीरे-धीरे चलती है।

उपचार–दाँतो के बीच जीभ आने से उसके कटने का डर रहता है। अतः सर्वप्रथम रोगी के मुँह को खोलने का प्रयास करें, उसके नाक के श्वांस को रोकें, हाथों से जबड़े को खोलें। अमोनिया सुंघाकर होश में लाएँ। कई देशी नुस्खे भी मिरगी से बेहोश हुए रोगी को सामान्य स्थिति में लाने के लिए प्रचलित है।

नाक में किसी वस्तु का फँस जाना–

स्कूलों में छोटे बच्चे नाक में बरता, चना, मटर, बीज, कंकर, लकड़ी का टुकड़ा डाल लेते है जो कि नाक में फँस जाता है। साधारणतया नास या तम्बाकू सूंघाने से ये निकल जाते हैं। बिना होशियारी के चिमटी या अन्य तरीकों से फँसी चीज को निकालना अनुचित है। कई बार असावधानी से किए गए प्रसास से नाक में अटकी वस्तु ऊपर चली जाती है जिससे निकालना कठिन हो जाता है, वस्तु फूल जाती

है, ऐसे में डॉक्टर के पास ले जावें।

कान में किसी वस्तु का घुस जाना–

नाक की तरह कान में भी बच्चे बरता, रुई, तिनका आदि वस्तुएँ डाल लेते हैं। कई बार सोते वक्त चींटी या कीड़ा भी घुस जाता है। ऐसी स्थिति में सरसों का तेल, पानी डालकर सिर को टेढा कर थप–थपाने से तेल व पानी के साथ वस्तु बाहर आ जाती है। कीड़ा, चींटी न निकले तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लें। स्वतः ही नुकीली वस्तु आदि कान में न डालें, इससे कान का पर्दा फटने का डर रहता है।

आँख में किसी वस्तु का गिरना–

स्कूलों में अक्सर छोटे बच्चे एक दूसरे की आँख में नुकीली वस्तु से चोट कर देते हैं। सींक, परकार, अंगुली, बरता आदि से आँख चुभ जाती है। नतीजन आँख में दर्द व जलन होने लगती है। ऐसे में आँख को मसलना नहीं चाहिए जिससे घाव होने का खतरा बन जाता है। अतः ठण्डे पानी के छींटे देकर धोना चाहिए। आँख में अगर कचरा गिरा है तो एक प्याले में पानी लेकर आँख को पानी में बार–बार डुबोकर खोलना व बंद करना चाहिए जिससे आँख में घुसा कचरा निकल जाए। आँख के अंदर चींटी चिपक जाय तो तुरन्त डॉक्टर के पास ले जाएँ।

विषैले जानवरों का काटना–

पागल कुत्ते, साँप, बांडी, मधुमक्खी, बिच्छू, बर या अन्य जहरीले जानवर ग्रामीण स्कूलों में अधिक प्रभावित करते हैं। क्योंकि अधिकतर स्कूलों में खुला मैदान व कच्ची जगह अधिक होती है।

साँप का काटना:– साँप के काटने पर बहुधा लोग अंधविश्वास के कारण झाड़–फूँक के चक्कर में पीड़ित के जीवन के साथ खिलवाड़ करते हैं। अतः झाड़ फूँक में विश्वास नहीं करना चाहिए।

1. साँप काटने के बाद प्रायः भाग जाता है अतः पता नहीं चल पाता कि वह विषहीन है या विषैला। ऐसी दशा में काटे हुए स्थान पर दाँतों के चिह्न देखने चाहिए।
2. काटे हुए स्थान के ऊपर की ओर 3 इंच, 6 इंच और 9 इंच की दूरी पर डोरी से कसकर बाँधें जिससे रक्त प्रवाह के साथ जहर ऊपर न चढ़ सके।
3. घाव में सम्भव हो तो लाल दवा (पोटेशियम परमेंगनेट) भर दें।
4. साँप के काटे व्यक्ति को बेहोश न होने दें उस के मुँह पर ठण्डे पानी के छींटे मारें। गर्म चाय, काफी, कहवा या दूध पिलाएँ।
5. लापरवाही न करते हुए उसे तुरन्त अस्पताल ले जाएँ। वहाँ विषैले जानवरों के काटने के इंजेक्शन लगवाएँ।

बिच्छू, मधुमक्खी, बर आदि–

बिच्छू गाँवों के स्कूलों में दरियों के नीचे व दरारों आदि में अक्सर पाए जाते है। बिच्छू के काटने पर सर्वप्रथम उसके डंक को शरीर से निकालें।

1. बिच्छू के काटे स्थान के ऊपर रस्सी कसकर बांध दें ताकि विष ऊपर न चढ़ सके।
2. घाव को थोडा चीरा लगाकर अमोनिया का घोल लगा दे या नौसादर और चूने को बराबर–बराबर मात्रा में लेकर घाव पर रखकर उस पर दो चार बूँद पानी डाल देना चाहिए। तेल और पीसा नमक लगाने पर भी दर्द कम हो जाता है। अधिक देर तक विष का प्रभाव दिखाई दे तो डॉक्टर से परामर्श लें। मधुमक्खी, बर के डंक मारने पर सर्वप्रथम डंक को निकालें। काटे स्थान पर स्प्रिट लगा देना चाहिए। कपड़े धोने वाले सोडे का लेप भी विष उतारने में सहायक है। मधुमक्खी के काटे स्थान पर लोहा रगड़ने से भी राहत मिलती है।

दूषित भोजन (पोषाहार)–

कई बार पोषाहार में गड़बड़ी की खबरें देखने को मिलती है। जिसमें लापरवाही से दूषित भोजन खाने से बच्चे उल्टी, दस्त, घबराहट, बेहोशी के शिकार हो जाते है। अतः स्कूलों में मिड–डे मील बनाते समय पूरी सावधानी व साफ–सफाई का ध्यान रखना जरूरी होता है ताकि अनहोनी को रोका जा सकें। **पहचान–** (1) वमन (उल्टी) और पतले पाखाने (दस्त) होना (2) शरीर में कमजोरी आ जाना तथा घबराहट होना। (3) बुखार आना (4) नाड़ी का तेज गति से चलना, सिर चक्कराना, बेहोशी, पेट दर्द की शिकायत आदि। **उपचार–**ऐसी स्थिति में लापरवाही न कर तुरन्त डॉक्टर को बुलाएँ। दूषित भोजन के शिकार हुए व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाने का शीघ्र प्रयास करें। प्राथमिक स्तर पर हो सके तो उल्टी करवाकर अरंडी का तेल या शुद्ध घी पिलाएँ। गर्म चाय, काफी व कम्बल ओढ़ा कर गर्म रखने का प्रयास करें।

बिजली का करंट–

बरसात के मौसम में बच्चे अक्सर खेल–खेल में लोहे के खम्भे, तार आदि को छूते हैं जिससे वे विद्युत (करंट) की चपेट में आ जाते हैं। अतः स्कूलों में प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को ऐसे पोल को न छूने की हिदायत देनी चाहिए।

बिजली दो तरह की होती है– ए.सी. और डी.सी. बिजली के नंगे तारों को छू लेने पर जोर का झटका लगता है और कुछ समय के लिए शरीर सुन्न हो जाता है। ऐसा करंट खतरनाक होता है क्योंकि इसमें मनुष्य चिपक जाता है। जो अंग इसकी चपेट में आता है वह जल जाता है। अगर इसकी चपेट में आए व्यक्ति को शीघ्र सावधानी से न छुड़ाया जाए तो मृत्यु तक हो जाती है। उसको सीधे तौर पर पकड़ के न छुड़ाएँ अन्यथा छुड़ाने वाला भी करंट की चपेट में आ जाएगा। सूखी लकड़ी, रबर, काँच आदि की सहायता से सावधानीपूर्वक छुड़ाना चाहिए।

रोगी के शरीर पर तांबे के बर्तन रगड़ कर या हाथों से हाथ पैर रगड़कर गर्म करना चाहिए। रोगी को बेहोश न होने दें। चाय, काफी का सेवन करवाएँ तथा तुरन्त अस्पताल पहुँचाएँ।

हड्डी का टूटना–

आधी छुट्टी में खेलते वक्त या धक्का–मुक्की में अक्सर बच्चे गिर जाते हैं और उनके हाथ पैर में फ्रैक्चर हो जाता है। फ्रैक्चर वैसे तो कई प्रकार के होते है जैसे– साधारण फ्रैक्चर, संयुक्त फ्रैक्चर, जटिल फ्रैक्चर बहुखण्ड फ्रैक्चर, संयुक्त जटिल फ्रैक्चर, कच्चा फ्रैक्चर आदि।

हड्डियों की टूट की पहचान करना आवश्यक है जहाँ हड्डी टूटती है वहाँ अधिक पीड़ा होती है। उस स्थान पर सूजन आ जाती है। अतः सूजन के कारण ज्ञात करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। स्वाभाविक ढ़ंग से अंग को हिलाने–डुलाने पर कष्ट होता है। जहाँ पर हड्डी टूटती है उस स्थान पर आकृति बिगड़ जाती है। हिलाने–डुलाने पर जोर का दर्द होता है।

हड्डी टूटने का प्राथमिक उपचार–

सर्वप्रथम यह ज्ञात हो जाए कि हड्डी टूटी

है तो उस स्थान को झटके से हिलाना नहीं चाहिए।

अगर फ्रैक्चर जटिल हो और खून निकल रहा है तो सबसे पहले खून बहना बन्द करने का उपाय करना चाहिए। साधारणतया हाथ पैर की हड्डी टूटने पर खप्पचियों, लकड़ी, छड़ी, चप्पल आदि को रुमाल से बाँधा जा सकता है। पीड़ित को अस्पताल या हड्डी-रोग विशेषज्ञ को शीघ्र इलाज हेतु दिखाना चाहिए।

आग से जलना झुलस जाना–

बच्चों को हमेशा आग, गैस, ज्वलनशील पदार्थों से दूर रहने की जानकारी देनी चाहिए। फिर भी अगर आग से जल जाए तो जले स्थान पर पानी नहीं डालें, इससे फफोले हो जाते हैं। अगर कपड़े जलने लगे तो कम्बल या अन्य कपड़े की सहायता से अथवा धूल डालकर आग को बुझाने का प्रयास करें। नारियल का तेल, जैतून का तेल या बरनाल आदि दवा का प्रयोग कर राहत दी जा सकती है। जले स्थान पर संक्रमण होने की संभावना अधिक रहती है, दर्द असहनीय होता है अतः रोगी को तुरन्त अस्पताल ले जाएँ।

स्कूलों में प्राथमिक चिकित्सा पेटी एवं प्राथमिक सहायता से पीड़ित विद्यार्थियों को राहत अवश्य दिलाई जा सकती है।

कला-शिक्षक
रा.आ.उ.मा. वि. पलाना, बीकानेर
मो. 9252176253

सूचना

'शिविरा' की सदस्यता हेतु जो ग्राहक ई.एम.ओ. के माध्यम से शुल्क भिजवाते हैं, उनसे आग्रह है कि वे अपना पूर्ण पता (पिन कोड व मोबाइल नम्बर सहित) लिखकर ई.एम.ओ. रसीद की छाया प्रति संलग्न कर वरिष्ठ संपादक के नाम एक पत्र अवश्य भेजें। इस कार्यालय को प्राप्त होने वाली ई.एम.ओ. रसीद में पूर्ण पता अंकित नहीं होने के कारण पत्रिका प्रेषण/प्राप्ति में असुविधा होती है। अतः सभी पाठक ग्राहक कृपया ध्यान दें।

–वरिष्ठ संपादक

हकलाहट : कारण और निवारण

❐ सुश्री पूर्णिमा मित्रा

आज के प्रतियोगिता के दौर में प्रत्येक अभिभावक अपने बालकों को अपने साथियों से आगे बढ़ते देखना चाहते हैं। आमतौर पर माता-पिता, अन्य सफल बच्चों से अपने बच्चों की तुलना करते रहते हैं। इससे बच्चों में हीन भावना पनपने लगती हैं। अतिसंवेदनशील बच्चे किसी के साथ बोलते वक्त हकलाने लगते है। इस बीमारी का समय रहते उपचार करवाना आवश्यक है, ताकि बच्चों का व्यक्तित्व कुण्ठित न हो क्योंकि हकलाने वाले बच्चों का अक्सर समाज में मजाक उड़ाया जाता है। अक्सर सहपाठी भी ऐसे बच्चों से कन्नी काट लेते हैं। इससे बच्चा हीन भावना और अकेलेपन का शिकार हो जाता है। इससे बच्चे की प्रतिभा और आत्मविश्वास का उचित विकास नहीं हो पाता है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि ज्यादातर अभिभावक अपने बच्चे की इस समस्या को नजरअंदाज करते रहते हैं। कई अभिभावक गण्डे-ताबीज, ऊपरी छाया और भाग्यभरोसे रहने के आदी होते हैं। जबकि ऐसे बच्चों की एक बार स्पीच थैरेपिस्ट से अवश्य जाँच करवा ली जाना चाहिए। यदि प्रतिवर्ष, समाजसेवी संस्थाएँ विद्यालयों में वाणीदोष विशेषज्ञों का कैम्प लगाए तो गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों का सही समय पर उपचार हो सकता है।

वैसे आधुनिक शोधों के अनुसार बच्चों में हकलाने की समस्या प्रायः शारीरिक या मानसिक कारणों से होती है। शारीरिक कारणों में गर्भावस्था के दौरान भ्रूण को पर्याप्त ऑक्सीजन न पहुँचना, प्रसव के पूर्व या उसके उपरांत भ्रूण को अंदरुनी क्षति पहुँचना, गले के वोकल कॉर्ड में खराबी, जिह्वा या तालू में कोई विकार, सिर के पिछले हिस्से में चोट पहुँचना तथा आनुवंशिकी दोष होना प्रमुख है।

इसी तरह मानसिक कारणों में घर का कलहपूर्ण वातावरण, यौन शोषण, माता-पिता में से एक का बच्चे के प्रति दमनकारी रवैया, दूसरों का अपने प्रति ध्यानाकर्षित करने की प्रवृत्ति प्रमुख है। हकलाहट की बीमारी के इलाज हेतु ऐलोपैथी, होम्योपैथी और आयुर्वेदिक तीनों प्रकार की चिकित्सा कारगर है। इसके साथ-साथ शिक्षकों और अभिभावकों को निम्नांकित प्रायोगिक उपाय भी काम लेने चाहिए :-

1. ऐसे बच्चे से बात करते वक्त उसे खिजाए या चिढ़ाए नहीं।
2. उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुने। उसका मनोबल बढ़ाए।
3. पहले उसे छोटे-छोटे वाक्य बोलने को प्रेरित करे। बड़े या जटिल वाक्य-विन्यास का उच्चारण धीरे-धीरे कराए।
4. अक्सर ऐसे बच्चों की स्पीड ऑफ स्पीच बहुत तीव्र होती है। बच्चे को रुक-रुक कर बोलने का अभ्यास कराए।
5. उसे प्रतिदिन आइने के सामने पाँच-सात मिनट बोलने का अभ्यास करने को कहे।
6. योग, प्राणायाम और संगीत से भी ऐसे बच्चों को फायदा होता है। अतः गाने का अभ्यास कराए।
7. सामाजिक समारोहों में अवश्य ले जाए। वहाँ अगर घुटन महसूस हो तो, उसका मनोबल बनाए रखे।
8. समय-समय पर उसे वृद्धाश्रम और अनाथाश्रम ले जाए। उसे वहाँ वॉलेंटीयर की तरह कार्य करने को प्रेरित करे। इससे बच्चे के आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। जरूरतमंद की मदद करते वक्त, हकलाहट की कुण्ठा से बच्चे का ध्यान हट जाता है।

जिन विद्यालयों में ऐसे बच्चे है जो हकलाते है, तो कक्षाध्यापक स्वयं या संस्था प्रधान के ध्यान में लाकर नजदीकी चिकित्सालय को सूचित करे यदि संभव हो तो अभिभावक को साथ ले जाएँ। चिकित्सकीय परामर्शानुसार यदि अभिभावक व अध्यापक दोनों व्यवहारगत परिवर्तन करते हुए बच्चे का हौसला बढ़ाए व समय-समय पर मार्गदर्शन करें तो बच्चा जल्दी ठीक हो सकता है।

ए-59, करणी नगर, नागणेची जी रोड,
बीकानेर-334003
मो. 8963826490

नियोजन

समय और उसका महत्त्व

❐ दीपचन्द सुथार

जीवन पल-पल के सौम्य धागों से बुना हुआ है। इसलिए समय हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। इतना ज्ञात होने के पश्चात् भी इसका ह्रास हम अपने मित्रों के साथ इतस्ततः घूमने, गप्पें लगाने, सिनेमा, टी.वी., मोबाइल आदि देखने में व्यय कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं जबकि समय धन से भी बहुत अधिक कीमती है। जरा सोचिए कि आपको अत्यावश्यक कार्यवश कहीं बाहर जाना है। यथासमय रेल्वे या बस स्टेण्ड नहीं पहुँचते हैं तो गन्तव्य स्थान से वंचित रह जाते हैं। इसका दुष्परिणाम फिर हमें भुगतना पड़ता है। इसकी महत्ता को लक्षित करते हुए राजस्थानी भाषा के किसी कवि ने अपने अन्तर्तम के उद्‌गारों को उजागर करते हुए उचित ही कहा है-

समै की कीमत जाणै नी,
बिरथा इण ने खोय।
चौवदा लोक नै वारदा,
पल रौ मोल न होय।।

इन्हीं भावों के सादृश्य 'जीवन संग्राम में विजय प्राप्ति के कुछ उपाय' लेखक पं. माधवराव सप्रे पृ.सं. 12 पर लिखते है कि - इंग्लैण्ड की जगद्विख्यात महारानी एलिजाबेथ का जब मृत्यु समय निकट आया तब वह चिल्ला उठी ''यदि कोई मुझे क्षण भर के लिए बचा दे तो वह असंख्य धन पावे।'' परन्तु अब पश्चाताप करने से क्या हो सकता था। अतः किसी विद्वान ने यथार्थ ही कहा है कि-''खोई हुई सम्पत्ति परिश्रम से प्राप्त की जा सकती है। भूला हुआ ज्ञान अध्ययन से प्राप्त हो सकता है। गुमाया हुआ स्वास्थ्य दवा और संयम से लौटाया जा सकता है। परन्तु नष्ट किया हुआ समय सदा के लिए चला जाता है।'' महामनीषी फ्रेंकलिन का कथन है- ''क्या तुमको अपने जीवन से प्रेम है? यदि हाँ! तो समय व्यर्थ मत खोओ क्योंकि जीवन समय से ही मिलकर बना है।'' इसलिए सज्जन व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग बहुत ही अच्छी तरह से करते हैं। नीति शास्त्र में कहा गया है कि-

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।

अर्थात्- बुद्धिमान व्यक्तियों का समय काव्यों तथा शास्त्रों के विनोद में आनन्द के साथ व्यतीत होता है, जबकि मूर्खों का व्यसनों में या निद्रा और कलह में व्यतीत होता है।

वैसे जीवन में सुख-दुःख व बाधाएँ आती-जाती रहती हैं। उससे हमें व्यथित नहीं होना चाहिए। चिंग चाओ का मत है-''जो समय चिन्ता में गया, समझो कूड़ेदान में गया। जो समय चिन्तन में गया, समझो तिजोरी में जमा हो गया।'' अतः समय ही सम्पत्ति है, शृंगार व अमृतत्व है। इसी के द्वारा हम जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। मार्क ट्वेन महाशय का कहना है कि-''हमें जो सबसे बहुमूल्य वस्तु मिली है, वह है समय। अतः उसे किफायत से खर्च करना चाहिए।'' महात्मा गाँधी ऐसी ही विचारधारा रखते थे। एक बार किसी सार्वजनिक संस्था के दो सदस्य उनके पास पहुँचे। उन्हें किसी विषय पर उनसे चर्चा करनी थी। जब चर्चा हुई, तो गाँधीजी को अहसास हुआ कि यह काम तो एक व्यक्ति से भी पूरा हो जाता। उन्होंने उनमें से एक को वापस लौट जाने का सुझाव देते हुए कहा-''जनता के एक भी पैसे का अपव्यय नहीं होना चाहिए।'' तब दूसरा साथी बोला-''अब आ ही गए है? तो दोनों साथ ही चले जाएँगे। व्यय तो तब भी उतना ही होना है।'' यह सुनकर बापू बोले-''अपव्यय केवल द्रव्य का ही नहीं बल्कि समय का भी नहीं करना चाहिए। क्योंकि धन तो कीमती है ही, समय उससे भी अधिक कीमती है।''

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो ऐसा अहसास होता है कि समयबद्ध जीवन शैली ही हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करती है और चरित्र को उन्नत बनाती है। अतएव समय से संघर्ष करने वाला ही महान बनता है। कहा जाता है कि एक बार नेपोलियन बोनापार्ट ने अपने सेनानायक को भोजन के लिए निमंत्रित किया। निर्धारित समय पर पहुँचने में उन्हें कुछ विलम्ब हो गया। नेपोलियन भोजन करने लगे। वे खाना समाप्त करके उठ ही रहे थे कि वे आ गए। उन्हें देखकर नेपोलियन ने कहा-''भोजन का समय तो बीत चुका है, आइए अब अपना काम शुरू करें।'' अतः समय की महत्ता और सोच से ही उन्होंने उच्च पद और लोकप्रियता अर्जित की थी। ऐसी अनेकानेक घटनाएँ पुस्तकों के द्वारा पढ़ने को मिलती है। ग्लेडस्टन सरीखा प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी जेब में एक छोटी-सी पुस्तक हमेशा लेकर बाहर निकलता था। उन्हें चिन्ता रहती थी कि कहीं कोई घड़ी व्यर्थ न चली जाए। उनके लिए समय ही अमूल्य धन था। वैसे देखा जाए तो धन मनुष्य कृत संचय है। इसलिए इसे चोर चुराकर, शक्तिशाली छीन कर ले जा सकता है। परन्तु समय ईश्वर प्रदत्त सम्पत्ति होने के कारण ऐसी वारदात नहीं हो सकती है। इसी को इंगित करते हुए किसी कवि ने यथार्थ ही कहा है-

जिसके पास कुछ नहीं, तो हँसती है दुनिया।
जिसके पास सब कुछ, तो जलती है दुनिया।
दे दिए क्षण कुछ ऐसे,
जिसे छीन नहीं सकती दुनिया।

इसीलिए हमें भी प्रत्येक पल का सदुपयोग करते हुए जीवन को ऊँचा उठाने का प्रयास करना चाहिए। इस संदर्भ में अतीत की चिन्ता नहीं करनी चाहिए। किसी विद्वान ने उचित ही कहा है कि- ''अतीत भविष्य की प्रयोगशाला है। अतीत में हुई अपनी कमियों व गलतियों से सबक लेने और भविष्य में उसे न दोहराने का प्लेटफार्म वर्तमान है। इसी को लक्षित करते हुए दिनकर जी ने ठीक ही कहा है-

बीता हुआ कल आज की स्मृति है,
आने वाला कल आपका अपना है।
अतीत और भविष्य की चिन्ता मत करो,
केवल वर्तमान ही अपना है।

अतः वर्तमान हमारे पास है। इसलिए प्रत्येक पल का सदुपयोग जीवन की सतह पर इस प्रकार आनन्द से व्यतीत करना चाहिए जिस प्रकार हरित पर्ण पर ओस की बूँदें नृत्य कर रही हो।

द्वारा हेमन्त कुमार जांगिड़
दयाल भवन के पास, उम्मेद चौक,
ब्राह्मणों की गली, जोधपुर-342001 (राज.)
मो. 9530051273

पुस्तक समीक्षा

आरसी आगै हाथ पसार्‌यां फुटरापो

(कविता संग्रह) मूल : मारिया वीने **अनुवाद** : डॉ. श्रीलाल मोहता **प्रकाशक** : सर्जना, शिवबाड़ी रोड, बीकानेर **प्रथम संस्करण** : 2011 **पृष्ठ संख्या** : 56 **मूल्य** : ₹ 60

अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण रचनाकर्म है। एक आत्मा में दूसरी आत्मा का प्रवेश, घालमेल और फिर अपनी आत्मा रमण कर आनन्द लेना और दूसरों को आनन्द वितरित करना है। ये सरल मार्ग की कठिन पगडंडियाँ हैं जिनसे गुजर डॉ. श्रीलाल मोहता ने स्वीडी भाषा की कवयित्री मारिया वीने की 31 कविताओं का अनुवाद मायड़ भाषा राजस्थानी में 'आरसी आगै हाथ पसार्‌यां फुटरापो' शीर्षक से किया है। इन कविताओं का आस्वाद मूल भाषा के राग से ज्यादा अपनी भाषा की आत्मा से साक्षात्कार करवाता है। राजस्थानी भाषा की लयात्मकता तथा गत्यात्मकता इन कविताओं से अनुभव की जा सकती है।

मारिया वीने एक स्त्री रचनाकार है। उनकी कविताएँ स्त्री की अस्मिता के दर्द को उकेरती है। आखेट युग की समाप्ति के साथ ही स्त्री गुलाम हो गई थी। उसका अस्तित्व किरथ-मिरथ हो गया था जिसे वह पल-पल संवारती है। आरसी के हाथ से गिरते ही डरी-फरी स्त्री उसके टुकड़ों को यों सहेजती गोया वे उसके अपने ही चेहरे हैं-दाग हैं।

खिंड़ळ-मिंडळ काच री किरचां इयां भेळी करै
जाणै किरच-किरच हुयो थकौ
बो बांरो आपरौ चे'रौ हुवै....

(पेज 8)

या फिर

लुगाई! थूं आप है अेक रिंध-रोही
रिंधरोही, जाडी अर जबरी जबरी
म्हैं जाणूं
थूं डरियोड़ी है आपो आप सूं!

(पेज 21)

मारिया वीने की एक किताब संभवतः आखिरी थी 'डिक्टेटर'। उस पुस्तक की कुछ कविताएँ 'डिक्टेटर' के वर्गीय चरित्र के बारे में है जिसका भावानुवाद डॉ. मोहता ने ऐसे किया मानो वह हमारे आज के समय का दस्तावेज हो। एक तानाशाह इंसान होते हुए भी अपनी अहंकारी और दमन की प्रवृति की वजह से इंसान नहीं रह पाता। वह एक ताले के छेद से भी बड़ा नहीं होता, उसके चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा होता है फिर भी उसके पास जनता को प्रसन्न करने का समय नहीं रहता-

बगत नीं हुवै तानासाह खनै
कामेतणां नैं रीझावण सारू

तानाशाह के राज्य में जनता की आवाज़ ग़ैर क़ानूनी है अगर कोई सिर उठा के बात करे तो उसे जमींदोज़ कर दिया जाता है लेकिन यही आवाम एक दिन उसे धराशाही कर देता है:-

ताफड़ा-तोड़तो जे कोई मिनख
उठाय ई लेवै माथो
उणनै ठूंस दियो जावै
रगत राची भींता मांय
जकी अेक दिन कर जावे उणरो गटको!

(पेज 30)

तानाशाही निजाम का प्रतिरोध करती ये कविताएँ उस स्त्री की है जो डरूं-फरूं रहती है लेकिन प्रतिरोध की आकांक्षा उसमें एक ऊर्जा का संचार करती है और वह साहस के साथ यह ऐलान करती है:-

अेक तानासाह
किणी न किणी दिन
आपरा लूंठा जूतां मांय डूब जावै....

या फिर

मर सकै तानासाह
फगत अेक कोडी रै आंटै फंसिया

इन कविताओं का अनुवाद जहाँ एक ओर विदेशी भाषा के काव्य-सौष्ठव व गुरु-गरिमा से परिचय करवाती है वहीं राजस्थानी भाषा की ताकत से रूबरू करवाती है। यह अहसास भी होता है इन कविताओं को पढ़कर कि राजस्थानी भाषा की पकड़ कितनी मजबूत और विस्तृत है- जैसे खतरे और उम्मीद के नाजुक रिश्ते को कैंची के बिम्ब से तलाशा गया है-

कैई दफै खतरो अेक कैंची हुवै
मिलियोड़ी जिणरी टांग्या बिचालै उम्मीद
लटपटांवती रैवै
कैई दफै उम्मीद
हुवै अेक हरियो-भरियो मैदान
भरै उडार जिणरै उपरिया कर सिकरो
हरमेस चलांवतो रैवै कैंची
छायां री....

(पेज19)

क्या ही खूबसूरत दृश्य है। सामान्य मनोभावों की सुन्दर रूपाभिव्यक्ति। यही राजस्थानी भाषा में ही संभव हो सकती है। इसके लिये डॉ. मोहता साधुवाद के योग्य हैं। मैंने ऐसा अनुवाद पहली बार पढ़ा है जिसमें राजस्थानी भाषा की लय और गति का अहसास होता है।

सुन्दर और सटीक अनुवाद के लिए पुनः डॉ. मोहता को बधाई।

समीक्षक : **सरल विशारद**
हमालों की बारी बाहर, बीकानेर (राज.)
मो. 9461872526

मंथन

लेखक : हुक्मीचन्द शर्मा **प्रकाशक** : श्री चारमरुवा सेवा ट्रस्ट, जी-3/72, नेहरूप्लेस, नई दिल्ली **संस्करण** : प्रथम 2015 **पृष्ठ संख्या** : 240 **मूल्य** : ₹ 150

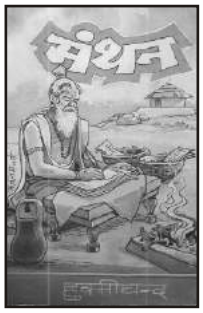

समीक्ष्य पुस्तक श्री चार मरुवा बालाजी की प्रेरणा से आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में लिखी गई है जो लेखक के पूजनीय स्वर्गीय माता पिता को सादर श्रद्धापूर्वक समर्पित है। प्रारम्भ की चार पंक्तियाँ (अपनी लाडली जेष्ठ पुत्र वधू जो अचानक छोड़कर देवलोक में चली गई) को समर्पित बहुत ही आकर्षक एवं मनोहर हैं-

वायु के झोंको से सीखा सबको गले लगाना।
मेंहदी के पत्तों से सीखा पिसकर भी रंग देना।।
चाहे करे निंदा कोई चाहे करे गुणगान।
करूँ सदा सत्कर्म, यही हो जीवन का अभियान।।

यह पुस्तक स्वयं के अनुभूत सत्य तथ्यों को उद्‌घाटित करने के साथ-साथ जीवन के

विभिन्न आयामों में कवियों, लेखकों, चिन्तकों के सारयुक्त वचनों कथनों का मिश्रण है। सबके सब अमूल्य रत्न हैं जो पाठकों को गहरे पानी पर ही उपलब्ध हो सकते हैं।

मैं समीक्षा स्वरूप पुस्तक को दो भागों में विभाजित करूँगा।

स्वयं के अनुभव, गलतियाँ-दोषों को सरल सहज भाव से स्वीकार करना।

दूसरे भाग में प्रेरक कविताएँ, उक्तियाँ कथन जो प्रख्यात चिन्तनशील महापुरुषों द्वारा कहे गए हैं। जीवन को फर्श से उठाकर शीर्ष तक पहुँचाने की क्षमता रखे हैं। लेखक स्वयं बहुत ही नीचे से उठकर शीर्षस्थ स्थान तक पहुँचा है इसीलिए पुस्तक जीवनोपयोगी है।

'गिर गिर कर ही असवार हुआ करते हैं।
गलतियाँ कर कर ही महान हुआ करते हैं।'
जो कभी गिरा ही नहीं, उसका क्या उठना।
दुर्गुणों को दूर किया जिसने उसका ही है उठना।।

मात्र नौ वर्ष की अवस्था में लेखक सर्व अवगुणों से युक्त हो गया था। ऐसा कोई अवगुण नहीं बचा था जो उसमें नहीं था। धीरे धीरे उन दुर्गुणों को दूर कर सर्वगुण सम्पन्न बना। यही तो सीखने को मिलेगा इस पुस्तक से। अतः शिविरा के पाठकों के लिए यह एक अनमोल उपहार है। इसे सहर्ष स्वीकार करें।

यहाँ बानगी के रूप में पुस्तक के दोनों खंडों की कुछेक शीर्षकों की चर्चा ही सम्भव है। वरना समीक्षा का आकार सीमा लांघ जाएगा। पूरा रसास्वादन तो पूरे भोजनोपरान्त ही हो सकता है जो पूरी पुस्तक पढ़ने पर ही सम्भव हो सकता है। मैं तो रसास्वाद की झलक ही पेश कर सकता हूँ।

चलिए पहले खुद के अनुभूत तथ्यों का अवलोकन करें। आदरणीय हुक्मीचन्द ने दो छोटी छोटी कहानियों को ही प्रेरणास्रोत माना और अपनी अत्यन्त गिरी हुई स्थिति को सुधारा। कहानियों के नाम हैं 'मुसीबत का हल' और 'मंजिल'।

'मां की मोगरी' व 'श्री गणेशजी की सलाह' दो घटनाओं ने लेखक के जीवन प्रवाह को एकदम से परिवर्तित कर दिया। कुसंगति और चोरी की घृणित दुष्प्रवृति से छुटकारा इन दोनों घटनाओं से मिला। यह लेखक की स्वीकारोक्ति है। ये दोनों घटनाएँ नहीं घटती तो आज लेखक लक्ष्मी और सरस्वती का कृपा पात्र नहीं बनता। केवल 20 घटनाएँ स्वयं के जीवन में घटित हुई हैं बाकी 80 विभिन्न आयामों से संग्रहित की हैं इस पुस्तक में।

अतीत के झरोखों से लेखक ने बताया है कि महात्मा गाँधी का सान्निध्य, प्रेम व आशीर्वाद उन्हें बालपन में मिल गया था। जिससे उन्होंने तभी से गांठ बांध लिया था और बापू का प्रकरण व प्रसंग भी उनका प्रेरणा स्रोत बना। अपने व्यवहार एवं सवेदनशीलता के कारण ही मानव का चरित्र समाज के सामने आता है। मात्र छः वर्ष की अवस्था में जो स्नेह, प्रेम, आशीर्वाद और संवेदनशीलता लेखक को महात्मा गाँधी से मिली, उसको धरोहर के रूप में संजोकर आज तक रखे हुए हैं और बापू के आशीर्वाद के कारण ही इतना सौभाग्यशाली बन पाया है। ये छोटी छोटी घटनाएँ ही लेखक के प्रेरणास्रोत रहे हैं।

लेखक की पूर्ण श्रद्धा बालाजी महाराज में है। वे स्वप्न में भी उन्हें मार्गदर्शन देते हैं। उन्हीं की कृपा से व्यापार में तीन लाख के घाटे से आप उभरे और आज एक विख्यात उद्यमी बने।

अपने उत्साह, साहस व सकारात्मक विचारधारा से आप जीवन संघर्ष में रत रहकर कठिनाइयों, मुसीबतों व चुनौतियों का सामना करने में समर्थ रहे हैं। यह सब बताने का लक्ष्य ही 'मंथन' पुस्तक का है। ताकि नई पीढ़ी चुनौतियों का सामना जीवट के साथ करे और निराशा के भावों का दमन कर सकारात्मक रुख अपनावे।

पुस्तक की शैली सहज सरल है भाषा सामान्य से सामान्य व्यक्ति को समझ में आ सकती है।

पंचतंत्र की तर्ज पर पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति के द्वारा प्रकरण प्रसंग कहानी किस्से एवं लघुकथा के माध्यम से बोझिल ज्ञान को समझाया गया है। उसको सरलतम तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

जगह जगह कवित्व का सहारा लेकर ज्ञान को रोचक व मनोहर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। छोटे छोटे शीर्षकों में बड़ी बड़ी बातों को रोचक बना कर परोसा गया है। जिससे किसी भी पाठक को ज्ञान का अपच न हो जाए। कुछ प्रेरक कविता की प्रस्तुतियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। जो बहुत ही प्रेरणास्पद हैं-

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।
-सोहनलाल द्विवेदी

सहन शीलता क्षमा दया को
तभी पूजता जग है।
बल का दर्प चमकता उसके
पीछे जब जगमग है।।
क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन
विषरहित विनीत सरल हो।।
-रामधारीसिंह दिनकर

मैं अछूत हूँ मन्दिर में
आने का मुझको अधिकार नहीं है।
किन्तु देवता यह न समझना,
तुम पर मेरा प्यार नहीं है।।
तुम कह दो, तुमको इन बातों
पर विश्वास नहीं है।
छूत अछूत धनी निर्धन का
भेद तुम्हारे पास नहीं है।।
-सुभद्राकुमारी चौहान

शताधिक छोटे छोटे शीर्षकों वाली पाठ्य सामग्री यथा मुसीबत का हल, मंजिल, कहानी प्रसंग के माध्यम से वर्णित है। ये बानगी स्वरूप हैं। पूर्ण सामग्री मंथन में ही उपलब्ध हो सकती है। छोटे छोटे शीर्षकों वाली पाठ्यसामग्री का 80 भाग काव्य की विधाओं जैसे दोहा रौला आदि छन्दों के माध्यम से संयोजित किया गया। एक बार पढ़कर देखिए, मैनें तो सिर्फ पढ़ने की ललक जगाई है।

पुस्तक में यत्र तत्र हास्य व्यंग्य की फुहारें भी पाठक अवश्य अनुभूत करेंगे। उन फुहारों से ताजगी आयेगी, ऊब कतई महसूस नहीं होगी। हास्य व्यंग्य के कारण रोचकता मे वृद्धि हुई है।

स्वामी विवेकानन्द, वैज्ञानिक आंइस्टीन, ऋग्वेद आदि की बहुमूल्य उक्तियाँ, शिक्षाएँ, ऋचाएँ भी पुस्तक में पाठक पाएँगे। यही नहीं नारी शक्ति का माहातम्य भी पुस्तक में मिलेगा। लेखक महोदय 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान से भी जुड़े हुए हैं। तत् सम्बद्ध पाठ्य सामग्री भी पढ़ने को अवश्य मिलेगी। पुस्तक का आमुख पृष्ठ महर्षि के लिखते समय का चित्र सहित 'मंथन' के अनुरूप ही है। आमुख पृष्ठ, अंतिम पृष्ठ गेटअप, साज सज्जा प्रशंसनीय है।

निष्कर्षतः 'मंथन' पठनीय, संग्रहणीय

मननीय मंथनीय और चिंतनीय पुस्तक है। राजस्थान के हर विद्यालय में, हर विद्यालय के पुस्तकालय की 'मंथन' शोभा बढ़ाए। इसी आशा के साथ अपनी लेखनी को विश्राम दे रहा हूँ।

समीक्षक : **टेकचन्द्र शर्मा**
शर्मा सदन, झुंझुनूं
मो. 9672973792

भारतीय समाज में नारी

लेखक : वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा **प्रकाशक** : पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 **संस्करण** : प्रथम 2017 **मूल्य** : ₹ 500

सभ्य समाज वह कहलाता है जिसमें नारी की भूमिका के महत्त्व को भली-भाँति से समझा गया हो तथा उसे सम्मान-सुरक्षा प्रदत्त हो। भारतीय समाज में बार-बार कहे जाने वाला कथन- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' भी सभ्य समाज के निर्माण में 'नारी' की भूमिका से पुरुष प्रधान समाज को अवगत करवाने हेतु कहा गया एक मंत्र वाक्य है।

समाज निर्माण में नारी की प्रमुख भूमिका से अवगत करवाने का एक प्रमाण हमें आयुर्वेद शास्त्र से भी प्राप्त होता है, जिसमें कहा गया है कि गर्भावस्था में गर्भणी को पौष्टिक खान-पान एवं पवित्र भयमुक्त वातावरण मिलता है तथा उसके स्वास्थ्य की देखभाल अच्छी प्रकार से की जाती है तो सतोगुण से युक्त, स्वस्थ-बुद्धिमान व दीर्घायु सन्तान (बालक-बालिका) की उत्पत्ति होती है। ऐसी सन्तान से ही सुसभ्य समाज का निर्माण होता है।

समीक्ष्य पुस्तक 'भारतीय समाज में नारी' समाजशास्त्र के विद्वान लेखक-चिन्तक श्री वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा द्वारा लिखी गई एक श्रेष्ठ रचना है। श्री शर्मा ने इसमें 'भारतीय समाज' में नारी की प्राचीन व अर्वाचीन स्थिति का तथ्यात्मक विवेचन तथा नारी को वर्तमान समय में उसके सुरक्षा-विकास हेतु जो अधिकार प्राप्त हैं उनका सविस्तार वर्णन किया है।

समीक्ष्य पुस्तक इसलिए भी विशिष्ट है कि इसमें नारी के 'सृष्टि' और 'स्थिति' क्रम पर तथ्यात्मक प्रस्तुति दी गई है, जो नारी के संदर्भ में लिखी गई अन्य पुस्तकों में हमें एक साथ दृष्टिगोचर नहीं होती है।

पुस्तक में 14 अध्यायों के द्वारा नारी से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सन्दर्भों का सविस्तार वर्णन किया है। सभी अध्यायों के अध्ययन से 'नारी' का समाज में महत्त्व का बोध होता है तथा उन्हें क्या अधिकार प्राप्त हैं, का ज्ञान करवाया गया है। लेखक ने समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से 'कन्या' के संदर्भ में यह समझाने का अनुपम प्रयास किया है कि उसके लालन-पालन, शिक्षा-संस्कारों पर ध्यान देने की आवश्यकता है, तभी सुसभ्य एवं सुदृढ़ समाज की रचना सम्भव है।

प्रथम अध्याय 'लिंग की अवधारणा' में नर-मादा भ्रूण के निर्माण को शरीर विज्ञान की दृष्टि से विवेचन करते हुए इसे प्रकृति की अनुपम देन बताया है जो सत्य है। द्वितीय अध्याय में 'जेन्डर (लिंग) की अवधारणा' के प्रमुख तत्व उल्लिखित किए हैं जिसके कारण समाज में सदैव 'पुरुष' को प्रधानता तथा 'नारी' को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है जो उसके बाल्यकाल से ही दृष्टिगोचर होता है।

समीक्ष्य पुस्तक के अध्याय 6, 7 व 8 में श्री शर्मा ने महिलाओं के सन्दर्भ में जो विवेचनात्मक उल्लेख किया है वह 'भारतीय समाज में नारी' के प्रसंग में नारी की स्थिति के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

पुस्तक के शेष अध्यायों में जिन विषयों पर लेखन है, वह नारी के संदर्भ में यथा-पहचान निर्माण, समानता और न्याय, प्रमुख संवैधानिक प्रावधान : प्रथाओं और भेदभावपूर्ण चलन में उनके निहितार्थ, हिन्दु, मुसलमान और ईसाइयों में महिलाओं के सम्पत्ति के अधिकार, घरेलू हिंसा कानून-2005, महिला सशक्तीकरणः अधिकारों और कानून के संदर्भ में, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम-2013, भारत में महिला आन्दोलन और उनके सम्मुख चुनौतियाँ, राष्ट्रीय महिला सशक्तीकरण नीति 2001 आदि।

गहन सामाजिक अध्ययन एवं तथ्यात्मक विवरणों के उल्लेख से श्री शर्मा द्वारा लिखी यह पुस्तक निःसन्देह प्रत्येक सुधी पाठक के लिए उपयोगी है चूँकि यह दिशा देने तथा जागृति लाने वाली है। वहीं समाजशास्त्र विषय का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक, पठन एवं शोधकार्य में सार्थकता लिए है। अतः पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। पुस्तक का आवरण शीर्षक के अनुरूप है, मुद्रण सुन्दर एवं मूल्य उचित है।

समीक्षक : **सतीश चन्द्र श्रीमाली**
जस्सुसर गेट रोड, धर्म काँटे के पास,
बीकानेर (राज.)
मो: 9414144456

कर्म योगी श्री अरविन्द उवाच

सबसे पहले भारतीय बन जाओ, एक मात्र भारतीय ही प्रत्येक चीज पर विश्वास कर सकता है, प्रत्येक काम करने का साहस कर सकता है, प्रत्येक चीज का बलिदान कर सकता है। इसलिये सबसे पहले भारतीय बन जाओ। अपने पूर्व पुरुषों की पैतृक संपत्ति को फिर से प्राप्त करें।

आर्य विचार, आर्य अनुशासन, आर्य चरित्र, आर्य जीवन को पुनः प्राप्त करो। वेदांत, गीता और योग को फिर से प्राप्त करो। उन्हें केवल बुद्धि या भावना से नहीं अपितु जीवन द्वारा पुनः जीवित कर दो। उन्हें जीवन में लाओ और तुम महान, दृढ़ शक्तिशाली, अजेय और निर्भर हो जाओगे। तब तुम्हें न तो जीवन भयभीत कर सकेगा और न मृत्यु।

'कठिन' और 'असम्भव' शब्द तुम्हारे शब्द कोषों से विलुप्त हो जाएँगे क्योंकि एकमात्र आत्मा ही शाश्वत एवं अनन्त बल से युक्त है और पहले तुम्हें आत्मराज, आन्तरिक स्वराज्य को जीतकर वापस ले लेना होगा, उसके बाद ही तुम बाह्य साम्राज्य को वापस ले सकोगे।

वहाँ (आत्मा में) ही माता विराजमान है और वह पूजा की प्रतीक्षा कर रही है ताकि वह शान्ति दे सके। उसमें विश्वास रखो, उसकी सेवा करो, अपनी इच्छाओं को उसकी इच्छा में अपनी 'मैं' को देश की बड़ी 'मैं' में अपनी पृथक स्वार्थपरकता को मानवता की सेवा में विलीन कर दो।

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shalaprangan.shivira@gmail.com** पर भिजवाकर सहयोग करें। -**वरिष्ठ संपादक**

शिक्षक फोरम ने लगवाया विद्यालय का नामपट्ट (बोर्ड)

बाड़मेर जिला इकाई 'पुरस्कृत शिक्षक फोरम' द्वारा रा.उ.मा.वि. बालोतरा, बाड़मेर में मुख्य द्वार पर लोहे के एंगल सहित विद्यालय के नाम का बोर्ड लगवाया गया। जिसमें आर्थिक सहयोगी जिलाध्यक्ष श्री सालगराम परिहार, महामंत्री श्री दत्ताराम खारवाल, उपाध्यक्ष डॉ. रामेश्वरी चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री भैरूलाल नामा, संरक्षक श्री भंवरलाल सालेचा का विद्यालय प्रांगण में संस्था प्रधान श्री जैतमाल सिंह राठौड़ ने आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. जी.आर. पटेल ने फोरम के कार्यों को सराहनीय बताया। व्याख्याता रूपेन्द्र सिंह ने समय-समय पर विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के अवलोकनार्थ अवार्डी शिक्षकों को प्रेरणा स्रोत बताया। व.लि. हिम्मत सिंह, पु.अ. मुकनचन्द सोनगरा सहित गणमान्य जन उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय कला उत्सव 2017

हनुमानगढ़, रा.उ.मा. विद्यालय मेहरवाला में जिला स्तरीय कला उत्सव 2017 का आयोजन 5 अक्टूबर, 2017 को किया गया। जिसमें जिले के विभिन्न राजकीय विद्यालयों के 254 विद्यार्थियों ने दृश्य कला, संगीत, नाट्यकला व नृत्यकला की प्रस्तुतियाँ दी। कला उत्सव की थीम 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' रही जिसमें 12 विद्यालयों के 38 प्रतिभागियों ने दृश्यकला में, 14 विद्यालयों के 60 प्रतिभागियों ने संगीत में, 14 विद्यालयों के 88 प्रतिभागियों ने नृत्यकला में तथा 8 विद्यालयों के 68 प्रतिभागियों ने नाट्यकला में अपनी प्रभावी प्रस्तुतियाँ दी।

कार्यक्रम में ग्रा. पं. सरपंच श्री राजाराम देग, उपसरपंच श्री रामचन्द्र मेहरड़ा, एडीपीसी. रमसा. श्री रणवीर सिंह शर्मा, अधिशाषी अभियन्ता श्री गुरपाल सिंह, कार्यक्रम अधिकारी श्री वीरेन्द्र छापोला, संयोजक व प्रधानाचार्य श्री रजनीश गोदारा, उत्सव प्रभारी सुश्री दीपिका, निर्णायक मंडल के सदस्य व बाल साहित्यकार श्री दीनदयाल शर्मा, संगीतज्ञ श्री गुलशन अरोड़ा, प्रधानाचार्य श्री राधेश्याम कोटि, मंजू यादव, पारूल गुप्ता, जगदीश कुमार, अशोक राजपुरोहित, एसडीएमसी. व एसएमसी. सदस्यों ने विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न एवं प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री पंकज गुप्ता ने किया।

पुरस्कृत शिक्षक फोरम का राज्य स्तरीय सम्मेलन अजमेर में सम्पन्न

अजमेर के रा.मा.विद्यालय लोहागल में 29 अक्टूबर, 2017 को राज्य स्तरीय 'पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान' का सम्मेलन शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री माननीय प्रो. वासुदेव देवनानी के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता राज.मा.शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. बी.एल. चौधरी ने की। युवा नेता श्री अमित भंसाली एवं समाजसेवी श्री किशनसिंह देवरिया स्वागताध्यक्ष रहे। फोरम के महासचिव श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ने अब तक फोरम की गतिविधियों, योजनाओं व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा पुरस्कृत शिक्षकों को काउंसलिंग के समय विशेष श्रेणी में रखने की बात की। अजमेर इकाई महासचिव श्री कार्तिक शर्मा ने संचालन किया। कार्यक्रम संयोजक शक्ति सिंह गौड़, जिलाध्यक्ष श्री कैलाश शर्मा एवं सचिव श्री जगदीश चन्द्र नागर ने सभी पुरस्कृत शिक्षकों का आभार व्यक्त किया। मुख्य अतिथि श्री देवनानी ने माँगों पर सहृदयता से विचार करने का आश्वासन दिया।

शिक्षा मंत्री द्वारा साइकिल वितरण

उदयपुर, राजकीय माध्यमिक विद्यालय सेक्टर-4, हिरण मगरी, उदयपुर में साइकिल वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 10 नवम्बर, 2017 को किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय शिक्षामंत्री माननीय वासुदेव

देवनानी एवं सांसद श्री अर्जुनलाल मीणा के करकमलों द्वारा शिक्षा विभाग के अधिकारीगण की उपस्थिति में निःशुल्क साइकिल वितरित की गई।

शाहजहाँपुर की 'हीरो मोटो कॉर्प' ने भामाशाह बनकर विद्यालय में 65 लाख के निर्माण कार्यों का किया लोकार्पण

अलवर, नीमराणा की रा.आ.उ.वि. शाहजहाँपुर में प्रसिद्ध दुपहिया वाहन निर्माता कम्पनी 'हीरो मोटो कॉर्प लि.' ने विद्यालय परिसर में बास्केटबाल मैदान, भवन में कक्षों का नवीनीकरण तथा परिसर का सौंदर्यकरण करवाने में पैंसठ लाख (65,00,000) रुपये खर्च कर अतिविशिष्ट योगदान दिया। इसी उपलक्ष्य में शाला द्वारा आयोजित भामाशाह सम्मान सम्मारोह में लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर कम्पनी के प्रतिनिधि श्री सी.एस.आर. प्रमुख श्री वी.के. सेठी, श्री निकुन्ज, श्रीमती करुणा, श्री रवि, संस्था प्रधान श्री वी.के. शर्मा, ग्राम पंचायत सरपंच श्री हरकेश धानक, एस.डी.एम.सी. सदस्य श्री जगमाल सिंह एवं समस्त विद्यालय परिवार 26 सितम्बर, 2017 को उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्था प्रधान द्वारा भामाशाह कम्पनी के प्रतिनिधियों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। कम्पनी प्रतिनिधियों ने फीता काटकर विधिवत् लोकार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती पुष्पा यादव (व्याख्याता) ने किया।

NRI परिवार ने की नई पहल

श्री गंगानगर बड़िंगा (रायसिंहनगर) में जन्मे कनाडा निवासी सरदार अमृतपाल सिंह बडिंग की याद में उनकी धर्मपत्नी सरदारनी रविंद्रजीत कौर और उनके पुत्र सरदार गुरकिरणपाल सिंह एवं सरदार हरकिरणपाल सिंह ने आज राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बड़िंगा पहुंच कर एक नई पहल की।

सरदार अमृतपाल सिंह बडिंग की याद में कक्षा 10 में छात्रों में प्रथम रहने वाले राजेश व छात्राओं में प्रथम रहने वाली छात्रा रेखा देती को सम्मान चिन्ह तथा 3100-3100 रु. नगद राशि पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए तथा यह घोषणा की कि कक्षा 12 में प्रथम रहने वाले बालक और बालिका को 5100-5100 रुपए व सम्मान चिह्न तथा कक्षा 10 में प्रथम रहने वाले बालक व बालिका को 3100-3100 रु. तथा सम्मान चिह्न प्रतिवर्ष 15 अगस्त को सरदार अमृतपालसिंह वडिंग की याद में दिए जाएँगे। प्राध्यापक रविराज सिंह ने सरदार अमृतपाल सिंह वडिंग के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वंडिग परिवार की सज्जनता ईमानदारी, समाज सेवा व प्रतिभा से बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह भी प्रभावित हुए थे जिस कारण सरदार अमृतपाल सिंह के पिता सरदार आत्मा सिंह महाराजा गंगासिंह के सलाहकार थे। प्रधानाचार्य श्री पलविंद्र सिंह ने इस नई पहल के लिए रविंद्रजीत कौर एवं उनके पुत्र सरदार गुर किरणपाल सिंह और सरदार हरकिरणपाल सिंह का धन्यवाद किया। मंच संचालन प्राध्यापक जगदीश चौधरी ने किया।

भामाशाह द्वारा विद्यालय में कक्षा-कक्ष हेतु भूमिपूजन व शिलान्यास

भरतपुर। स्व. श्री भंवरलाल शर्मा रा.आ.उ.मा.वि. अंधियारी में दिनांक 10 दिसम्बर, 2017 को स्वतंत्रता सेनानी श्री शर्मा के पुत्र डॉ. अशोक शर्मा व उनकी धर्मपत्नी डॉ. गीता शर्मा द्वारा विद्यालय में कक्षा-कक्ष लगभग 4 लाख रु. की लागत से निर्माण करवाने के संकल्प के साथ विद्यालय के संस्थाप्रधान गोपेश कुमार शर्मा के साथ भूमि पूजन व शिलान्यास करवाया। विद्यालय परिवार ने भामाशाह का आभार व्यक्त करते हुए इस अवसर पर अभिनन्दन किया।

बीलवा में MTM बैठक आयोजित विभागीय प्रतिनिधि रहे उपस्थित

जयपुर के सांगानेर में स्थित रा.उ.मा.वि. बीलवा में आयोजित MTM (माता-शिक्षक) बैठक सम्पन्न हुई। इसमें शिक्षा निदेशालय (माध्यमिक) बीकानेर के विभागीय प्रतिनिधि श्री सऊद अख्तर ने बैठक को सम्बोधित किया। तत्पश्चात संस्थाप्रधान श्री विनोद कुमार गुप्ता ने सभी महिला अभिभावकों एवं विभागीय प्रतिनिधि को सम्बोधित करते हुए विद्यालय की उपलब्धियों, सर्वोच्च परीक्षा परिणाम हेतु अपनी योजना संबंधी विचार व्यक्त किए। इस बैठक में 142 माताओं ने सहभागिता निभाई। संस्थाप्रधान ने सभी का आभार व्यक्त किया।

हदाँ (कोलायत) बीकानेर में विभिन्न आयोजन

बीकानेर रा.आ.उ.मा.वि. हदाँ, (कोलायत) में नवम्बर, 2017 में कई कार्यक्रम किए गए। सामाजिक कायकर्त्ता नरेन्द्र सिंह भाटी के मुख्य आतिथ्य में पर्यावरण सम्मेलन किया जिसमें श्री भाटी द्वारा तैयार किए गए आँवला, गूँदा, अनार आदि फलदार पौधों का वितरण छात्र-छात्राओं को किया गया। पर्यावरणविद् श्री श्याम सुन्दर ज्याणी का मुख्य उद्बोधन रहा।

दिनांक 16 नवम्बर, 2017 को ब्लॉक सीएमएचओ. श्री अनिल वर्मा द्वारा 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' अभियान के अन्तर्गत बालिकाओं को शाला प्रांगण में स्वास्थ्य सुरक्षा से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई। संस्थाप्रधान ने श्री वर्मा का आभार व्यक्त करते हुए अभियान की जानकारी दी तथा राज्य सरकार की अन्य योजनाओं के बारे में बताया तथा 18 नवम्बर, 2017 को 'मातृ-शिक्षक बैठक' (MTA) का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। जिसमें आने-जाने की व्यवस्था शाला द्वारा करने के कारण दूरदराज की माताएँ भी बड़ी संख्या में सहभागी बनी। संस्था प्रधान किरण पंचारिया ने बैठक में विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति एवं सर्वांगीण विकास पर चर्चा की तथा शाला में संचालित शैक्षिक एवं सहशैक्षिक गतिविधियों की जानकारी दी। संस्थान के कमलेश कुमार ने बताया कि माताएँ अपने बच्चों के विकास को लेकर ज्यादा उत्साहित है।

विद्यालय में दो लाख दस हजार का फर्नीचर भामाशाहों द्वारा भेंट

सिरोही जिले की शिवगंज तहसील स्थित रा.उ.मा.वि. पुराना जोगापुरा में जन सहयोग से 200 सेट (स्टूल-टेबल) फर्नीचर तैयार करवाकर भेंट किए गए। प्रधानाचार्य दलपत सिंह राठौड़ ने शाला में आयोजित भामाशाह सम्मान समारोह में बताया कि विद्यालय में विद्यार्थियों के ठीक से अध्ययन के लिए टेबल-स्टूल का अभाव था जिसे सरपंच धौलुकंवर सहित मीणा समाज, राजपूत समाज व देवासी समाज के दानदाताओं तथा गाँव के राज्य कर्मचारियों से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर करीब दो लाख दस हजार रुपये के टेबल-स्टूल खरीदकर विद्यालय में भेंट किए है। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति की ओर से सरपंच सहित भामाशाहों व कर्मचारियों का आभार व्यक्त करते हुए संस्थाप्रधान ने सम्मानित किया। जिसमें SMC सदस्य अर्जुन सिंह, भगवत सिंह, सवाराम देवासी सहित विद्यालय परिवार साक्षी रहा।

एस.यू.पी.डब्ल्यू. कैम्प का आयोजन

रा.उ.मा.वि. ओला, जैसलमेर में दिनांक 26 नवम्बर से 30 नवम्बर के मध्य एस.यू.पी.डब्ल्यू. कैम्प का आयोजन किया गया। शिविर में विद्यार्थियों को स्वच्छता, बैंक, स्वास्थ्य, मेहँदी लगाना, रंगोली बनाना, नेतृत्व गुण व दैनिक उपयोगी कार्य यथा बिजली फिटिंग व कृषि की नवीन जानकारी दी गई। शिविर में विद्यार्थियों को तीन समूहों में बनाकर दायित्व सौंपा गया, केम्प के समापन के दिन विद्यार्थियों के लिए खेल का यथा कुर्सी दौड़, चमच दौड़, मेहँदी व रंगोली प्रतियोगता का आयोजन किया गया।

-प्रकाशन सहायक

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

आर्थराइटिस को टक्कर देगी बायोनिक हड्डी

लंदन– आर्थराइटिस में दर्द सहने को मजबूर मरीजों के लिए हड्डियों में बढ़ता फ्रैक्चर परेशानी का सबब होता है। ऐसे मरीजों के लिए विशेषज्ञों ने बायोनिक हड्डी विकसित करने का दावा किया है, जो आर्थराइटिस के मरीजों को हड्डियों में होने वाले फ्रैक्चर से बचाने का काम करेगी। बायोनिक हड्डी मरीज में ऑपरेशन कर स्थापित की जाएगी। विशेषज्ञों का दावा है कि ऑपरेशन कर मरीज की आर्थराइटिस ग्रस्त हड्डी को निकाल कर उसके स्थान पर बायोनिक हड्डी लगा दी जाएगी। इससे न ठीक होने वाले फ्रैक्चर से मरीज को निजात दिलाना आसान होगा। यह बायोनिक हड्डी टाइटेनियम एलॉय से बनी है और इसे कोहनी से आगे के हिस्से में लगाया जाएगा।

साभार : हिन्दुस्तान 13 जून, 2017

मिर्गी की दवा से अल्जाइमर ठीक

बोस्टन–अमेरिका शोधकर्त्ताओं ने अल्जाइमर डिजीज के इलाज का नया रास्ता खोज निकाला है। दावा है कि मिर्गी विरोधी दवा से मस्तिष्क की संज्ञात्मक शक्ति फिर से ठीक हो जाती है। अल्जाइमर डिजीज में संज्ञात्मक शक्ति ही कम होती है, इसलिए मिर्गी की दवा इस रोग में कारगर हो सकती है। अल्जाइमर के आधे रोगियों में इस बीमारी का प्रभाव देखा जाता है। ऐसे ही रोगियों के इलाज के दौरान वैज्ञानिकों ने पाया कि मिर्गी की दवा देते ही मस्तिष्क फिर से सामान्य ढंग से काम करने लगा।

साभार : हिन्दुस्तान 29 जून, 2017

टमाटर और अंडे से बनेंगे वाहन के टायर

वाशिंगटन– भविष्य में वाहन के टायर के निर्माण का रास्ता फैक्ट्री की जगह खेतों से निकल सकता है। शोधकर्त्ताओं ने पेट्रोलियम उत्पाद से बने पदार्थ की जगह टमाटर के छिलके और अंडे के खोल से टायर के निर्माण का नया तरीका विकसित किया है। अमेरिका में ओहियो स्टेट युनिवर्सिटी के शोधकर्त्ताओं ने ऐसे खाद्य पदार्थों की खोज की है जो टायर के निर्माण में एक सदी से अधिक समय से इस्तेमाल किए जा रहे पेट्रोलियम उत्पादों से बने पदार्थ की जगह ले सकता है। शोधकर्त्ता कैटरीना कॉर्निश के अनुसार नई तकनीक से रबर उत्पादों का निर्माण और अधिक टिकाऊ होगा। कॉर्निश ने टायर के निर्माण के लिए पेट्रोलियम उत्पादों से बने पदार्थ, कार्बन ब्लैक की जगह टमाटर के छिलके और अंडे के खोल के इस्तेमाल का नया तरीका विकसित किया है। वाहन के एक टायर में करीब 30 फीसदी कार्बन ब्लैक मौजूद होता है और यही वजह है कि टायर का रंग काला होता है और पेट्रोलियम की कीमत में वृद्धि के साथ इसकी कीमत भी बढ़ जाती है।

साभार : पंजाब केसरी 8 मार्च, 2017

45 मिनट की 'स्लीप थेरेपी' से वजन घटाएँ

लंदन– ब्रिटेन में 'नैपरसाइज' यानी सोते हुए वजन घटाने का तरीका तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। नींद की कमी से जूझ रहे सैकड़ों लोग थकान और कमजोरी दूर करने के अलावा मोटापे पर काबू पाने के लिए रोजाना नैपरसाइज क्लास का रुख कर रहे हैं।

दौड़ने भागने की जरूरत नहीं: 'नैपरसाइज' की एक स्लीप थेरेपी है, जिसमें वजन कम करने के लिए लोगों को न तो ट्रेडमिल पर दौड़ने की जरूरत पड़ती है और न ही साइक्लिंग करने की। दोपहर में 45 मिनट तक की जाने वाली 'नैपरसाइज' के तहत 15 मिनट की स्ट्रेचिंग के बाद लोगों को आरामदायक बेड पर लेटने को कहा जाता है। फिर उनकी आँखों पर काली पट्टी बाँधते हुए कमरें में दिमाग को सुकून देने वाला मद्धम संगीत बजाया जाता है। इस दौरान कमरे का तापमान उस स्तर पर रखा जाता है, जिसमें मानव शरीर में कैलोरी की खपत की प्रक्रिया तेज हो जाती है। साभार : हिन्दुस्तान 04 जून, 2017

त्वचा, बाल उगाने के करीब वैज्ञानिक

न्यूयॉर्क– अमेरिकी वैज्ञानिकों ने जानवरों पर असली त्वचा और बाल विकसित करने का दावा किया है। यह उपलब्धि इसलिए भी बड़ी मानी जा रही है क्योंकि इससे वे इंसान की त्वचा और बाल बनाने के और भी करीब पहुँच गए हैं। अमेरिका के साल्ट लेकसिटी स्थित एक बायोटेक कंपनी ने यह कारनामा करने का दावा किया है। कंपनी ने इसके लिए पेंटेंट हासिल करने की तैयारियाँ भी शुरू कर दी हैं। शोध से जुड़े विशेषज्ञों का दावा है कि इससे एक तो गंजेपन का इलाज करने में मदद मिलेगी, साथ ही जलने के मरीजों को फिर से काम में आने लायक त्वचा और बाल मिल सकेंगे। प्लास्टिक सर्जन जलने के मरीजों को उनकी त्वचा देने में अब तक असमर्थ हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि मरीजों के स्वस्थ उत्तकों के जरिये नई और वास्तविक त्वचा बनाई जा सकती है। शोधकर्त्ता कंपनी पोलारिटी टीई के संस्थापक और सीईओ डेनवर लू ने कहा कि जलने के गंभीर मरीजों के लिए अब तक उपलब्ध उपचार के तरीके सीमित हैं। साभार : हिन्दुस्तान 10 जून, 2017

साँप का जहर दिल का इलाज करेगा

बीजिंग– वैज्ञानिकों ने पाया है कि दिल की बीमारी से पीड़ित लोगों में खून का थक्का जमने से रोकने के लिए साँप का जहर एस्पिरिन जैसी दवाओं का सुरक्षित विकल्प हो सकता है। एंटी-प्लेटलेट दवाएँ रक्त कोशिकाओं को परस्पर जुड़ जाने से रोकती हैं। इनका दिल की बीमारियों के उपचार में इस्तेमाल किया जाता है। एस्पिरिन जैसी मौजूदा एंटी-प्लेटलेट दवाओं के कारण किसी चोट के बाद अत्यधिक रक्तस्त्राव की गंभीर समस्या देखने में आती है। पहले हुए शोध से पता चला है कि ट्रोपीडोलैमस वेगलेरिक्स साँप के जहर में पाया जाने वाला ट्रोवागलेरिक्स नाम के प्रोटीन रक्त प्लेटलेट को ग्लाइको प्रोटीन-VI (जीपी-VI) से चिपक कर थक्का बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

साभार : हिन्दुस्तान 12 जून, 2017

टीबी के टीके से टाइप-1 डायबिटीज का इलाज

न्यूयॉर्क– गंभीर बीमारियों के इलाज तलाशने में जुटे विशेषज्ञ अब एक दवा से कई बीमारियों का उपचार करने की कोशिशों में लगे हैं। मैसाच्यूसेट्स जनरल हॉस्पिटल के विशेषज्ञों की टीम टीबी के टीके से टाइप-1 डायबिटीज का इलाज तलाशने में जुटी है। विशेषज्ञों का दावा है कि टीबी के टीके को दुबारा देने से टाइप-1 डायबिटीज की प्रक्रिया पलट जाती है। इसलिए वे मान रहे हैं कि यह दवा इस गंभीर बीमारी का इलाज हो सकती है। टाइप-1 डायबिटीज ऑटोइम्यून बीमारी है, जो शरीर को इंसुलिन का उत्पादन करने से रोकती है। जो शरीर को इंसुलिन वह हॉर्मोन है, जो रक्त में मौजूद ग्लूकोज को तोड़ने में शरीर की मदद करता है जिससे हमें ऊर्जा मिलती है। इसे अक्सर शरीर की कोशिकाओं तक पहुँचने की चाबी कहा जाता है। एक बार इस दरवाजे के खुलने पर ग्लूकोज अपना काम शुरू कर सकता है और शरीर की कोशिकाएँ इसका इस्तेमाल ऊर्जा संबंधी जरूरतों के लिए कर सकती है। इंसुलिन के बिना शरीर ऊर्जा की कमी पूरी करने के लिए ग्लूकोज का इस्तेमाल नहीं कर सकता है। साभार : हिन्दुस्तान 16 जून, 2017

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

बाड़मेर

रा.उ.मा.वि., काँखी को स्थानीय भामाशाह सर्व श्री प्रेम सिंह (सरपंच), छैलसिंह परिहार, पकसिंह परिहार प्रत्येक से एक-एक तिजोरी प्राप्त हुई। सर्व श्री छैलसिंह, भलाराम राणा, हड़मत सिंह परिहार, हरिराम मेग, हेमसिंह सोढ़ा प्रत्येक से एक-एक टेबल कुर्सी प्राप्त हुई, सर्व श्री नरपत सिंह, जोगसिंह, हकाराम, खीमाराम मेघवाल, मांगाराम, लुम्बाराम मेघवाल, मदाराम मेघवाल, भगाराम मेघवाल, परबत सिंह सोलंकी, पारसमल राजपुरोहित, पाबूराम प्रजापत, कांतिलाल लुहार प्रत्येक से एक-एक कुर्सी प्राप्त हुई, सर्व श्री खीमाराम, गेबाराम, कालूराम, करनाराम प्रत्येक से दो-दो कुर्सियाँ प्राप्त हुई। सर्व श्री अमराराम सैन, जुगत सिंह दहिया, हुकम सिंह परिहार, भीखाराम, खीमाराम मेघवाल प्रत्येक से एक-एक टेबल प्राप्त हुआ, श्री केशर सिंह से एक ट्रे व गिलास सैट प्राप्त हुआ। श्री शंकर लाल माली से एक पंखा प्राप्त हुआ, श्री गोपाल सुथार से एक रिवोल्विंग चेयर प्राप्त हुई। **रा.बा.उ.मा.वि. सिणधरी** में भामाशाह श्री बाबूलाल मंडोवरा द्वारा 15 लाख रुपये की लागत से निर्मित विद्यालय भवन का मुख्यद्वार मय दीवार, पानी की प्याऊ मय रेफ्रीजेटर का निर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि. आकली पं.स. शिव** को श्री हेमाराम माली द्वारा मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजनान्तर्गत 1,00,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री खुमान सिंह सोढ़ा से 30,000 रुपये कम्प्यूटर हेतु प्राप्त हुए, श्री इन्द्र दान चारण से एक माइक सैट प्राप्त हुआ जिसकी लागत 16,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., तामलोर** को श्री हिन्दुसिंह सोढ़ा (सरपंच) से एक माइक सैट जिसकी लागत 12,000 रुपये, श्री किसन सिंह सोढ़ा से माइक स्टैण्ड प्राप्त हुआ जिसकी लागत 5,000 रुपये, सर्व श्री रनसिंह (व.अ., अंग्रेजी), कान सिंह सोढ़ा (से.नि., ए.एस.आई.), गिरधर सिंह सोढ़ा प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ तथा प्रत्येक की लागत 1,300-1,300 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., गोगरार नाड़ी** श्री अचलाराम देवासी द्वारा विद्यालय में प्रधानाध्यापक कक्ष व कार्यालय का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 10,90,000 रुपये। **रा.मा.वि. पुषड़ (शिव)** में आयोजित स्काउट गाइड शिविर में सम्पूर्ण व्यवस्था का जिम्मा श्री भूर सिंह ने उठाया जिसका खर्च लगभग 60,000 रुपये, श्री भारमल सिंह द्वारा स्काउट गाइड शिविर में पारितोषित वितरित किया जिसकी लागत 15,500 रुपये, श्रीमती रूपा विश्नोई से एक हारमोनियम प्राप्त हुआ जिसकी लागत 8,200 रुपये। **रा.उ.मा.वि., सिवाना** को श्री बाबूलाल राँका द्वारा विद्यालय को 100 सैट टेबल-स्टूल भेंट जिसकी लागत 1,16,000 रुपये।

बांसवाड़ा

रा.उ.मा.वि. झड़स, पं.स.-अरथुना को श्री अनिल उपाध्याय द्वारा 25,000 रुपये की लागत से एक इनवर्टर विद्यालय को सप्रेम भेंट।

बीकानेर

रा. चौपड़ा उ.मा.वि., गंगाशहर को श्री कैलाश चन्द्र जोशी (से.नि. व्याख्याता) से 02 प्लास्टिक कूलर प्राप्त हुए जिसकी लागत 8,400 रुपये। **रा.जवाहर उ.मा.वि., भीनासर** को श्री कैलाश चन्द्र जोशी (से.नि.व्याख्याता) से 02 प्लास्टिक कूलर प्राप्त हुए जिसकी लागत 8,400 रुपये। **रा.उ.मा.वि., शिवबाड़ी** में सर्व श्री कैलाश धौलखेड़िया, शिव कुमार धौलखेड़िया, डूंगरमल धौलखेड़िया द्वारा भामाशाहों द्वारा तीन कक्षा-कक्ष (10×20) का निर्माण करवाया, श्री किशन धौलखेड़िया द्वारा मुख्य द्वार का पुर्ननिर्माण करवाया गया। **रा.उ.मा.वि., इ.गा.न.प.** में श्री ऋषभ कुमार जैन (सी.ए.) द्वारा विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को स्कूल बैग वितरित किए तथा एक वाटर कूलर भी विद्यालय को सप्रेम भेंट, श्री जेठाराम साध अध्यापक से 4 पंखे व एक लोहे की बड़ी अलमारी विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.बा.उ.मा.वि., रघुनाथसर कुआं (एल.बी.डी.)** को शाला की अध्यापिका श्रीमती सुमिता ऐरन (व.अ. गणित) एवं श्रीमती उर्मिला चौहान (व.अ. विज्ञान) के अथक प्रयास से **रोटरी क्लब** बीकानेर से 180 फर्नीचर प्राप्त हुए। श्रीमती उर्मिला चौहान (व.अ. विज्ञान) से दो बड़ी लोहे की अलमारी प्राप्त हुई, सर्व श्रीमती सावित्री व्यास प्रधानाचार्य, सुमिता ऐरन (व.अ. गणित) से एक-एक लोहे की अलमारी प्राप्त हुई। **रा.आ.उ.मा.वि., करणीसर भाटियान** को श्री जफर अहमद (व्या. इतिहास) से एक लोहे की अलमारी व तीन कुसियाँ प्राप्त हुई जिसकी लागत मूल्य 7000 रुपये। **रा.आ.उ.मा.वि., लिखमादेसर** को सर्व श्री चूनाराम ज्याणी, तुगनाराम ज्याणी, बहादुर नाथ ज्याणी, पुरखनाथ ज्याणी, आशाराम नाई, सुन्दर नाथ ज्याणी, मुन्नीराम थाकण, बीरबल नाथ, जयचन्द तिवाड़ी प्रत्येक से कम्प्यूटर खरीद हेतु 9200 रुपये शाला को सप्रेम भेंट, श्री हजारी राम नाई से फर्नीचर एवं फिटिंग हेतु 9,200 रुपये प्राप्त हुए। **रा.उ.मा.वि., आडसर (लूणकरनसर)** को श्री हनुमान नाथ सिद्ध से विद्यालय को एक वाटर कूलर सप्रेम भेंट, श्री पन्नानाथ सिद्ध व श्री किस्तुर नाथ द्वारा विद्यालय को एक-एक छत पंखा भेंट। **रा.उ.मा.वि., दियातरा (कोलायत)** में श्री असलेखकरण दान (प्रधानाचार्य) ने अपने स्व. पिताजी द्वारा विद्यालय हेतु दान की गई 14 बीघा भूमि की स्मृति में विद्यालय परिसर में जल प्याऊ मय वाटर कूलर का निर्माण करवाया जिसकी लागत 1.50 लाख रुपये आई। **रा.मा.वि., गोपेश्वर बस्ती** में श्री हरिराम चौधरी द्वारा एक लाख पचास हजार रुपये की लागत से शाला आंगन में छत का निर्माण करवाया गया व छात्र-छात्राओं हेतु इन्वर्टर भी सप्रेम भेंट, श्री गोमाराम जीनगर (सहायक निदेशक) से एक पंखा प्राप्त हुआ, श्रीमती सुशीला सोनी व गुप्त दान से भी दो-दो पंखे प्राप्त हुए। **रा.बा.मा.वि., सूरसागर, बीकानेर** को श्रीमती राजबाला पाठक से नकद 2,100 रुपये शाला विकास हेतु, सर्व श्रीमती नीलम शर्मा, ललिता से एक-एक छत पंखा प्राप्त हुआ तथा प्रत्येक की लागत 1,300 रुपये, श्रीमती ओम कंवरी से लोहे की अलमारी प्राप्त हुई जिसकी लागत 3,500 रुपये, सुश्री सरोज शर्मा से 2 छत पंखे प्राप्त हुए जिसकी लागत 2,600 रुपये, सुश्री सरोज आर्य से एक स्टील बैंच प्राप्त जिसकी लागत 7,500 रुपये, श्रीमती चन्द्र प्रभा सिंह से 2 कम्प्यूटर टेबल मय कुर्सी प्राप्त जिसकी लागत 10,000 रुपये, श्री धर्मेन्द्र दीक्षित से एक ग्रीन बोर्ड प्राप्त लागत 3,500 रुपये। **रा. सेठ भैरूदान करनाणी बा.मा.वि., गंगाशहर** में श्री सत्यनारायण करनाणी द्वारा 2,50,000 रुपये की लागत से शाला मैदान परिसर में पक्के फर्श का निर्माण का कार्य करवाया गया, साथ ही विद्यालय को ठण्डे पानी की मशीन (वाटर कूलर) सप्रेम भेंट जिसकी लागत 50,000 रुपये। **सादुल स्पोर्ट्स स्कूल बीकानेर** को रोटरी क्लब, बीकानेर द्वारा लगभग 2,00,000 रुपये की लागत से 240 छात्रों के बैठने हेतु फर्नीचर प्रदान किया गया।

संकलन- प्रकाशन सहायक

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-वरिष्ठ संपादक**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : जनवरी 2018 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : जयपाल सिंह राठी, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

निदेशालय (माध्यमिक शिक्षा) परिसर

मुख्य प्रशासनिक भवन : लोकार्पण समारोह की झलकियाँ

दिनांक 13 दिसम्बर, 2017

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/417/2017-19 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● जनवरी, 2018 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 जनवरी, 2018 पृष्ठ 52 ● प्रेषण : माह की 5–6 तारीख

63वीं राष्ट्रीय विद्यालयी (छात्रावर्ग-19 वर्षीय) वॉलीबॉल प्रतियोगिता

राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय, ढाँढ़ण (सीकर)

15 नवम्बर, 2017 से 19 नवम्बर, 2017 तक